Postal Regn No./C.G./RYP DN/48/2022-24

website- www.dvpnews.in

रायपुर (छ.ग.) एवं झांसी (उ.प्र.) से एक साथ प्रकाशित राष्ट्रीय हिन्दी पत्र

दैनिक विश्व परिवार

● अंक : 240 ● वर्ष : 11 ● रायपुर, शनिवार 16 मार्च 2024 ● पृष्ठ : 08 ● मूल्य : 3 रूपए ● संस्थापक : कीर्तिशेष- श्री कैलाश चन्द्र जैन

सुविचार

जहां परिग्रह है वहां धर्म नहीं, जहां आसक्ति है वहां धर्म नहीं।

Where there are accumulation of wealth and attachment to passions, there is no religion.

आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज

संक्षिप्त समाचार

लोकसभा चुनाव का आज होगा ऐलान, यूपी में सात से आठ चरणों में चुनाव संभव

नई दिल्ली (आरएनएस)। लोकसभा चुनाव 2024 की तारीखों का ऐलान कल यानी 16 मार्च को किया जाएगा. निर्वाचन आयोग कल दोपहर 3 बजे प्रेस कॉन्फ्रेंस करेगा. 7 से 8 चरण में मतदान हो सकता है. माना जा रहा है कि अप्रैल के पहले या दूसरे हफ्ते में पहले चरण का मतदान होगा. जबकि मई के दूसरे हफ्ते तक मतदान की प्रक्रिया पूरी हो जाएगी. बता दें कि 2014 में लोकसभा चुनाव कुल नौ चरणों में हुए थे जबकि 2019 में लोकसभा चुनाव के लिए कुल सात चरणों में मतदान किया गया था. बीते लोकसभा चुनाव में उत्तर प्रदेश में सभी 7 चरणों में मतदान हुआ था.

अमिताभ बच्चन अस्पताल में भर्ती, 81 साल की उम्र में हुई एंजियोप्लासटी

मुंबई (आरएनएस)। बालीवुड के बिग बी यानि अमिताभ बच्चन की एंजियोप्लास्टी हुई है। मीडिया रिपोर्ट्स की मानें तो 81 साल के अभिनेता को कंधे में तकलीफ की वजह से शुक्रवार सुबह 6 बजे मुंबई के कोकिलाबेन अस्पताल में भर्ती किया गया था। हालांकि अभी तक अमिताभ बच्चन या उनकी टीम से इस विषय में कोई खुलासा नहीं किया गया है, लेकिन सूत्रों की मानें तो अभिनेता की हालत स्थिर है। सिक्योरिटी के बीच बिग बी अस्पताल पहुंचे थे, वहीं, दोपहर में उन्होंने अपने एक्स पर पोस्ट किया हमेशा ग्रेटिट्यूडय।

मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय ने लिये 5 अहम फैसले

सरकारी कर्मचारियों का डीए बढ़ा चार फीसदी, पेंशनरों को भी होगा लाभ

सातवें वेतनमान के एरियर्स के अंतिम किश्त की राशि भी मिलेगी

कर्मचारियों की समस्याओं के समाधान के लिए गठित की गई समिति

पंचायत सचिवों को 55 दिनों की हड़ताल का होगा वेतन भुगतान, अर्जित अवकाश में समायोजित होगी हड़ताल अवधि

पत्रकारों के खिलाफ किये गये कथित झूठे मुकदमों एवं उत्पीड़न के मामलों में न्याय दिलाने गृह सचिव की अध्यक्षता में बनेगी कमेटी

रायपुर (विश्व परिवार)। मुख्यमंत्री श्री विष्णुदेव साय ने आज अधिकारी-कर्मचारियों तथा मीडियाबंधुओं के हित में पांच अहम फैसले लिये। इनमें अधिकारी-कर्मचारियों को सातवें वेतनमान पर चार प्रतिशत का महंगाई भत्ता देना भी शामिल है। इसका लाभ पेंशनरों को भी मिलेगा। महंगाई भत्ते की यह राशि एक मार्च 2024 की तिथि से मिलेगी। राज्य के अधिकारी-कर्मचारियों को सातवें वेतनमान के एरियर्स की अंतिम किश्त की राशि का भुगतान भी होगा। इसके साथ ही मुख्यमंत्री ने प्रमुख सचिव, पंचायत एवं ग्रामीण विकास श्रीमती निहारिका बारिक की अध्यक्षता में एक समिति भी बनाई है जो कर्मचारियों की समस्याओं के संबंध में समीक्षा करेगी और इनके निराकरण से संबंधी सुझाव शासन को प्रस्तुत करेगी। ग्राम पंचायत सचिवों को भी राहत देते हुए उनके 55 दिनों की हड़ताल अवधि का वेतन भुगतान करने का निर्णय लिया गया है। अर्जित अवकाश में यह हड़ताल अवधि समायोजित होगी। इन निर्णयों से होली के त्यौहार में कर्मचारियों के परिवारों में खुशियों के और भी रंग भर जाएंगे।

सातवें वेतनमान के एरियर्स की अंतिम किश्त भी मिलेगी : मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय ने इस अवसर पर अधिकारियों-कर्मचारियों की सातवें वेतनमान के एरियर्स की अंतिम किश्त प्रदान करने की घोषणा भी की।

हड़ताल अवधि का वेतन पंचायत सचिवों को मिलेगा : मुख्यमंत्री ने आज संवेदनशील निर्णय लेते हुए ग्राम पंचायत सचिवों को भी राहत दी। ग्राम पंचायत सचिव पिछले साल 16 मार्च 2023 से 9 मई 2023 तक कुल 55 दिन हड़ताल पर थे।

मुख्यमंत्री ने बताया कि ग्राम पंचायत सचिवों की हड़ताल अवधि को उनके अर्जित अवकाश में समायोजित करते हुए उन्हें 55 दिनों का वेतन भुगतान किया जाएगा। इस निर्णय से राज्य शासन पर 70 करोड़ रुपए का व्यय-भार आएगा।

कर्मचारियों की समस्याओं पर बनी समिति : मुख्यमंत्री ने कहा कि कर्मचारी भाईयों ने बहुत सी मांगों और समस्याओं के संबंध में अपनी बातें हमसे साझा की हैं। हम उनकी समस्याओं का पूरी संवेदनशीलता से समाधान करेंगे। उन्होंने बताया कि इन समस्याओं के हल के लिए प्रमुख सचिव, पंचायत एवं ग्रामीण विकास श्रीमती निहारिका बारीक की अध्यक्षता में पांच सदस्यीय समिति बनाई है। समिति विभिन्न कर्मचारी संघों के प्रतिनिधियों से चर्चा कर शासन को कर्मचारी हित में उचित सुझाव देगी। इस समिति में अध्यक्ष के अलावा प्रमुख सचिव वित्त एवं विधायी, सचिव सामान्य प्रशासन विभाग, सचिव वित्त सदस्य होंगे और सचिव सामान्य प्रशासन विभाग (शासकीय कर्मचारी कल्याण शाखा) सदस्य सचिव होंगे।

पत्रकारों को न्याय दिलाने गृह सचिव की अध्यक्षता में बनेगी कमेटी : मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय ने कहा कि पत्रकारों एवं मीडियाजगत से जुड़े बंधुओं के खिलाफ उत्पीड़न की अनेक शिकायतें सामने आई थीं। इस संबंध में हम गृह सचिव की अध्यक्षता में कमेटी बनाने की घोषणा करते हैं। मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय ने आगे बताया कि इस कमेटी में पत्रकारों समेत अन्य सदस्यों को भी नियुक्त किया जाएगा।

अब महंगाई भत्ता हुआ 46 प्रतिशत

महंगाई भत्ते में वृद्धि की घोषणा करते हुए मुख्यमंत्री ने बताया कि राज्य के कर्मचारियों को सातवें वेतनमान में 04 प्रतिशत महंगाई भत्ते में एवं पेंशनरों के महंगाई राहत में 04 प्रतिशत की वृद्धि करने का निर्णय लिया है। यह महंगाई भत्ता एवं महंगाई राहत 1 मार्च 2024 से दिया जाएगा। इसके फलस्वरूप महंगाई भत्ते और महंगाई राहत की दर सातवें वेतनमान में 42 प्रतिशत से बढ़कर 46 प्रतिशत तथा छठवें वेतनमान में यह 230 प्रतिशत हो जाएगी। इस निर्णय से राज्य के 3 लाख 90 हजार कर्मचारी तथा 1 लाख 20 हजार पेंशनर लाभान्वित होंगे। इस निर्णय से राज्य के कर्मचारियों और पेंशनरों को प्रतिमाह 68 करोड़ रुपए तथा साल में 816 करोड़ रुपए का लाभ प्राप्त होगा।

नए निर्वाचन आयुक्त ज्ञानेश कुमार और सुखबीर सिंह संधू ने प्रभार संभाला

नई दिल्ली (आरएनएस)। नव नियुक्त निर्वाचन आयुक्तों ज्ञानेश कुमार और सुखबीर सिंह संधू ने शुक्रवार को अपना प्रभार संभाल लिया। दोनों पूर्व नौकरशाहों को बृहस्पतिवार को निर्वाचन आयुक्त नियुक्त किया गया था। वे मुख्य निर्वाचन आयुक्त (सीईसी) और निर्वाचन आयुक्तों की नियुक्ति के संबंध में हाल में एक नया कानून लागू होने के बाद, निर्वाचन आयोग में नियुक्त किए गए पहले सदस्य हैं। एक प्रवक्ता ने बताया कि ज्ञानेश कुमार और सुखबीर सिंह संधू का स्वागत करते हुए मुख्य निर्वाचन आयुक्त राजीव कुमार ने ऐसे ऐतिहासिक समय पर उनकी नियुक्ति के महत्व के बारे में बात की जब निर्वाचन आयोग लोकसभा चुनाव कराने की तैयारियां कर रहा है। अनूप चंद्र पांडे के 14 फरवरी को सेवानिवृत्त होने और आठ मार्च को अरुण गोयल के अचानक इस्तीफे के बाद निर्वाचन आयोग में ये पद खाली हो गए थे।

मैं तमिलनाडू की धरती पर बहुत बड़े परिवर्तन की आहट देख रहा हूं : मोदी

कन्याकुमारी (आरएनएस)। देश में लोकसभा चुनाव की तारीखों का ऐलान कभी भी हो सकता है. ऐसे में भारतीय जनता पार्टी और कांग्रेस समेत सभी राजनीतिक दल अपनी-अपनी चुनावी तैयारियों में जुट गए हैं. कांग्रेस की तरह से जहां राहुल गांधी देशभर में भारत जोड़ों न्याय यात्रा निकाल रहे हैं तो प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और अमित शाह ने बीजेपी के प्रचार की कमान संभाल रखी है. इस क्रम में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी आज यानी शुक्रवार को तमिलनाडु पहुंचे हुए हैं. यहां प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का कन्याकुमारी में आयोजित एक सार्वजनिक सभा स्वागत किया गया.

इस दौरान प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा कि आज कन्याकुमारी से देश के इस दक्षिणी छोर से जो लहर उठी है ये लहर बहुत दूर तक जाने वाली है...मैं 1991 में एकता यात्रा लेकर कन्याकुमारी से कश्मीर गया था, इसबार मैं कश्मीर से कन्याकुमारी आया हूं. जम्मू-कश्मीर के लोगों ने देश को तोड़ने का सपना देखने वालों को नकार दिया है. अब तमिलनाडू के लोग भी ऐसा ही करने जा रहे हैं. मैं तमिलनाडू की धरती पर बहुत बड़े परिवर्तन की आहट देख रहा हूं. तमिलनाडू में भाजपा का प्रदर्शन इस बार डीएमके और कांग्रेस के इंडिया गठबंधन का सारा घमंड तोड़ कर रख देगा.

पीएम मोदी ने कहा कि हमने ऑप्टिकल फाइबर और 5जी दिया, हमारे नाम पर डिजिटल इंडिया स्कीम है. इंडी अलायंस के नाम पर लाखों करोड़ रुपए का 2जी का स्कैम है, और डीएमके उस लूट की सबसे बड़ी हिस्सेदार थी. हमारे नाम पर उड़ान स्कीम है, इंडी अलायंस के नाम हेलीकॉप्टर स्कैम है.

सुप्रीम कोर्ट का रुख साफ, ईवीएम से ही होंगे चुनाव

नई दिल्ली (आरएनएस)। उच्चतम न्यायालय ने इलेक्ट्रॉनिक वोटिंग मशीन के कामकाज में अनियमितताओं का आरोप लगाने वाली याचिका पर शुक्रवार को विचार करने से इनकार करते हुए कहा, हर पद्धति के अपने सकारात्मक और नकारात्मक पक्ष होते हैं।

न्यायमूर्ति संजीव खन्ना, न्यायमूर्ति दीपांकर दत्ता और न्यायमूर्ति ऑगस्टीन जॉर्ज मसीह की एक पीठ ने कहा कि यह अदालत कई याचिकाओं की पहले ही कई मौकों पर पड़ताल कर चुकी है और ईवीएम के कामकाज से संबंधित विभिन्न मुद्दों पर विचार कर चुकी है।

पीठ ने याचिकाकर्ता नंदिनी शर्मा से कहा, हम कितनी याचिकाओं पर विचार करेंगे? हाल ही में, हमने वीवीपीएटी से संबंधित एक याचिका पर विचार किया था। हम धारणाओं पर नहीं चल सकते। हर पद्धति के अपने सकारात्मक और नकारात्मक पक्ष होते हैं। क्षमा करें, हम अनुच्छेद 32 के तहत इस पर विचार नहीं कर सकते। पीठ ने आदेश में कहा कि याचिका में उठाए गए मुद्दे की शीर्ष अदालत ने विभिन्न याचिकाओं में पड़ताल की है। न्यायमूर्ति खन्ना ने कहा कि अदालत ने इस मुद्दे पर 10 से अधिक मामलों की पड़ताल की है। शर्मा ने अपनी याचिका में भारत के निर्वाचन आयोग और छह राजनीतिक दलों को पक्षकार बनाया था।

प्रधानमंत्री ई-बस योजना : छत्तीसगढ़ के चार शहरों को मिली 240 सिटी बसों की स्वीकृति

- **राज्य के 4 शहरों- रायपुर, दुर्ग-भिलाई, बिलासपुर और कोरबा को पीएम ई बस सेवा योजना के तहत इलेक्ट्रिक बसों के संचालन की मंजूरी**
- **राज्य में इलेक्ट्रिक बसों की शुरुआत से शहरी परिवहन में क्रांति : मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय**

फाईल फोटो

रायपुर (विश्व परिवार)। शहरों में सार्वजनिक परिवहन के ढांचे को दुरुस्त करने के लिए केंद्र सरकार द्वारा पीएम ई-बस सेवा योजना प्रारंभ की गई है। योजना के तहत राज्यों को शहरो की जनसंख्या के आधार पर बसों की संख्या निर्धारित की गई है जिसके अनुसार रायपुर को 100, दुर्ग भिलाई को 50, बिलासपुर को 50 तथा कोरबा को 40 इस प्रकार कुल 240 ई-बसों की स्वीकृति प्राप्त हुई है।

भारत सरकार ने छत्तीसगढ़ राज्य के चार प्रमुख शहरों-रायपुर, दुर्ग-भिलाई, बिलासपुर, और कोरबा को पीएम ई बस सेवा योजना के तहत इलेक्ट्रिक बसों के संचालन की मंजूरी दी है। यह घोषणा न केवल छत्तीसगढ़ के लिए एक गौरवपूर्ण क्षण है, बल्कि पूरे देश के लिए एक मील का पत्थर भी है, जो प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के स्वच्छ और हरित भारत के सपने को साकार करने में एक महत्वपूर्ण कदम है।

छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री श्री विष्णुदेव साय ने इस मौके पर कहा, हमारे राज्य में इलेक्ट्रिक बसों की शुरुआत से शहरी परिवहन में क्रांति आएगी। यह पहल हमें पर्यावरणीय संरक्षण के साथ-साथ नागरिकों को बेहतर परिवहन सुविधाएं प्रदान करने की दिशा में एक कदम आगे ले जाती है। उन्होंने नगरीय प्रशासन विभाग के अधिकारियों का इस चैलेंज में सफल होने पर बधाई दी एवं भविष्य मे और शहरों के इस योजना मे सम्मिलत करने हेतु प्रयास करने के निर्देश दिए। इस अवसर पर उप मुख्यमंत्री तथा नगरीय प्रशासन मंत्री श्री अरूण साव ने कहा, डबल इंजन की सरकार के कारण हम नवाचार और स्थिरता की नई ऊंचाइयों को छू रहे हैं। यह योजना हमारे नागरिकों के लिए एक उपहार है, जो न केवल पर्यावरण को बचाएगी बल्कि हमारे जीवन को भी सुगम बनाएगी। ई-बसों का आगमन छत्तीसगढ़ के नागरिकों के लिए एक नई और स्वच्छ परिवहन सेवा का द्वार खुलेंगी। इन बसों के शुरू होने से पर्यावरणीय प्रदूषण में कमी आएगी और शहरों की वायु गुणवत्ता में सुधार होगा, साथ ही ऊर्जा की बचत भी होगी।

राशनकार्ड नवीनीकरण के लिए ऑनलाईन आवेदन 30 अप्रैल 2024 तक

रायपुर (विश्व परिवार)। छत्तीसगढ़ में सार्वजनिक वितरण प्रणाली के अंतर्गत वर्तमान में प्रचलित सभी 77 लाख राशनकार्डों के नवीनीकरण का कार्य दिनांक 30 अप्रैल 2024 तक बढ़ाया गया है। मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय ने आम नागरिकों की सुविधा का ध्यान रखते हुए राशन कार्ड नवीनीकरण की तारीख बढ़ाने के निर्देश दिए थे, ताकि सभी पात्र हितग्राही अपना आवेदन कर सकें। इसी कड़ी में खाद्य नागरिक आपूर्ति एवं उपभोक्ता संरक्षण विभाग के मंत्री श्री दयाल दास बघेल ने ऑनलाईन नवीनीकरण के आवेदन के लिए तारीख आगामी 30 अप्रैल 2024 तक बढ़ाने के संबंध में दिशा निर्देश दिए हैं। खाद्य विभाग के संचालक ने सभी जिलों के कलेक्टरों को इस संबंध में दिशा-निर्देश दिए हैं। राशनकार्ड नवीनीकरण के लिए खाद्य विभाग के द्वारा खाद्य नागरिक आपूर्ति एवं उपभोक्ता संरक्षण विभाग का नया मोबाईल एप्प तैयार किया गया है।

बृजमोहन अग्रवाल ने तिल्दा नेवरा में 5.24 करोड़ रुपए के विकास कार्यों का किया लोकार्पण एवं शिलान्यास

शा.उ.मा.वि. ससाहोली का नाम जैन मुनि श्री विद्यासागर जी महाराज के नाम पर रखने की घोषणा

विकास कार्यों से रोजगार के नए अवसर पैदा होंगे : शिक्षा मंत्री

रायपुर (विश्व परिवार)। शिक्षा मंत्री श्री बृजमोहन अग्रवाल आज तिल्दा-नेवरा में आयोजित लोकार्पण और शिलान्यास कार्यक्रम में शामिल हुए। उन्होंने यहां 5.24 करोड़ रूपए के विकास कार्यों का लोकार्पण एवं शिलान्यास किया। श्री अग्रवाल ने शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय ससाहोली का नाम जैन मुनि श्री विद्यासागर जी महाराज के नाम पर रखने की घोषणा की साथ ही तिल्दा नेवरा में बीएड कॉलेज खोले जाने का आश्वासन दिया। इसके साथ ही स्वामी आत्मानंद प्रियदर्शिनी स्कूल और शासकीय विद्यालय भीमोरी में निर्माण कार्य के लिए 25-25 लाख रुपए देने की घोषणा की।

मंत्री श्री अग्रवाल ने इस अवसर पर कहा कि छत्तीसगढ़ में हमारी सरकार आने के बाद विकास के कार्यों में तेजी आई है। डबल इंजन सरकार की वजह से बेहतर समन्वयन के कारण योजनाओं को क्रियान्वित करने में आसानी हो रही है। उन्होंने कहा कि हमारी सरकार बुनियादी ढांचे के विकास पर विशेष ध्यान दे रही है, जिससे अर्थव्यवस्था को गति मिलेगी और विकास कार्यों से रोजगार के अवसरों में भी वृद्धि होगी। श्री अग्रवाल ने यहां 157 लाख रुपए से निर्मित औद्योगिक प्रशिक्षण संस्था में 50 सीटर बालक छात्रावास, 247 लाख रुपए की लागत से बने 33/11 के.व्ही. विद्युत उपकेन्द्र, 42 लाख रुपए से निर्मित उप पंजीयक कार्यालय भवन और 27 लाख से बने आयुष्मान आरोग्य मंदिर हमर क्लिनिक का लोकार्पण किया। साथ ही बी.एन.बी. उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, हाई स्कूल सासाहोली और स्वामी आत्मानंद कन्या उच्चतर माध्यमिक विद्यालय में 18-18 लाख रुपए की लागत से बनने वाले प्रार्थना शेड का शिलान्यास किया।

कार्यक्रम की अध्यक्षता राजस्व मंत्री श्री टंक राम वर्मा ने की और सांसद श्री सुनील सोनी विशिष्ठ अतिथि के रूप में शामिल हुए। इस अवसर पर श्रीमती लेमिक्षा गुरू डहरिया, श्री अनिल अग्रवाल, श्री ईश्वर यदु, श्री देवादास टंडन, विभागीय अधिकारी सहित बड़ी संख्या में स्थानीय नागरिक उपस्थित थे।

विशाखापट्टनम-निज़ामुद्दीन के मध्य होली स्पेशल ट्रेन की सुविधा

रायपुर (विश्व परिवार)। रेलवे द्वारा होली के अवसर पर विशाखापट्टनम-निज़ामुद्दीन के मध्य गाड़ियों में होने वाली भीड़ को ध्यान में रखते हुए एक होली स्पेशल सुपर फास्ट ट्रेन विशाखापट्टनम-निज़ामुद्दीन-विशाखापट्टनम के मध्य दो फेरे के लिये चलाई जायेगी एवं यह गाड़ी विशाखापट्टनम से 08571 नंम्बर के साथ तथा निज़ामुद्दीन से 08572 नम्बर के साथ चलेगी। 08571 विशाखापट्टनम-निज़ामुद्दीन होली स्पेशल विशाखापट्टनम से दिनांक 23 एवं 30 मार्च, 2024 तथा 08572 निज़ामुद्दीन-विशाखापट्टनम होली स्पेशल निज़ामुद्दीन से 24 एवं 31 मार्च, 2024 को चलेगी। इस स्पेशल ट्रेन में 2 एस.एल.आर/एसएलआरडी, 02 सामान्य, 13 एसी-III, 02 एसी-II सहित कुल 19 कोच रहेगी। इस गाड़ी की विस्तृत समय-सारणी निम्नानुसार है।

08571 विशाखापट्टनम-निज़ामुद्दीन होली स्पेशल		स्टेशन	08571 निज़ामुद्दीन- विशाखापट्टनम होली स्पेशल	
पहुंच	छुट		पहुंच	छुट
---	08.20 (शनिवार)	विशाखापट्टनम	13.30 (मंगलवार)	---
09.15	09.20	विजयनगरम	12.00	12.05
09.58	10.00	बोब्बली	11.18	11.20
10.23	10.25	पार्वतीपुरम	10.55	10.57
11.10	11.15	रायगड़ा	09.30	09.35
13.20	13.22	केसिंगा	07.15	07.17
13.35	13.45	टिटलागढ़	06.50	07.00
14.20	14.25	कांटाभांजी	06.00	06.05
15.05	15.07	खरियार रोड	04.45	04.47
16.13	16.15	महासमुन्द	03.50	03.52
18.10	18.35	रायपुर	02.30	02.55
20.30	20.40	उसलापुर	23.00	23.10
23.10	23.12	अनुपपुर	20.20	20.25
02.15	02.25	कटनी मुरवारा	16.30	16.40
04.00	04.02	दमोह	14.30	14.32
05.00	05.05	सागर	13.15	13.20
06.45	06.50	ललितपुर	10.30	10.35
09.15	09.20	वीरांगना लक्ष्मीबाई झांसी	08.30	08.35
11.30	11.35	ग्वालियर	06.30	06.35
14.30	14.35	आगरा कैंट	03.30	03.35
15.30	15.35	मथुरा	02.00	02.05
17.40 (रविवार)	---	ह.निज़ामुद्दीन	---	23.35 (रविवार)

आचार संहिता लागू होते ही करें विरूपण हटाने की कार्रवाई : आयुक्त अबिनाश मिश्रा

मतदान केंद्रों पर बिजली, पानी, दिव्यांगजनों के लिए रैम्प आदि सुविधाएं सुनिश्चित करने के निर्देश

नगर निगम आयुक्त ने की निर्वाचन संबंधी तैयारियों की समीक्षा, दिये जरूरी निर्देश

रायपुर (विश्व परिवार)। नगर निगम आयुक्त एवं नोडल अधिकारी श्री अबिनाश मिश्रा ने आज लोकसभा निर्वाचन 2024 को लेकर शहरी क्षेत्र में चल रही तैयारियों की समीक्षा की। श्री मिश्रा ने नगर निगम के सभी जोन कमिश्नरों और अन्य संबंधित सहायक नोडल अधिकारियों के साथ सभाकक्ष में बैठक की और जरूरी निर्देश दिए। निगम आयुक्त ने सभी विभागीय अधिकारियों को निर्देशित किया कि भारत निर्वाचन आयोग द्वारा लोकसभा निर्वाचन 2024 के कार्यक्रम की घोषणा किये जाने के साथ ही आदर्श आचार संहिता लागू हो जाएगी।

इसके बाद यह सुनिश्चित किया जावे कि जिले में किसी संपत्ति का विरूपण न हो। श्री मिश्रा ने मुख्य मार्गों, सार्वजनिक स्थलों, शासकीय कार्यालयों से लेकर इंडोर स्टेडियम, शुभाष स्टेडियम, सामुदायिक भवनों, टाउन हॉल, ऑडिटोरियम, स्वीमिंग पुल, लाइब्रेरी जैसी शासकीय परिसरों से भी सभी प्रकार की संपत्ति विरूपित करने वाले साधनों को समय-सीमा में हटाने के निर्देश अधिकारियों को दिए।

श्री मिश्रा ने कहा कि यदि कोई संपत्ति विरूपित करता है तो तत्काल निर्धारित समय-सीमा में प्राथमिक रिपोर्ट दर्ज करने व विरूपण हटाने की कार्यवाही करें। उन्होंने अधिकारियों को चेताया भी कि यदि आपके अधीनस्थ कोई संपत्ति विरूपित पाई जाती है और आपके द्वारा कोई कार्यवाही नहीं की जाती है तो संबंधित अधिकारी विरूद्ध भी कार्यवाही की जा सकेगी।

बैठक में आगामी लोकसभा निर्वाचन के लिए चिन्हांकित मतदान केंद्रों का स्थल निरीक्षण करके भौतिक सत्यापन करने के निर्देश भी श्री मिश्रा ने अधिकारियों को दिए हैं। उन्होंने कहा कि अपने क्षेत्र के मतदान केंद्रों का अवलोकन करके उन केंद्रों पर बिजली, पानी, शौचालय, फर्नीचर, मोबाइल नेटवर्किंग, दिव्यांगजनों के लिए रैंप आदि सारी बुनियादी सुविधाएं शत प्रतिशत सुनिश्चित करा लें। उन्होंने मतदान केंद्रों पर पारदर्शिता के साथ चुनाव प्रक्रिया कराने के लिए इंतजाम सुनिश्चित करने के निर्देश दिए है।

छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मंडल

विद्युत संभाग-रायपुर, सेक्टर-19, पर्यावास भवन, नवा रायपुर, अटल नगर (छ.ग.) मो.नं. 9425552266

निविदा आमंत्रण सूचना विज्ञापन क्र. 318

छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मण्डल, विद्युत संभाग-रायपुर, के अंतर्गत राजस्व मण्डल रायपुर में पब्लिक एड्रेसिंग सिस्टम, माइक्रोफोन सिस्टम, इंटरकॉम सिस्टम, ए.सी. एवं आंतरिक विद्युतीकरण कार्य हेतु 01 नग ऑनलाईन निविदा एकीकृत पंजीयन प्रणाली में पंजीकृत सक्षम श्रेणी के ठेकेदारों से आमंत्रित की जाती है। कार्य की विस्तृत निविदा आमंत्रण सूचना वेबसाईट **https://eproc.cgstate.gov.in** एवं मण्डल की वेबसाईट **www.cghb.gov.in** पर उपलब्ध है। अन्य जानकारी हेतु कार्यालय विद्युत संभाग-रायपुर में संपर्क करें।

कार्यपालन अभियंता (वि.)

SAMVAD- 40095/ 2

कार्यालय संपदा अधिकारी

छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मण्डल, संपदा प्रबंधन प्रक्षेत्र राजधानी परियोजना, नवा रायपुर
पांचवॉ तल, व्यवसायिक परिसर, (दक्षिण-पूर्व कार्नर), सेक्टर-27, नवा रायपुर, अटल नगर (छ.ग.)
फोन नं.-0771-4016094 E-mail ID:- 1. em-zone2@yahoo.com 2. eozone3cghb@gmail.com

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि नीचे दर्शाये गये आबंटियों को छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मण्डल द्वारा आबंटित भू-खण्ड/भवन को **फ्री-होल्ड** के लिए निर्धारित प्रारूप में आवेदन प्रस्तुत किया गया है। इस आम सूचना प्रकाशन की तिथि से 15 दिवस के अन्दर कोई आपत्ति हो तो मय दस्तावेज के साथ अधोहस्ताक्षरकर्ता के कार्यालय में कार्यालयीन दिवस में प्रस्तुत करें। निर्धारित अवधि के पश्चात कोई भी आपत्ति स्वीकार नहीं होगी।

क्र.	आबंटी का नाम	पिता/पति का नाम	आयु	कॉलोनी का नाम	भू-खण्ड/भवन क्रमांक
1	2	3	4	5	6
1	श्री रमेश कुमार साहू	स्व. श्री किशन लाल साहू	55	सेक्टर-27 नवा रायपुर अटल नगर	पी2ए-273
2	श्री नवीन तिवारी	श्री एस.एन. तिवारी	40	--तदैव--	एफ2सी-28/506
3	श्रीमति पदमा घनश्याम मनहर	श्री घनश्याम मनहर	45	विशेष आवासीय धरमपुरा	भूखण्ड-47

संपदा अधिकारी
छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मण्डल
सम्पदा प्रबंधन प्रक्षेत्र राजधानी परियोजना,
नवा रायपुर, अटल नगर, जिला-रायपुर

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-4)

प्रेस क्लब, पानी टंकी के नीचे, छोटापारा, रायपुर
E-mail ID - rmczone4@gmail.com

पत्र क्र./10157/ न.पा.नि./जोन क्र.-4/2024
रायपुर, दिनांक 15-03-2024

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 10157
वार्ड का नाम-46-मौलाना अब्दूल रऊफ वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड **46** स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. **RPR449C00047** जो की निगम अभिलेख श्री/श्रीमती **MOHAMMAD EKBAL** पिता/पति, श्री/श्रीमती **ABDUL LATIF** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **आस्मा खान** पिता/पति, श्री/श्रीमती **शमशेर खान** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **शपथ पत्र, टैक्स रशीद, मलमा बिक्रीनामा, परिचय पत्र व अन्य दस्तावेज**/ वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

-सूचना जारी करें-
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक- (4)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्रं.-6)

आई.एस.बी.टी. चतुर्थ तल, रावणभाठा, रायपुर
Email ID - rmczone6@gmail.com

पत्र क्रं./10099/न.पा.नि./जोन क्रं. 6/2024
रायपुर दिनांक : 15-03-2024

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 10099
वार्ड का नाम- 60 - चन्द्रशेखर आजाद वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि 60 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी-आई.डी.- **RPR652G01016** जो कि निगम अभिलेख में श्री/श्रीमती **MUKESH KUMAR SEN** पिता/पति, श्री/श्रीमती **KHEMLAL SEN** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **SHAHNAZ BANO** पिता/पति श्री/श्रीमती **W/O MOHAMMAD AMAN ASHRAFI** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत विक्रय विलेख**/ वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, तो प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नही की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

सूचना जारी करें
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रं. - (6)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्रं.-6)

आई.एस.बी.टी. चतुर्थ तल, रावणभाठा, रायपुर
Email ID - rmczone6@gmail.com

पत्र क्रं./10102/न.पा.नि./जोन क्रं. 6/2024
रायपुर दिनांक : 15-03-2024

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 10102
वार्ड का नाम- 60 - चन्द्रशेखर आजाद वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि 60 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी-आई.डी.- **RPR652F01064** जो कि निगम अभिलेख में श्री/श्रीमती **PRAMILA SAHU** पिता/पति, श्री/श्रीमती **PREMLAL SAHU** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **BHARAT LAL SAHU** पिता/पति श्री/श्रीमती **S/O JAGDISH RAM SAHU** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत विक्रय विलेख**/ वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, तो प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नही की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

सूचना जारी करें
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रं. - (6)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे

ई-निविदा सूचना

निविदा सूचना संख्याः ई-आर-टी-10-24-25 दिनांक 11.03.2024

कार्य का नामः आफिसर्स क्लब के लिए खारुन रेल विहार कालोनी रायपुर में ओपन स्टेज और टेनिस कोर्ट, वाली बाल कोर्ट का निर्माण, निपनिया में आर.जी.एम. (रेल ग्राईडीग मशीन) में भारी ड्युटी के कार्य करने के लिय साईडिंग सुविधावो को देने का कार्य, भाटापारा के हथबंद इंड पर गुड्स शेड प्लेटफार्म का विस्तार, हथबंद यार्ड के डाउन लांग लुप लाईन पर पाथवे के निर्माण का कार्य, ए.डी.इ.एन./भाटापारा के अधिकार क्षेत्र में लेवल क्रासिंग गुमटी के फेसिंग, फ्लोरिंग, शेड आदी का शेष कार्य एवं सिनियर डी.ई.एन./I/रायपुर के अधिकार क्षेत्र में बिलासपुर-दुर्ग सेक्सन के बीच, विभिन्न लेवल क्रासिंग पर सडक की सतह पर सुधार का **कार्य। निविदा मूल्यः रु.** 1,90,45,219.36/- **ईएमडीः** रु.2,45,200/- **निविदा प्रस्तुत करनाः** 11.00 बजे तक दिनांक 04.04.2024. **निविदा खोलनाः** 11.00 बजे दिनांक 04.04.2024. विस्तृत विवरण/निविदा दस्तावेज की खरीद, पात्रता मानदंड एवं उपरोक्त कार्य के पूर्ण विवरण हेतु कृपया वरिष्ट मंडल इंजीनियर, समन्वय/एसईसीआर रायपुर के कार्यालय से संपर्क करें अथवा हमारे वेबसाइट **www.ireps.gov.in** पर उपलब्ध निविदा दस्तावेजों का अवलोकन/डाउनलोड करें।

वरि. मंडल अभियंता- I
पीआर/आर/इंजी/एपी/273 **द.पू.म. रेलवे/रायपुर**

South East Central Railway @secrail

AUCTION NOTICE — IndusInd Bank Ltd.

Bids are invited to Sale below mentioned vehicle as on where is basis, for inspection interested person may contact to respective person on given contact no as below. Through the present notice we hereby once again call upon the borrower & Co-borrower concerned for clear their dues on or before **22.03.2024**, else we shall be constrained to sell off the vehicle and loss if any shall be recovered from them.

Branch Name	Deal No.	Customer Name	Vehicle Model	Reg. No.	Chassis No.	Engine No.	Yard Name	Contact Person
PATHALGAON	FAP00145G	YUDHISTHIR YADAV	TATA ACE HT PLUS BS6	NA	MAT559007 NZN30010	800CDI04N XXSG2348	MAHAMAYA YARD, AMBIKAPUR	KARMVEER SINGH MOB NO. 9644370009
BILASPUR	FRB00811G	RAMESH KUMAR PRADHAN	PIAGGIO APE CITY PLUS DIESEL BS6	CG10 BJ8220	MBX0007BF ZB089353	S1B915 4481	JAIN CAMPUS, BILASPUR	RAVI SINGH MOB NO. 7000827278

कार्यालय सम्पदा अधिकारी, छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मण्डल,

सम्पदा प्रबंधन प्रक्षेत्र-01, सिरपुर भवन, व्यवसायिक परिसर कबीर नगर, रायपुर
email Id- eocghbzone1@gmail.com

आम-सूचना

छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मण्डल द्वारा **कबीर नगर कॉलोनी,** रायपुर में निर्मित अमलताश परिसर में दुकानों में से **दुकान क्रमांक-10 में श्री राजकुमार सिंह ठाकुर पिता श्री शिशुपाल सिंह ठाकुर** को भाड़ाक्रय/ स्ववित्तीय आधार पर आबंटित/ नामांतरित किया गया है।

मूल आबंटी की मृत्यु दिनांक **21.12.2023** को हो जाने के कारण उरनके वारिस **श्रीमती रेखा सिंह पति स्व. श्री राजकुमार सिंह ठाकुर** द्वारा उक्त दुकान अपने नाम पर नामांतरण करने हेतु आवेदन पत्र, मृत्यु प्रमाण पत्र, शपथ पत्र/ सहमति पत्र **(श्रीमती गरिमा सिंह ठाकुर 2. श्री सिद्धार्थ सिंह ठाकुर)** एवं अन्य दस्तावेज प्रस्तुत किया गया है। प्रस्तुत दस्तावेज के आधार पर उक्त दुकान **श्रीमती रेखा सिंह पति स्व. श्री राजकुमार सिंह ठाकुर** के नाम पर नामांतरण किया जाना है।

किसी भी व्यक्ति, शासकीय/ अर्द्धशासकीय संस्था इत्यादि को उक्त दुकान के **नामांतरण** के संबंध में किसी भी प्रकार की कोई आपत्ति हो, तो इस कार्यालय में लिखित रूप से प्रमाणित दस्तावेज सहित इस आम सूचना प्रकाशन के 15 दिन के अन्दर सक्षम उपस्थित होकर आपत्ति प्रस्तुत करें। अन्यथा बाद में प्राप्त आपत्ति मान्य नहीं की जावेंगी।

सम्पदा अधिकारी,
छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मण्डल,
सम्पदा प्रबंधन प्रक्षेत्र-01
कबीर नगर, रायपुर

कार्यालय सम्पदा अधिकारी, छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मण्डल,

सम्पदा प्रबंधन प्रक्षेत्र-01, सिरपुर भवन, व्यवसायिक परिसर कबीर नगर, रायपुर
email Id- eocghbzone1@gmail.com

आम-सूचना

छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मण्डल द्वारा **रामकृष्ण परमहंस नगर कोटा** रायपुर में निर्मित ए टाईप भवन योजना में से भवन/भूखण्ड क्रमांक **ए-91, श्री प्रभाकर राव पिता श्री के. जोगा राव** को भाड़ाक्रय/ एकमुश्त आधार पर आबंटित/ नामांतरित किया गया है। आबंटी द्वारा दिनांक **23.04.2003** को विक्रय विलेख निष्पादित करा लिया गया है।

नामांतरी **श्री प्रभाकर राव पिता श्री के. जोगा राव** की मृत्यु दिनांक 21.07.2012 को हो जाने के कारण वारिसों **श्री काकरा सुन्दर राव पिता स्व. श्री के. प्रभाकर राव,** द्वारा उक्त भूवन/ भूखण्ड उक्त हेतु आवेदन पत्र, शपथ पत्र, सहमति पत्र, **1. श्रीमती चेल्लापिल्ला विजया ललिथा पति श्री चेल्लापिल्ला श्रीनिवास राव 2. श्रीमती के जयाललिता पति श्री के. वेंकट राव,** मृत्यु प्रमाण पत्र एवं अन्य दस्तावेज प्रस्तुत किया गया है। प्रस्तुत दस्तावेज के आधार पर उक्त **भवन/भूखण्ड श्री काकरा सुन्दर राव पिता स्व. श्री के. प्रभाकर राव** के नाम पर नामांतरण किया जाना है।

अतः किसी भी व्यक्ति, शासकीय/ अर्द्धशासकीय/ वित्तीय संस्था इत्यादि को उक्त भवन/भूखण्ड के **नामांतरण** के संबंध में किसी भी प्रकार की कोई आपत्ति हो, तो इस कार्यालय में लिखित रूप से प्रमाणित दस्तावेज सहित इस आम सूचना प्रकाशन की तिथि से 15 दिन के अन्दर स्वतः उपस्थित होकर आपत्ति प्रस्तुत कर सकते हैं। निर्धारित तिथि के बाद में प्राप्त आपत्ति मान्य नहीं की जावेंगी एवं भवन का नामांतरण आदेश जारी कर दिया जावेगा।

सम्पदा अधिकारी,
छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मण्डल,
सम्पदा प्रबंधन प्रक्षेत्र-01
कबीर नगर, रायपुर

कार्यालय सम्पदा अधिकारी, छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मण्डल,

सम्पदा प्रबंधन प्रक्षेत्र-02, शंकर नगर रायपुर (छ.ग.), फोन नं.- 0771-4903223
Email Id: eocghbzone02@gmail.com

आम-सूचना

सर्व-साधारण को सूचित किया जाता है कि छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मंडल द्वारा, सामान्य आवास योजनांतर्गत **सड्डू,** रायपुर में स्थित **एम.आई.जी. डीलक्स भवन क्रमांक-57,** को इस कार्यालय के नामांतरण आदेश क्रमांक **240** दिनांक **24.07.2023 श्री गजेन्द्र कुमार डडसेना पिता श्री कन्हैया लाल डडसेना,** के नाम नामांतरित किया गया है। नामांतरी द्वारा उक्त भवन के मद में सम्पूर्ण राशि जमा कर भवन कि विक्रय विलेख दिनांक **16.06.2022** को पंजीकृत करने उपरांत इस कार्यालय के पत्र क्रमांक **3671-72** दिनांक **03.07.2010** भवन का आधिपत्य प्राप्त कर लिया गया है।

वर्तमान में नामांतरी **श्री गजेन्द्र कुमार डडसेना पिता श्री कन्हैया लाल डडसेना,** निवासी- डी-335, सेक्टर नं.-4, कमल विहार रायपुर (छ.ग.) के द्वारा उक्त भवन को **क्रेता श्री जीवन लाल सिन्हा पिता श्री खेदू राम सिन्हा,** निवासी- म.नं.-48, विधानसभा रोड आमासिवनी, रायपुर (छ.ग.) को विक्रय करने के लिए अनापत्ति प्रमाण पत्र (एन.ओ.सी.) प्राप्त करने हेतु इस कार्यालय में अपना आवेदन प्रस्तुत किया गया है।

अतः उक्त भवन के **विक्रय** करने के संबंध में किसी व्यक्ति शासकीय/अर्द्धशासकीय संस्था, निकाय, बैंक अथवा वित्तीय संस्था को कोई आपत्ति हो तो इस आम सूचना प्रकाशन के 15 दिवस के अन्दर लिखित आपत्ति मय दस्तावेज अधोहस्ताक्षरकर्ता के कार्यालय में प्रस्तुत करें। अन्यथा बाद में प्राप्त होने वाली आपत्ति पर विचार नहीं किया जावेगा।

सम्पदा अधिकारी,
छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मण्डल,
प्रक्षेत्र-02, शंकर नगर, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय सम्पदा अधिकारी, छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मण्डल,

सम्पदा प्रबंधन प्रक्षेत्र-02, शंकर नगर रायपुर (छ.ग.), फोन नं.- 0771-4903223
Email Id: eocghbzone02@gmail.com

आम-सूचना

सर्व-साधारण को सूचित किया जाता है कि सामान्य आवास योजनांतर्गत **दोन्देखुर्द** रायपुर में स्थित चूना संयंत्र की व्यवसायिक भूमि, **श्री जी. मिनरल्स, प्रो. विनोद कुमार महेश्वरी पिता स्व. श्री नंदलाल महेश्वरी,** निवासी- 31, प्रताप नगर विद्याधर नगर रोड, शास्त्री नगर, जयपुर-16, राजस्थान को ऑफर आधार पर आबंटित किया गया था। उनके द्वारा दिनांक **18.10.2007** को अपने नाम पर लीजडीड/ सेलडीड/ विक्रय विलेख पंजीयन कराने के उपरांत दिनांक **11.11.2021** को हस्तांतरण विलेख **(फ्री-होल्ड)** निष्पादित करा लिया गया है। हस्तांतरण विलेख निष्पादक उपरांत उक्त भूमि को **क्रेता यशराज फॉम्स एण्ड फॉरेस्टी प्रा.लि. द्वारा डायरेक्टर राजीव कुमार मुंदड़ा,** निवासी- शंकर नगर, जिला- रायपुर (छ.ग.) के पक्ष में दिनांक **02.06.2023** को विक्रय कर दिया गया है। वर्तमान में **क्रेता यशराज फॉम्स एण्ड फॉरेस्टी प्रा.लि. द्वारा डायरेक्टर राजीव कुमार मुंदड़ा,** द्वारा उक्त भूमि को **(फ्री-होल्ड)** पश्चात अपने नाम पर मण्डल अभिलेख में दर्ज किये जाने हेतु इस कार्यालय में अपना आवेदन पत्र प्रस्तुत किया गया है।

अतः उक्त भूमि के **फ्री-होल्ड** उपरांत मण्डल अभिलेख में दर्ज के संबंध में किसी व्यक्ति शासकीय व अर्द्धशासकीय संस्था, निकाय, बैंक अथवा वित्तीय संस्था को कोई आपत्ति हो तो इस आम सूचना प्रकाशन के 15 दिवस के अन्दर लिखित आपत्ति मय दस्तावेज अधोहस्ताक्षरकर्ता के कार्यालय में प्रस्तुत करें। अन्यथा बाद में प्राप्त होने वाली आपत्ति पर विचार नहीं किया जावेगा।

सम्पदा अधिकारी,
छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मण्डल,
प्रक्षेत्र-02, शंकर नगर, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय सम्पदा अधिकारी, छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मण्डल,

सम्पदा प्रबंधन प्रक्षेत्र-03, मौलश्री विहार, रायपुर (छ.ग.) फोन नं.-0771-2991574
Email Id: eocghbzone03@gmail.com

आम-सूचना

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मण्डल द्वारा कॉलोनी **बोरियाकला,** रायपुर में निर्मित दीनदयाल आवास योजनांतर्गत **एल.आई.जी. फ्लैट क्र.-44, ब्लॉक-03, द्वितीय तल श्री परेटन राम साहू पिता श्री हिरऊ राम साहू,** के नाम पर इस कार्यालय का नामांतरण आदेश **क्र. 4470** दिनांक **29.03.2014** के माध्यम से नामांतरित है। वर्तमान में द्वितीय आबंटी **श्री परेटन राम साहू पिता श्री हिरऊ राम सहू,** निवासी- भोजपुरी तहसील-बिल्हा, जिला-बिलासपुर (छ.ग.) के द्वारा उक्त फ्लैट को **क्रेता श्रीमती नंदनी यादव पति श्री लक्ष्मी कान्त** निवासी- हाउसिंग बोर्ड कॉलोनी बोरियाकल रायपुर, तहसील व जिला रायपुर (छ.ग.) के पक्ष में **विक्रय** करना चाहता है। **विक्रय अनुमति** हेतु आवेदन पत्र, विक्रय इकरारनामा की छायाप्रति एवं आवश्यक दस्तावेज प्रस्तुत किया गया है। प्रस्तुत दस्तावेज के आधार पर उक्त भवन को **क्रेता श्रीमती नंदनी यादव पति श्री लक्ष्मी कान्त,** के पक्ष में **विक्रय** हेतु अनुमति प्रदान किया जाना है।

अतः किसी भी व्यक्ति, शासकीय/ अर्द्धशासकीय संस्था निकाय, बैंक अथवा वित्तीय संस्था इत्यादि को उक्त भूखण्ड/भवन के **विक्रय करने हेतु अनुमति** प्रदान करने में किसी भी प्रकार की कोई आपत्ति हो तो इस कार्यालय में स्वयं उपस्थित होकर लिखित रूप से प्रमाणित दस्तावेज सहित इस आम सूचना प्रकाशन के 15 दिवस के अन्दर आपत्ति प्रस्तुत करें, अन्यथा नियत समयावधि पश्चात आपत्ति मान्य नहीं की जावेगी।

सम्पदा अधिकारी,
छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मण्डल,
प्रक्षेत्र-03, मौल श्री विहार, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय सम्पदा अधिकारी, छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मण्डल,

सम्पदा प्रबंधन प्रक्षेत्र-03, मौलश्री विहार, रायपुर (छ.ग.) फोन नं.-0771-2991574
Email Id: eocghbzone03@gmail.com

आम-सूचना

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि सामान्य आवास योजनांतर्गत **बोरियाकला,** रायपुर में स्थित **भवन क्रमांक रोजवुड-I/64, श्री संजय कुमार मेश्राम पिता श्री पुनमचंद मेश्राम,** के नाम पर नामांतरित है। नामांतरी द्वारा उक्त भवन का इस कार्यालय के पत्र क्रमांक **3126** दिनांक **16.09.2021** को नामांतरण आदेश जारी किया गया है। नामांतरी **श्री संजय कुमार मेश्राम पिता श्री पुनमचंद मेश्राम,** द्वारा उक्त भवन को **क्रेता (1) श्री आशीष सिंह पटेल पिता श्री आर.एस. पटेल (2) श्री राधेश्याम पटेल पिता स्व. श्री डी.डी. पटेल,** निवासी- भवन क्रमांक रोजवुड-65, हाउसिंग बोर्ड कॉलोनी न्यू धमतरी रोड, बोरियाकला, रायपुर, पक्ष में दिनांक **06.03.2024** को **विक्रय** कर दिया गया है। वर्तमान में नवीन **क्रेता (1) श्री आशीष सिंह पटेल पिता श्री आर.एस. पटेल (2) श्री राधेश्याम पटेल पिता स्व. श्री डी.डी. पटेल** द्वारा उक्त भवन को **फ्री-होल्ड** पश्चात अपने नाम पर मण्डल अभिलेख में दर्ज किये जाने हेतु इस कार्यालय में अपना आवेदन प्रस्तुत किया गया है।

अतः उक्त भवन का **फ्री-होल्ड** उपरांत मण्डल अभिलेख में नाम दर्ज करने के संबंध में किसी भी व्यक्ति, शासकीय/ अर्द्धशासकीय संस्था निकाय, बैंक अथवा वित्तीय संस्था को कोई आपत्ति हो तो इस आम सूचना प्रकाशन के 15 दिवस के अन्दर लिखित आपत्ति मय दस्तावेज अधोहस्ताक्षरकर्ता के कार्यालय में प्रस्तुत करें। अन्यथा बाद में प्राप्त होने वाली आपत्ति पर विचार नहीं किया जावेगा।

सम्पदा अधिकारी,
छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मण्डल,
प्रक्षेत्र-03, मौल श्री विहार, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-10)

अमलीडीह पानी टंकी, रायपुर
E-mail ID - rmczone10@gmail.com

पत्र क्र./9800/ न.पा.नि./जोन क्र.-10/2024
रायपुर, दिनांक 15-03-2024

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 9800
वार्ड का नाम- 50 - रानी दुर्गावती

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड **50** स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. **RPR445A0382I** जो की निगम अभिलेख श्री/श्रीमती **MAHESH WADHWANI** पिता/पति, श्री/श्रीमती **LT. B.D. WADHWANI** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **श्री शैलेन्द्र नाथ श्रीवास्तव** पिता/पति, श्री/श्रीमती **पिता श्री आर.एन. श्रीवास्तव** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत विक्रय विलेख**/ वंशानुक्रम/ अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

-सूचना जारी करें-
श्री दिनेश कोसरिया
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक- (10)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-4)

प्रेस क्लब, पानी टंकी के नीचे, छोटापारा, रायपुर
E-mail ID - rmczone4@gmail.com

पत्र क्र./10123/ न.पा.नि./जोन क्र.-4/2024
रायपुर, दिनांक 15-03-2024

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 10123
वार्ड का नाम-57-पं. भगवतीचरण शुक्ल वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड **57** स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. **RPR448E00143** जो की निगम अभिलेख श्री/श्रीमती **ZOEB HUSAIN** पिता/पति, श्री/श्रीमती **IQBAL HUSAIN** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **1. सरफराज हुसैन 2. नाहीद फातिमा** पिता/पति, श्री/श्रीमती **1. तसहदुक हुसैन 2. सरफराज हुसैन** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत विक्रय विलेख**/ वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

-सूचना जारी करें-
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक- (4)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम बीरगांव, जिला- रायपुर (छ.ग.)

Email :birgaonmcp@gmail.com,
Website : www.nagarnigambirgaon.com

-: निगम अभिलेखों में नामांतरण की सूचना :-

नामांतरण प्रकरण क्र. 791 दिनांक 15.03.2024
वार्ड का नाम- महात्मा गांधी वार्ड
वार्ड क्र. 32 वर्ष- 2023-24

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि निम्नानुसार भवन/भूमि जो कि निगम के संपत्ति कर मांग पंजी में वार्ड क्रमांक **32** मांग **पंजी क्र. 118 युआईडी 27661** अनुसार अधिभोगी का नाम श्री/श्रीमती **सोनी रघाटटे / सुरेश** से दर्ज है, श्री/श्रीमती **विनोद सेन / रामजी सेन** अधिभोगी के द्वारा रजिस्ट्री/ लिखत द्वारा/ वंशानुक्रम/ बिक्रीनामा आधार पर अधिभोग प्राप्त कर नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत नामांतरण हेतु आवेदन प्रस्तुत किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त अधिभोग परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, तो इस प्रकाशन के 30 दिन के भीतर/अथवा दिनांक **14-04-2024** तक प्रकरण क्रमांक सहित कार्यालय नगर पालिक निगम बीरगांव में लिखित दावा-आपत्ति प्रस्तुत कर सकते हैं। निर्धारित समयावधि पश्चात किसी भी प्रकार की कोई दावा-आपत्ति स्वीकार्य नहीं होगी। दावा-आपत्ति प्राप्त नहीं होने की स्थिति में अधिभोगी के द्वारा देय राशि भुगतान उपरांत अधिभोगी के पक्ष में नामांतरण की कार्यवाही की जावेगी।

सहायक राजस्व अधिकारी
नगर पालिक निगम, बीरगांव
जिला-रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम बीरगांव, जिला- रायपुर (छ.ग.)

Email :birgaonmcp@gmail.com,
Website : www.nagarnigambirgaon.com

-: निगम अभिलेखों में नामांतरण की सूचना :-

नामांतरण प्रकरण क्र. 792 दिनांक 15.03.2024
वार्ड का नाम- मां परमेश्वरी वार्ड
वार्ड क्र. 25 वर्ष- 2023-24

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि निम्नानुसार भवन/भूमि जो कि निगम के संपत्ति कर मांग पंजी में वार्ड क्रमांक **25** मांग **पंजी क्र. 58 युआईडी 24594** अनुसार अधिभोगी का नाम श्री/श्रीमती **पीताम्बर देवांगन / थानुराम देवांगन** से दर्ज है, श्री/श्रीमती **भागवत देवांगन / पिताम्बर लाल देवांगन** अधिभोगी के द्वारा रजिस्ट्री/ लिखत द्वारा/ वंशानुक्रम/ बिक्रीनामा आधार पर अधिभोग प्राप्त कर नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत नामांतरण हेतु आवेदन प्रस्तुत किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त अधिभोग परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, तो इस प्रकाशन के 30 दिन के भीतर/अथवा दिनांक **14-04-2024** तक प्रकरण क्रमांक सहित कार्यालय नगर पालिक निगम बीरगांव में लिखित दावा-आपत्ति प्रस्तुत कर सकते हैं। निर्धारित समयावधि पश्चात किसी भी प्रकार की कोई दावा-आपत्ति स्वीकार्य नहीं होगी। दावा-आपत्ति प्राप्त नहीं होने की स्थिति में अधिभोगी के द्वारा देय राशि भुगतान उपरांत अधिभोगी के पक्ष में नामांतरण की कार्यवाही की जावेगी।

सहायक राजस्व अधिकारी
नगर पालिक निगम, बीरगांव
जिला-रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम बीरगांव, जिला- रायपुर (छ.ग.)

Email :birgaonmcp@gmail.com,
Website : www.nagarnigambirgaon.com

-: निगम अभिलेखों में नामांतरण की सूचना :-

नामांतरण प्रकरण क्र. 793 दिनांक 15.03.2024
वार्ड का नाम- सुन्दर लाल शर्मा वार्ड
वार्ड क्र. 20 वर्ष- 2023-24

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि निम्नानुसार भवन/भूमि जो कि निगम के संपत्ति कर मांग पंजी में वार्ड क्रमांक **20** मांग **पंजी क्र. 980 युआईडी 35965** अनुसार अधिभोगी का नाम श्री/श्रीमती **शांति देवांगन / राधेश्याम देवांगन** से दर्ज है, श्री/श्रीमती **दिव्या कर्ष / रघुनंदन प्रसाद कर्ष** अधिभोगी के द्वारा रजिस्ट्री/ लिखत द्वारा/ वंशानुक्रम/ बिक्रीनामा आधार पर अधिभोग प्राप्त कर नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत नामांतरण हेतु आवेदन प्रस्तुत किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त अधिभोग परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, तो इस प्रकाशन के 30 दिन के भीतर/अथवा दिनांक **14-04-2024** तक प्रकरण क्रमांक सहित कार्यालय नगर पालिक निगम बीरगांव में लिखित दावा-आपत्ति प्रस्तुत कर सकते हैं। निर्धारित समयावधि पश्चात किसी भी प्रकार की कोई दावा-आपत्ति स्वीकार्य नहीं होगी। दावा-आपत्ति प्राप्त नहीं होने की स्थिति में अधिभोगी के द्वारा देय राशि भुगतान उपरांत अधिभोगी के पक्ष में नामांतरण की कार्यवाही की जावेगी।

सहायक राजस्व अधिकारी
नगर पालिक निगम, बीरगांव
जिला-रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम बीरगांव, जिला- रायपुर (छ.ग.)

Email :birgaonmcp@gmail.com,
Website : www.nagarnigambirgaon.com

-: निगम अभिलेखों में नामांतरण की सूचना :-

नामांतरण प्रकरण क्र. 794 दिनांक 15.03.2024
वार्ड का नाम- कैलाश नगर वार्ड
वार्ड क्र. 21 वर्ष- 2023-24

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि निम्नानुसार भवन/भूमि जो कि निगम के संपत्ति कर मांग पंजी में वार्ड क्रमांक **21** मांग **पंजी क्र. 357 युआईडी 23057** अनुसार अधिभोगी का नाम श्री/श्रीमती **मधु क्षत्रिय / रामानुज क्षत्रिय** से दर्ज है, श्री/श्रीमती **सुनीता देवी राजपूत / भोला सिंह राजपूत** अधिभोगी के द्वारा रजिस्ट्री/ लिखत द्वारा/ वंशानुक्रम/ बिक्रीनामा आधार पर अधिभोग प्राप्त कर नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत नामांतरण हेतु आवेदन प्रस्तुत किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त अधिभोग परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, तो इस प्रकाशन के 30 दिन के भीतर/अथवा दिनांक **14-04-2024** तक प्रकरण क्रमांक सहित कार्यालय नगर पालिक निगम बीरगांव में लिखित दावा-आपत्ति प्रस्तुत कर सकते हैं। निर्धारित समयावधि पश्चात किसी भी प्रकार की कोई दावा-आपत्ति स्वीकार्य नहीं होगी। दावा-आपत्ति प्राप्त नहीं होने की स्थिति में अधिभोगी के द्वारा देय राशि भुगतान उपरांत अधिभोगी के पक्ष में नामांतरण की कार्यवाही की जावेगी।

सहायक राजस्व अधिकारी
नगर पालिक निगम, बीरगांव
जिला-रायपुर (छ.ग.)

लीजडीड गुम होने संबंधी सूचना

सर्व साधारण को एतद द्वारा सूचित किया जाता है कि मेरे पक्षकार **श्रीमति नीलेश जैन एवं श्रीमती कोमल जैन** के संयुक्त स्वत्व, हक, हित, आधिपत्य व कब्जे की रायपुर विकास प्राधिकरण की कटोरा तालाब योजना, टैगोरे नगर **भूखंड क्र. 285/5** ग्राम **टिकरापारा** क्षेत्रफल 1650 वर्गफुट से संबंधित मूल लीजडीड जिसको **श्री परमजीत सिंह मनचन्दा** के पक्ष मे दिनांक **15-03-2013** को उप पंजीयक कार्यालय रायपुर में पंजीकृत किया गया था जो टैगोर नगर के आसपास कहीं गम हो गया है जिसके संबंध मे पक्षकार ने पुलिस थाना सिवल लाइन रायपुर में विधिवत सूचना प्रस्तुत किए हैं।

अतः मेरे पक्षकार के संयुक्त संयुक्त स्वत्व, हक, हित, आधिपत्य की उपरोक्त संपत्ति से संबंधित उक्त दस्तावेज किसी भी व्यक्ति को प्राप्त हो तो उसे मेरे नीचे दर्शित पते पर मेरे स्तिथ कार्यालय मे आकर अथवा मेरे मोबाईल नंबर पर संपर्क करें।

रायपुर, दिनांक 14-03-2024

भवदीय
(अमिताभ श्रीवास्तव)
अधिवक्ता
पता- जगन्नाथ हाउस, कुंद्रापारा रोड, बैरन बाजार, रायपुर (छ.ग.)
मो. 8827894626

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्रं.-2)

शहीद समारक भवन, फाफाडीह, रायपुर
Email ID - rmczone2@gmail.com

पत्र क्रं./10176/न.पा.नि./जोन क्रं.-2/2024
रायपुर दिनांक : 15-03-2024

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 10176
वार्ड का नाम- 27- इंदिरा गांधी

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि 27 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी-आई.डी.- **RPR220E0041A** जो कि निगम अभिलेख में श्री/श्रीमती **LATE. DASHRATH LAL JANGHEL** पिता/पति, श्री/श्रीमती **......** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **श्री नन्हें लाल जंघेल** पिता/पति, श्री/श्रीमती **पिता स्व. श्री दशरथ लाल जंघेल** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत हक त्याग विलेख**/ वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, तो प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नही की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

सूचना जारी करें
श्री आर.के. डोंगरे
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रं. - (2)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्रं.-2)

शहीद समारक भवन, फाफाडीह, रायपुर
Email ID - rmczone2@gmail.com

पत्र क्रं./10174/न.पा.नि./जोन क्रं.-2/2024
रायपुर दिनांक : 15-03-2024

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 10174
वार्ड का नाम- 27- इंदिरा गांधी

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि 27 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी-आई.डी.- **RPR737D00625** जो कि निगम अभिलेख में श्री/श्रीमती **JYOTI D/O KEWAL BAJAJ, SUNITA W/O SURESH RAJPUT** पिता/पति, श्री/श्रीमती **......** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **श्री मुकेश कुमार अग्रवाल** पिता/पति, श्री/श्रीमती **पिता श्री जगदीश प्रसाद** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत विक्रय विलेख**/ वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, तो प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

सूचना जारी करें
श्री आर.के. डोंगरे
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रं. - (2)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-10)

अमलीडीह पानी टंकी, रायपुर
E-mail ID - rmczone10@gmail.com

पत्र क्र./9801/ न.पा.नि./जोन क्र.-10/2024
रायपुर, दिनांक 15-03-2024

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 9801
वार्ड का नाम- 50 - रानी दुर्गावती

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड **50** स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. **RPR445A0382H** जो की निगम अभिलेख श्री/श्रीमती **SANJAY WADHWANI HUF KARTA SANJAY WADHWANI** पिता/पति, श्री/श्रीमती **LT. B.D. WADHWANI** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **श्रीमती मुकुल श्रीवास्तव** पिता/पति, श्री/श्रीमती **पति श्री एस.एन. श्रीवास्तव** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत विक्रय विलेख**/ वंशानुक्रम/ अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

-सूचना जारी करें-
श्री दिनेश कोसरिया
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक- (10)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

www.dainikvishwapariwar.com
vishwapariwarraipur@gmail.com

दैनिक
विश्व परिवार

बिलासपुर संभाग

रायपुर शनिवार 16 मार्च 2024

पसान में सामूहिक कन्या विवाह संपन्न

260 जोड़े लाभान्वित, प्रोत्साहन राशि व कई सामान दिए

कोरबा(विश्व परिवार)। बार-बार बनते बिगड़ते कार्यक्रम के बीच आज जिले के पसान में सामूहिक कन्या विवाह संपन्न हो रहा है। 260 जोड़े इस योजना से लाभान्वित हो रहे हैं। आईसीडीएस के अलावा कई विभागों की भूमिका सहयोगी की है। लाभान्वित जोड़ों को प्रोत्साहन राशि के अलावा गृहस्थी का सामान सरकार की ओर से दिया जा रहा है। छत्तीसगढ़ सरकार की ओर से बीते वर्षों में मुख्यमंत्री कन्या विवाह योजना लांच की गई, जो लगातार जारी है। फाल्गुन शुक्ल पंचमी को कोरबा जिले में यह कार्यक्रम करना तय किया गया। पहले इसके लिए 9 मार्च की तिथि तय की गई थी जिसमें मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय को आना था। अपरिहार्य कारणों से यह कार्यक्रम

निरस्त हो गया। लोकसभा चुनाव की आचार संहिता को लेकर लगाई जा रही अटकलों के बीच अंतिम रूप से 14 मार्च की तिथि तय की गई और व्यवस्थाएं करने के साथ पसान में 260 जोड़ों का विवाह संपन्न करना सुनिश्चित हुआ। इनमें अधिकांश हिंदू समाज के जोड़े हैं। इसके अलावा मुस्लिम और ईसाई जोड़ों ने भी विवाह के लिए पंजीकरण कराया है। आईसीडीएस के लगभग सभी सेक्टर से यहां पर भागीदारी हुई है। पंजीकृत जोड़ों और उनके परिजनों को लाने की जिम्मेदारी संबंधित आंगनबाड़ी केंद्रों के कार्यकर्ता और सहायिका को दी गई। कन्या विवाह कार्यक्रम में राज्य के श्रम व उद्योग मंत्री लखनलाल देवांगन, लोकसभा सांसद ज्योत्सना महंत और राज्यसभा सांसद सरोज पांडेय के अलावा अधिकारी व गणमान्यजन की उपस्थिति है। आईसीडीएस के अधिकारियों ने बताया कि प्रशासन के निर्देश पर विभिन्न विभागों की ओर से यहां पर सहयोग किया गया है। विवाह को लेकर सरकार ने जो गाइड लाइन तय की है उसके अंतर्गत सभी लाभान्वित जोड़ों को धनराशि का चेक और अन्य सामाग्री मौके पर दी जाएगी। बताया गया कि इससे पहले यह कार्यक्रम 9 मार्च को संपन्न हो जाना था लेकिन इसे टाल दिया गया। लगातार इसके लिए कोशिश जारी रखी गई। अब जबकि लोकसभा चुनाव की घोषणा का अंदेशा था और खरमास के प्रभावी होने का समय भी नजदीक था। ऐसे में सरकार का परेशान होना स्वाभाविक हो गया। माना जा रहा है कि इन दोनों कारणों से आनन-फानन में नई तारीख तय की गई और इस कार्य को संपन्न कराना जरूरी समझा गया। मार्च के पहले पखवाड़े में ही गर्मी का तापमान 37 डिग्री के आसपास पहुंच जाने से हर कहीं समस्याएं हो रही है। पसान में सामूहिक विवाह के लिए तैयार किये गए विशाल पंडाल में कन्या और वर के साथ उनके परिजन व शुभचिंतक गर्मी के चक्कर में परेशान हुए। शिकायत थी कि आयोजकों ने टेंट का ठेका लेने वाले को उचित मात्रा में पंखे लगाने का जिम्मा नहीं दिया। इस फेर में हर कोई गर्मी के मारे परेशान होता रहा।

तैयारियों का जायजा लेने केआईटी स्ट्रांग रूम पहुंचे कलेक्टर कार्तिकेया गोयल

मतगणना कक्ष व मतदान सामग्री वितरण कार्ययोजना के संबंध में अधिकारियों को दिए दिशा-निर्देश

रायगढ़(विश्व परिवार)। भारत निर्वाचन आयोग द्वारा आगामी लोकसभा निर्वाचन की तैयारियों के संबंध में कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी श्री कार्तिकेया गोयल आज रायगढ़ केआईटी कॉलेज स्थित स्ट्राँग रूम के निरीक्षण में पहुंचे। यहां उन्होंने निर्वाचन के लिए सुविधाओं और सुरक्षा के संबंध

में जानकारी लेते हुए आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। इस अवसर पर पुलिस अधीक्षक श्री दिव्यांग पटेल, जिला पंचायत सीईओ श्री जितेन्द्र यादव, अपर कलेक्टर एवं उप जिला निर्वाचन अधिकारी श्री राजीव कुमार पाण्डेय, आयुक्त नगर निगम श्री सुनील चंद्रवंशी उपस्थित रहे। कलेक्टर श्री गोयल ने तैयार किए जा रहे स्ट्राँग रूम का निरीक्षण कर वहां ईवीएम को रखने की व्यवस्था को देखा। इस दौरान स्ट्रॉन्ग रूम के सुरक्षा के संबंध में उन्होंने जानकारी लेते हुए पूरे एरिया को सुरक्षित करने के लिए ठोस बैरिकेडिंग करने के निर्देश दिए। कलेक्टर श्री गोयल ने ईवीएम, सामग्री वितरण के लिए आवश्यक मूवमेंट के संबंध में जानकारी ली। इस दौरान उन्होंने मतदान पश्चात आने वाली सामग्रियों को रखने संबंधी चर्चा भी की। मौके पर उन्होंने मतगणना कक्ष का भी निरीक्षण किए।

प्रतीकों के उपयोग से छात्रों के लिए आसान होगी गणित-श्रद्धा दुबे

कोरबा(विश्व परिवार)। दूसरे विषय की तुलना में गणित को लेकर छात्र काफी डरे सहमे रहते हैं। कई प्रकार के कारण इसमें शामिल है। कोरबा जिले की एक छात्रा श्रद्धा दुबे प्रतीकों पर शोध करने के साथ गणित को आसान बनाने की कोशिश में जुटी है। गणित तो वैसे ही अपने आप में सीमाओं से परे वषिय है, जिसमें इस्तेमाल होने वाले प्रतीक चिन्ह भी किसी रहस्य से कम नहीं। इन्हीं में एक पाई भी है, जिसकी डिक्शनरी में फुल स्टॉप ही नहीं। यानी पाई का कोई अंत नहीं है, जिसे एक परिमित बहुपद के रूप में नहीं लिखा जा सकता है। गणित के ऐसे ही अनूठे प्रतीक चिन्हों पर शोध कर जिले की होनहार रिसर्च स्कॉलर श्रद्धा दुबे पुरानी उलझनों को सुलझाने की नई गणितीय जुगत ढूढने में जुटी हैं। अपनी रिसर्च में वह यूनिवर्स के मेजरमेंट की दिशा में समाधान के नए रास्तों की तलाश कर रहीं हैं। श्रद्धा का कहना है कि गणितीय मुश्किलों को हल करने के रास्ते की बात करें तो कुछ भी सुनिश्चित नहीं होता, बल्कि लगभग हमेशा ही नई संभावना की खोज व इंतजार बना ही रहता है। इसी कड़ी में वह भी किसी वेल्यू को अपने ऑब्जर्वेशन से पुट कर कुछ नया निकालने और समाधान तक पहुंचने आंकलन के लिए किसी नए और अलग रास्ते का निर्माण करने का प्रयास कर रहीं हैं। शोध छात्रा श्रद्धा दुबे वर्तमान में मध्यप्रदेश में एकेएस विश्वविद्यालय सतना से गणित विभाग में पीएचडी कर रहीं हैं। उनके पिता अधिवक्ता दीपक दुबे सेंट्रल नोटरी हैं और माता श्रीमती सरिता दुबे गृहणी हैं।

कबीर आश्रम में सामुदायिक भवन का लोकार्पण किया पूर्व विधायक ने

कोरबा(विश्व परिवार)। कोरबा जिले के कटघोरा विधानसभा अंतर्गत बांकीमोंगरा वार्ड क्रमांक 67 में विधायक मद राशि 15.00 लाख रुपए की लागत से बने सामुदायिक भवन का लोकार्पण कटघोरा के पूर्व विधायक पुरुषोत्तम कंवर के द्वारा किया गया, पूर्व विधायक पुरुषोत्तम कंवर ने सर्वप्रथम संत कबीर की पूजा-अर्चना कर कबीर आश्रम में नवनिर्मित कबीर सामुदायिक भवन का लोकार्पण किया। कंवर ने कार्यक्रम में कहा कि इस भवन के बन जाने से समाज के लोगों को सामुदायिक कार्यक्रम व धार्मिक अनुष्ठान करने में अब सुविधा होगी। वहीं समाज के लोगों को समाजिक एकता बनाकर सभी लोगों को साथ में लेकर चलने की बात समाज के प्रबुद्ध जनों से कही, कार्यक्रम की अध्यक्षता अमारु दास महंत ने की उन्होंने ने पूर्व विधायक पुरुषोत्तम कंवर का आभार व्यक्त किया। इस दौरान दिनेश दीवान, रामदास दीवान, राममूर्ति दूबे, टीकाराम मनहर, मंगलदास महानंद, बाबूदास दीवान, सावन दास,संजू, गौरी राठौर, श्यामदास, बुधवार दास, जसदीप, सुश्री श्रुतिका, संतोषी चैहान, त्रिभुवन सिंह कंवर, फिरोज अनंत, ध्रुव कुमार यादव, अनंतराम चैहान, कृतराम जांगड़े एवं सत्या कंवर सहित बड़ी संख्या में वार्डवासी उपस्थित थे।

सशस्त्र डकैती मामले की गुत्थी सुलझाने में साइबर सेल के जवानों ने संभाला मोर्चा

कोरबा(विश्व परिवार)। ऊर्जाधानी के रूप में विख्यात दर्री क्षेत्र के गोपालपुर शराब में हुई सशस्त्र डकैती एवं डेढ़ लाख रुपए लूट के मामले की गुत्थी सुलझाने में कोरबा एसपी सिद्धार्थ तिवारी के मार्गदर्शन में दर्री कोतवाल एवं साइबर सेल के योद्धाओं की टीम जिसमें डेढ़ दर्जन से ज्यादा तेज तर्रार वर्दी एवं सादे वेश में स्टाफ तैनात हैं। मामले की गुत्थी सुलझाने में मोर्चा संभाल लिया है। एसपी ने हर हालत में अपने मातहतों को अच्छे परिणाम देने के लिए यहां तक छूट दे दिया है कि समय भले ही लगे लेकिन आरोपी बचने न पाए और कोई भी निर्दोष बिना वजह परेशान न होने पाए। इसलिए पुलिस की टीम एवं साइबर सेल के जवान फूंक-फूंक कर कदम रख रहे हैं। क्योंकि आने वाला समय लोकसभा के चुनाव के समय प्रभाव पड़ सकता है ऐसे में आरोपियों पर किसी भी तरह की ढिलाई नहीं होनी चाहिए तथा कानून व्यवस्था पूरी तरह से पुलिस के नियंत्रण में होना चाहिए। जानकारी के अनुसार एसपी के निर्देशन में शहर कोतवाल रूपक शर्मा अपने मातहत विवेचकों एवं आरक्षकों के साथ ही साइबर सेल के तेज तर्रार प्रधान आरक्षकों क्रमशरू चंद्रशेखर पांडेय, गुनाराम सिन्हा एवं आधा दर्जन से ज्यादा आरक्षकों को इस मामले की गुत्थी सुलझाने में पूरी तरह से अलग-अलग प्वाइंटों पर लगा दिया है। जिसके तहत कुछ जवान केवल मोबाइल सर्विलांस का सहारा ले रहे हैं तो कुछ जवान मैदानी इलाके में मुखबिरों को लगा रखे हैं। वहीं कुछ ऐसे भी पुलिस कर्मी हैं जिनका काम सुबह से देर शाम तक कौन कहां से और कैसे तथा किस प्रयोजन से संबंधित डकैती प्रभावित क्षेत्र में आता है जाता है तथा किसके वहां शराब भट्ठे में आने-जाने का क्या समय है। किन-किन लोगों के साथ उनका उठना-बैठना है, इन सभी पहलुओं पर काफी बारिकी से दर्री पुलिस एवं साइबर सेल के जवान पैनी नजर रखे हुए हैं। अब तक के अनुभवों के अनुसार कोरबा पुलिस एवं साइबर सेल की टीम ने कम स्टाफ होने के बावजूद भी क्राइम कंट्रोल का परचम लहराने में कामयाब रही है।

पीएम सूरज पोर्टल से जरूरतमंद गरीब परिवारों को योजनाओं की जानकारी के साथ आत्मनिर्भर बनने का मिलेगा अवसरः मंत्री लखनलाल देवांगन

प्रधानमंत्री मोदी ने किया पीएम सूरज राष्ट्रीय पोर्टल का शुभारंभ

कैबिनेट मंत्री देवांगन ने हितग्राहियों को वितरित की सामग्री

कोरबा(विश्व परिवार)। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने वीडियो कॉन्फ्रेंस के माध्यम से वंचित वर्गों के लिए आउटरीच कार्यक्रम प्रधानमंत्री सामाजिक उत्थान एवं रोजगार आधारित जनकल्याण (पीएम सूरज) राष्ट्रीय पोर्टल का शुभारंभ किया। इस राष्ट्रव्यापी कार्यक्रम में देशभर के 525 जिलों के हितग्राहियों ने

वर्चुअली जुड़कर संवाद स्थापित किया। प्रधानमंत्री श्री मोदी ने देशभर के विभिन्न राज्यों के अनुसूचित जाति, पिछड़ा वर्ग और स्वच्छता कार्यकर्ताओं सहित वंचित समूहों के विभिन्न सरकारी योजनाओं से ऋण सहायता प्राप्त लाभार्थियों से संवाद भी किया। इस राष्ट्रव्यापी कार्यक्रम में प्रधानमंत्री ने कहा कि वंचित वर्गों को ऋण सहायता के लिए पीएम-सूरज राष्ट्रीय पोर्टल एक परिवर्तनकारी पहल है, जिससे समाज के वंचित वर्गों का उत्थान होगा। पोर्टल का उद्देश्य दलित, आदिवासी और पिछड़ों का जीवन आसान और समृद्ध बनाना है। इसके द्वारा देश भर में पात्र व्यक्तियों को बैंकों, गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनियों (एनबीएफसी)-सूक्ष्म वित्त संस्थानों (एमएफआई) और अन्य संगठनों के माध्यम से ऋण सहायता प्रदान की जाएगी। उन्होंने कहा कि आज गरीबों के हक का पैसा सीधे उनके खातों में पहुंचता है। देश के विकास के लिए वंचित वर्ग के लोगों का आर्थिक विकास आवश्यक है। इस दौरान देश के वंचित वर्गों के एक लाख उद्यमियों के लिए ऋण सहायता स्वीकृत किया गया। नगरीय क्षेत्र कोरबा के प्रियदर्शिनी इंदिरा स्टेडियम स्थित राजीव गांधी ओडोटोरियम में प्रदेश सरकार के वाणिज्य, उद्योग व श्रम मंत्री श्री लखन लाल देवांगन के मुख्य आतिथ्य में वंचितों वर्गों के लिए आउटरीच कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि पीएम सूरज पोर्टल के माध्यम से जरूरतमंद और गरीब श्रमिकों को विभिन्न प्रकार की योजनाओं जानकारी के साथ ही योजनाओं का लाभ उठाकर आत्मनिर्भर बनने का अवसर मिलेगा।

संक्षिप्त समाचार

वृद्ध की संदिग्ध परिस्थिति में मौत, हत्या की आशंका

कोरबा(विश्व परिवार)। समीपस्थ ग्राम भालूसटका में एक वृद्ध की संदिग्ध परिस्थिति में मौत हो गई। सूचना मिलने पर पहुंची पुलिस विवेचना कर रही है। प्रथम दृष्टया मामला हत्या का बताया जा रहा है। जानकारी के अनुसार सिविल लाइन थाना रामपुर पुलिस अंतर्गत ग्राम भालूसटका में यह घटना दोपहर की बताई जा रही है, पर पुलिस को घटना की सूचना देर शाम को मिली। पुलिस अधीक्षक सिद्धार्थ तिवारी समेत अन्य पुलिस अधिकारी व कर्मी स्थल पर पहुंच गए। बताया जा रहा है कि ग्राम भालूसटका में श्यामलाल 60 वर्ष अपनी पत्नी के साथ निवासरत था। श्यामलाल की लाश घर के बाहर पड़ी हुई मिली है। उसके सिर से अत्यधिक रक्त (खून) बहा है। इससे मामला संदेहास्पद हो गया है। पुलिस अधीक्षक सिद्धार्थ तिवारी ने बताया कि मामले की जांच की जा रही है। डाग स्क्वायड व फरेंसिक एक्सपर्ट की टीम भी मौके पर पहुंच कर जांच कर रही है। प्रथम दृष्टया मामला हत्या का है। वैधानिक कार्रवाई के बाद शव को पोस्टमार्टम के लिए मर्च्यूरी में रखा दिया गया है। गुरुवार को पोस्टमार्टम कराया जाएगा। पीएम रिपोर्ट मिलने व पूछताछ के बाद ही मौत की वजह स्पष्ट हो पाएगी। फिलहाल पुलिस अपने स्तर पर जांच करने के साथ ही मृतक के स्वजनों से भी पूछताछ कर रही है।

आपसी रंजिश के चलते कांग्रेस नेता को ट्रैक्टर से कुचला

बलौदाबाजार(विश्व परिवार)। बलौदाबाजार से एक बड़ी खबर प्रकाश में आई है। जहां एक वरिष्ठ कांग्रेस नेता की ट्रैक्टर से कुचल कर हत्या कर दी गई है। बताया जा रहा है कि आपसी रंजिश के चलते गांव के युवक ने कांग्रेस नेता की हत्या कर दी है। मिली जानकारी के अनुसार दया राम जायसवाल पूर्व जनपद सदस्य थे। हालांकि पुलिस ने आरोपी युवक को गिरफ्तार कर लिया है। यह कसडोल थाना क्षेत्र का मामला है। जानकारी मिलने के बाद ही पूरे क्षेत्र में सनसनी है। पूरे मामले की जांच में पुलिस जुटी हुई है।

ट्रैक्टर से कुचलकर हत्या

बलौदाबाजार(विश्व परिवार)। बलौदाबाजार में आपसी रंजिश के चलते एक कांग्रेसी नेता की ट्रैक्टर से रौंद कर हत्या कर दी गई है। हत्या को गांव के ही एक युवक ने अंजाम दिया है। सूत्रों से मिली जानकारी के अनुसार दया राम जायसवाल पूर्व जनपद सदस्य थे। हालाकि पुलिस ने आरोपी युवक को गिरफ्तार कर लिया है। यह कसडोल थाना क्षेत्र का मामला है। जानकारी मिलने के बाद ही पूरे क्षेत्र में सनसनी है। पूरे मामले की जांच में पुलिस जुटी हुई है।

सर्वमंगला चौराहे पर बढ़ते वायु प्रदूषण को लेकर प्रदर्शन

कोरबा(विश्व परिवार)। बढ़ते हुए प्रदूषण के कारण हर तरफ समस्याएं पैदा हो गई हैं। सर्वमंगला चौराहे पर इस मसले को लेकर श्रम कामगार मंडल के द्वारा धरना प्रदर्शन आज से शुरू किया गया। काफी संख्या में क्षेत्र के लोग यहां मौजूद रहे। लोगों को इस बात की शिकायत है कि बड़ी संख्या में चलने वाले भारी वाहनों के कारण वायु प्रदूषण की समस्या बढ़ गई है। बार-बार ध्यान आकर्षित करने के बावजूद न तो फेरलेन सडक का काम पूरा किया गया और न ही भारी वाहनों से उत्पन्न कोल डस्ट की समस्या को नियंत्रित करने के लिए पानी का छिडकाव किया जा रहा है। इन सबके चलते जन स्वास्थ्य पर बुरा असर पड़ रहा है और लोगों की जेब कट रही है। श्रम कामगार मंडल ने इस मुद्दे को लेकर सर्वमंगला नगर चौराहे पर प्रदर्शन किया। विषय से संबंधित तख्तियां लेकर लोग यहां बैठे और नारेबाजी की। उनका कहना है कि एसईसीएल और प्रशासन पूरे मामले में उदासीन बना हुआ है।

कार से 23 किलोग्राम गांजा के साथ पकड़ाये पति-पत्नी

जशपुर(विश्व परिवार)। जिले में अवैध नशा के कारोबार के खिलाफ चलाये जा रहे विशेष अभियान के तहत गुरूवार कोल्हेनझरिया चौकी क्षेत्र में 23 किलो गांजा के साथ पति-पत्नी को गिरफ्तार किया गया। दंपती कार से गांजा की तस्करी कर रहा था। पुलिस ने गांजा और कार को भी जब्त कर लिया है। बता दें कि पुलिस अधीक्षक शशि मोहन सिंह के निर्देशन में जिले में मादक पदार्थ की बिक्री पर अंकुश लगाने विशेष अभियान चलाया जा रहा है। इस अभियान के तहत जिले के सभी थाना चौकी में बेरिकेड्स लगाकर वाहनों की जांच की जा रही है। इसी दौरान गुरूवार को ओड़िशा से छत्तीसगढ़ के रास्ते यूपी नम्बर की कार से 23 किलो गांजा लेकर आने की खबर मिली जिस पर कोल्हेन झरिया पुलिस ने गांजा तस्करी की सूचना मिलने पर नाकेबंदी कर कार से 23 किलो गांजा के साथ पति-पत्नी को गिरफ्तार किया।

दैनिक
विश्व परिवार

विचार-पक्ष

रायपुर शनिवार 16 मार्च 2024

www.dainikvishwapariwar.com
vishwapariwarraipur@gmail.com

संपादकीय

श्रीनगर में पीएम नरेन्द्र मोदी ने बताई सच्चाई!

श्रुति व्यास

संविधान के अनुच्छेद 370 की जद से जम्मू-कश्मीर को बाहर किए जाने के बाद प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी 7 मार्च को पहली बार कश्मीर घाटी पहुंचे। प्रधानमंत्री बतौर दूसरी पारी में यह उनकी पहली कश्मीर यात्रा थी। दूसरी बार सत्ता में आने के तुरंत बाद उनकी सरकार ने उस संवैधानिक प्रावधान को जम्मू-कश्मीर से हटाने की कवायद शुरू कर दी थी, जो राज्य को पीछे धकेल रहा था, उसकी प्रगति की राह में रोड़ा था। गत 7 मार्च को पहली बार उन्होंने कश्मीर से हमें यह याद दिलाया कि अनुच्छेद 370 कश्मीर का गला घोंट रहा था। अगर राजनैतिक नज़रिए से देखा जाए तो यह याद दिलाने की लिए कश्मीर से बेहतर जगह कौन-सी हो सकती थी? यह एक महत्वपूर्ण यात्रा थी जिसमें मोदी ने कई सन्देश दिए, जुमलेबाजी भी की और अपने राजनैतिक कौशल का प्रदर्शन भी किया। उन्होंने एक बार फिर याद दिलाया कि जो नैरेटिव वे बुनते हैं, उससे ज़रा भी इधर-उधर नहीं होते। कश्मीर को हमेशा से दुहा और बेचा जाता रहा है ङ्क राजनैतिक सन्दर्भ में, सामाजिक सन्दर्भ में, भावनात्मक और सांस्कृतिक दृष्टि से, धर्म और पहचान की नाम पर और अपनी-अपनी आपबीती के ज़रिये। वहां के रहवासियों ङ्क मुसलमानों और पंडितों ङ्क दोनों ने उसे बेचा, अपने-अपने नैरेटिव के ज़रिये। और दोनों के नैरेटिव में दर्द है और दोनों के नैरेटिव दिल दहलाने वाले हैं। फिर कलाकारों, फोटोग्राफरों और फिल्म निर्माताओं ने कश्मीर को बेचा। उसकी कुदरती खूबसूरती और खूनखराबा, वहां की हसीन वादियाँ और हवा में तैरता डर, शांत माहौल को चीरती आहें और गुस्सा ङ्क इन सबको अगणित बार दुहा और बेचा गया। अनुच्छेद 370 और 35ए के विशेष प्रावधानों से कश्मीरियों को कोई विशेष लाभ नहीं मिला ङ्क न आज़ादी, न गौरव, न स्वायत्ता और ना शांति और ना ही किसी लाभ की गारंटी। कश्मीर को बेच कर सबने फायदा कमाया और सबसे बड़े लाभार्थी थे राजनेता। जब राजनीति बांटने लगती है, ज़हर फैलाने लगती है तब सबसे ज्यादा कष्ट भोगते हैं आम लोग। कश्मीर और उसके लोगों ङ्क विशेषकर उन मुसलमानों, हिन्दुओं, सिक्खों और ईसाईयों ने जो अपने घर छोड़ कर नहीं गए और जो उथलपुथल और नीरवता दोनों को झेलते हुए वहीं रहे आए ङ्क ने बहुत कुछ भोगा है और बहुत लम्बे समय तक भोगा है। शांति के दिन छोटे और कम रहे और गड़बड़ियों और बेचैनी के रातें लम्बी और ज्यादा रहीं। बल्कि बेचैनी, असंतोष और गुस्सा कश्मीर की पहचान बन गए। सन 2019 के चुनाव में भी कश्मीर को एक राजनैतिक औजार के रूप में इस्तेमाल किया गया। कश्मीर पर लिखा गया, कश्मीर पर बोला गया, कश्मीर पर फिल्में बनीं। इन सबमें जो नैरेटिव बनाए गए उनमें भी और राजनैतिक प्रचार में भी, हिंसा छाई रही। और हिंसा ही कश्मीर का नैरेटिव बन गई। कश्मीर विलाप और विषाद की घाटी बन गई। मगर 5 अगस्त, 2019 को इस सब पर पूर्ण विराम लगा दिया गया। नतीजा यह कि कईयों के लिए नरेन्द्र मोदी एक ऐसे व्यक्ति बन गए जो निर्णय लेना जानते है और जो निर्णय लेते है। वे एक तानाशाह नेता लगते हैं, उनके व्यवहार में दादागिरी का पुट है, नीतियों के निर्माण और उन पर अमल का उनका तरीका गैर-प्रजातान्त्रिक प्रतीत होता है और आने वाली पीढ़ियों को कदाचित उनकी विरासत उतनी शानदार नहीं लगेगी जितनी हमें अभी लगती है। लेकिन कश्मीर के मामले में उन्होंने जो किया उसके लिए वे हमेशा याद रखे जाएंगे और 370 एक ऐसा अंक होगा जो भुलाया नहीं जा सकेगा। कश्मीर की बेड़ियाँ काट दी गईं हैं। दर्द और दहशत के नैरेटिव के सौदागरों को नये नैरेटिव ढूँढने पड़ रहे हैं। इनमें अब प्रजातंत्र के अभाव का मसला जुड़ गया है। सन 2019 के बाद कश्मीर की मोदी की इस पहली यात्रा के राजनैतिक निहितार्थ भी हैं। आम चुनाव के पहले मोदी ने बख्शी स्टेडियम के मंच से अपना नैरेटिव देश के सामने पेश किया। वसंत की उस सुबह हवा में ठंडक तो थी मगर आसमान साफ़ था और धूप भली लग रही थी। प्रधानमंत्री ने खुलकर अपनी बात रखी। उन्होंने कहा कि भाजपा की लिए 370 केवल एक नंबर नहीं है बल्कि एक गंभीर सोच का प्रतीक है। वे उस नैरेटिव से ज़रा भी इधर-उधर नहीं हुए, जो नैरेटिव उन्हें ताकत देता है। चुनाव की पूर्वसंध्या पर कश्मीर के दिल से उन्होंने दरअसल कश्मीर को नहीं बल्कि भारत को संबोधित किया। उन्होंने याद दिलाया कि 2019 में उन्होंने कश्मीर के बारे में एक ऐतिहसिक और साहसिक कदम उठाया था। उन्होंने भारत को उन दीवारों की याद दिलाई जो कश्मीर और शेष भारत के बीच तामीर कर दी गईं थीं। उन्होंने कश्मीर के पुराने राजनीतिज्ञों की गन्दी करतूतों की याद दिलाई जिन्होंने कश्मीर को इंसानियत, जम्हूरियत और कश्मीरियत से जुदा कर दिया था। उन्होंने भारत को याद दिलाया कि उसी वेदना में से कमल खिला है। उन्होंने भारत को याद दिलाया कि कश्मीर को अब एक नई राजनीति आकार दे रही है जो कश्मीर के लोगों को देश की अन्य हिस्सों के लोगों से जोड़ रही है। उन्होंने भारत को याद दिलाया कि 'विकसित भारत' के उनके मिशन का कश्मीर एक आवश्यक हिस्सा है और वह उसमें एक आवश्यक भूमिका निभाएगा। इसके पहले कि मैं नरेन्द्र मोदी की 'नई राजनीति' के पीछे की राजनीति की बात करूं और उनके नैरेटिव पर आऊं, थोड़ी चर्चा नए जम्मू-कश्मीर की। हो सकता है कि आप हर चीज़ में कुछ न कुछ नुक्स ढूँढने में माहिर हों, हो सकता है कि आप मोदी और उनके सरकार के अंध विरोधी हों, मगर फिर भी आप कश्मीर में आये बदलावों को नज़रअंदाज़ नहीं कर सकते। निसंदेह कुछ कश्मीरी एक ही सोच से चिपके रहना चाहते हैं। वहां के कुछ बुद्धिजीवियों की लिए कश्मीर की 'पहचान' (जिसकी परिभाषा बहुत साफ़ नहीं है) सबसे अहम, सबसे ऊपर है। फिर चाहे इसका मतलब सतत लूट, पहचान का राजनीतिकरण, उसे अन्य पहचानों से जुदा करना, लोगों को कट्टर बनाना, उनका दमन करना और कश्मीर की भूमि और उसकी पहचान को अतीत में धकेलना ही क्यों न हो। इसलिए यह ज़रूरी है कि हम द्वेष के लेंस लगे चश्मे उतार कर जम्मू-कश्मीर और विशेषकर घाटी में हुई प्रगति को देखें। कश्मीर को बहुत समय बाद विकास का स्वाद चखने को मिल रहा है, वह प्रगति और शांति, ग्लैमर और चमक-दमक का मज़ा ले रहा है। कश्मीर का मतलब अब हिंसा नहीं है। वहां शांति है। अल्पसंख्यकों की हत्याएं और सेना पर हमले कब-जब इस शांति को भंग करते हैं।

चुनाव से ठीक पहले

सीएए को सिर्फ सीमित चुनावी नजरिए से देखना उचित नहीं होगा। बल्कि यह भाजपा की वैचारिक परियोजना का एक महत्त्वपूर्ण हिस्सा है। इसके जरिए भारतीय नागरिकता को तय करने वाली कसौटियों में अब धर्म एक पहलू बन गया है। केंद्र सरकार ने नागरिकता संशोधन कानून (सीएए) को लागू कर दिया है। इसके लिए जरूरी नियम जारी कर दिए गए हैँ। जाहिर है, ये कदम 18वें आम चुनाव से ठीक पहले उठाया गया है। खबरों के मुताबिक हफ्ते भर के अंदर चुनाव कार्यक्रम की घोषणा होने वाली है। उस पृष्ठभूमि में इसे सरकार और सत्ताधारी भारतीय जनता पार्टी के एक चुनावी कदम के रूप में देखा जा सकता है। महजबी आधार पर ध्रुवीकरण भाजपा की एक प्रमुख राजनीतिक ताकत है। अगर चार साल पहले की घटनाओं पर- जब सीएए पारित हुआ था- गौर करें, तो तब इस कानून के खिलाफ एक बड़ा आंदोलन हुआ था, जिसमें मुस्लिम समुदाय ने बढ़-चढ़ कर हिस्सा लिया। उसी सिलसिले में दिल्ली में दंगा भी हुआ। इससे सांप्रदायिक ध्रुवीकरण को हवा मिली थी। कानून लागू होने के साथ उन सारी घटनाएं की याद ताजा हो सकती है। इसके अलावा अगर फिर से इस कानून का विरोध हुआ, तो ऐसा माहौल और अधिक गरमा सकता है। बहरहाल, इस कानून को सिर्फ इस सीमित नजरिए से देखना उचित नहीं होगा। बल्कि यह भाजपा की वैचारिक परियोजना का एक महत्त्वपूर्ण हिस्सा है। इसके जरिए भारतीय नागरिकता को तय करने वाली कसौटियों में अब धर्म एक पहलू बन गया है। इस कानून के तहत अफगानिस्तान, पाकिस्तान और बांग्लादेश से भारत आने वाले गैर-मुस्लिम व्यक्ति भारतीय नागरिकता के लिए अर्जी दे सकेंगे। इस तरह मजहब नागरिकता तय करने की एक कसौटी बन जाएगा। समझा जा सकता है कि यही व्यवस्था करना इस कानून का मुख्य मकसद है। वरना, अगर उद्देश्य पड़ोसी देशों में उत्पीड़ित व्यक्तियों को राहत देना होता, तो फिर इस कानून के दायरे में श्रीलंका और म्यांमार को भी शामिल किया जाता- जहां अधिकतर उत्पीड़ित व्यक्ति हिंदू धर्म को मानने वाले होते हैं। जाहिर है, कानून उत्पीड़ित शरणार्थियों को राहत देने के लिए नहीं, बल्कि भारतीय राज्य के मूलभूत स्वरूप में परिवर्तन के लिए बनाया गया है। भाजपा का हमेशा से यह एक वैचारिक उद्देश्य रहा है। इस बीच चूंकि सुप्रीम कोर्ट ने इसके खिलाफ दायरे याचिकाओं को लटका रखा है।

विचार

कितना कुछ जाहिर होगा?

आशंका जताई गई है कि सुप्रीम कोर्ट के आदेश में ही ऐसी बात शामिल है, जिससे कई महत्त्वपूर्ण सूचनाएं जाहिर होने से रह जाएंगी। फिलहाल, यह नहीं मालूम होगा कि किस व्यक्ति या उद्योग घराने ने किस पार्टी को कब और कितना चंदा दिया। सुप्रीम कोर्ट ने आम चुनाव तक इलेक्ट्रॉल बॉन्ड्स संबंधित विवरण पर परदा डालने की भारतीय स्टेट बैंक की कोशिश नाकाम कर दी। कोर्ट के आदेश के मुताबिक अब 15 मार्च को स्टेट बैंक से मिली जानकारियां निर्वाचन आयोग को अपनी वेबसाइट पर प्रकाशित करनी होंगी। इससे देश को पता चलेगा कि इन बॉन्ड्स के माध्यम से किन लोगों या उद्योग घरानों ने राजनीतिक चंदा दिया। किस राजनीतिक दल को कितना चंदा मिला, यह ब्योरा भी आयोग की वेबसाइट पर आ जाएगा। मगर यह सूचना तो पहले से सार्वजनिक दायरे में उपलब्ध है। आशंका जताई गई है कि सुप्रीम कोर्ट के आदेश में ही ऐसी बात शामिल है, जिससे कई महत्त्वपूर्ण सूचनाएं जाहिर होने से रह जाएंगी। फिलहाल, यह नहीं मालूम होगा कि किस व्यक्ति या उद्योग घराने ने किस पार्टी को कब और कितना चंदा दिया। अगर ये जानकारियां सामने आतीं, तो सिविल सोसायटी के लोग यह आकलन करने की स्थिति में होते कि केंद्र और विभिन्न राज्यों में सत्ताधारी दलों को किन घरानों से कितना पैसा मिला। फिर वे यह पड़ताल करते कि क्या संबंधित सरकार ने से फैसला लेते वक्त उन खास घरानों के साथ पक्षपात किया। यानी क्या उन घरानों को कोई अनुचित लाभ पहुंचाया गया। इससे वह पारदर्शिता आती, जिससे भविष्य में धनी-मानी तबकों और राजनीतिक दलों के बीच होने वाली प्रत्यक्ष लेन-देन पर रोक लगती। मगर, स्टेट बैंक ने कह दिया कि यह मिलान करने में उसे बहुत वक्त लगेगा। इस बीच उसके पास चंदा दाताओं और चंदा प्राप्तकर्ताओं की सूची है, जिसे वह सौंप सकता है। इस पर सुप्रीम कोर्ट ने टिप्पणी कर दी कि उसने कभी वह ब्योरा देने को नहीं कहा था, जिसके लिए स्टेट बैंक समय मांग रहा है। कोर्ट के इस नजरिए से उन बहुत से लोगों को निराशा हुई है, जो चुनावी चंदे में पूरी जवाबदेही के लिए प्रयासरत रहे हैं। इस तरह उनके नजरिए से देखा जाए, तो इलेक्ट्रॉल बॉन्ड्स के मामले में सुप्रीम कोर्ट का फैसला पारदर्शिता की आंशिक जीत ही है। अब देश के मतदाताओं को अगले आम चुनाव में अपना निर्णय बिना उपरोक्त महत्त्वपूर्ण जानकारी के ही तय करना होगा।

क्या आप अधिकार से वंचित रहना चाहते हैं

अह्लादी कृष्णस्वामी अय्यर

महोदय, इस अनुच्छेद पर, जिस रूप में वह है, दो आपत्तियां उठाई गई हैं। एक भावना पर आश्रित है और दूसरी, किसी अन्य राज्य के सदन के उन विशेषाधिकारों के उल्लेख करने के औचित्य पर, जिनसे सामान्य नागरिक तथा यहां के संसद सदस्य संभवत: परिचित नहीं हैं ...यह सबको विदित है कि सबसे अधिक विस्तृत विशेषाधिकारों का प्रयोग इंग्लैंड के संसद सदस्यों द्वारा किया जाता है। अभी निर्मित भारतीय विधान-मंडल के वर्तमान विशेषाधिकारों के समान ही यदि विशेषाधिकार रखे जाएं, तो फल यह होगा कि सदन की अवज्ञा करने पर भी किसी व्यक्ति को दंड नहीं दिया जा सकेगा। ...ऑस्ट्रेलिया के संयुक्त संघ अधिनियम में तथा कनाडा के अधिनियम में विस्तृत पदावली के कारण, दोनों स्थानों की संसद को वे ही अधिकार हैं, जो इंग्लैंड की संसद को प्राप्त हैं, अत: उनको अवज्ञा के लिए दंड देने का अधिकार है। क्या आप स्वयं को इस अधिकार से वंचित रखना चाहते हैं? प्रश्न तो यह है। मैं अब दूसरी आपत्ति पर विचार करूंगा। यदि आपके पास संक्षिप्त रूप में समस्त विशेषाधिकारों की तालिका बनाने का समय तथा अवकाश है, तो यह तो बहुत ही अच्छा होगा। मुझे विश्वास है कि इस सभा के विधायी पक्ष की ओर अध्यक्ष द्वारा निर्मित समिति ने तब तक (विशेषाधिकार) तालिका बनाना बहुत ही कठिन समझा, ...इस प्रयोजन के लिए उनके पास पर्याप्त समय नहीं था, अत: समिति इस विषय में अध्यक्ष को कोई प्रभावी मंत्रणा न दे सकी। ...ऐसे हालात में मैं निवेदन करता हूं कि मर्यादा के विरुद्ध होने की कोई बात नहीं है। ...हिंदी के साथ-साथ कुछ समय के लिए हम अपना विधान अंग्रेजी में रख रहे हैं, तो इंग्लैंड के विशेषाधिकारों के उल्लेख पर आपत्ति क्यों? दूसरी बात यह है कि विशेषाधिकारों की सूची बनाने के लिए उचित तंत्र की स्थापना करने में संसद के आगे कोई रुकावट नहीं है। इस अनुच्छेद में इस बात के लिए विस्तृत क्षेत्र हैं। अन्य बातों में संसद-सदस्यों के विशेषाधिकार और विमुक्तियां वही होंगी, जो संसद समय-समय पर विधि द्वारा परिभाषित करेगी और वे जब तक परिभाषित नहीं की जातीं, तब तक वे ही होंगी, जो इस संविधान के प्रारंभ पर यूनाइटेड किंगडम की संसद के हाउस ऑफ कॉमन्स के सदस्यों को प्राप्त हैं। अनुच्छेद में बस यही कहा गया है। यह आपके स्वविवेक में किसी रूप से रुकावट नहीं डालता है। आप विशेषाधिकारों को बढ़ा सकते हैं, उनको घटा सकते हैं तथा अन्य प्रकार के विशेषाधिकार रख सकते हैं। ग्रेट ब्रिटेन की संसद का उल्लेख किए बिना आप स्वयं अपने विशेषाधिकार तय कर सकते हैं। ...केवल अस्थायी रूप में हाउस ऑफ कॉमन्स के विशेषाधिकारों को इस सदन पर लागू किया गया है। मर्यादा के विरुद्ध होने से कोसों दूर रहकर इस अनुच्छेद में व्यवस्था की गई है...। अत: खंड (3) के शब्दों में कोई बात मर्यादा के विरुद्ध नहीं है। इस प्रथा का अनुसरण लाभदायक रूप में ऑस्ट्रेलिया, कनाडा तथा अन्य देशों में हुआ है और उससे अभिव्यक्ति की पूर्ण स्वतंत्रता तथा हरेक प्रकार से सदन को सर्वशक्ति प्राप्त हो गई है। जब हम अंग्रेजी भाषा ग्रहण कर रहे हैं तथा जब हम उन वैधानिक पदों का प्रयोग कर रहे हैं, जो इंग्लैंड में प्रचलित हैं, तो हमें इस बात को भी ग्रहण करने से नहीं कतराना चाहिए। आप यह कह रहे हैं कि यदि हम यह कहें कि विशेषाधिकार वे ही होंगे, जो हाउस ऑफ कॉमन्स के सदस्यों को प्राप्त हैं, तो इसमें गुलामी की बू है, यह दासत्व का चिह्न है। पर यह बात कोसों दूर है। आज इंग्लैंड की संसद ग्रेट ब्रिटेन, अधिराज्यों तथा अन्य राज्यों पर आधिपत्य जमाए हुए है। यह कहना कि आप उतने ही महान हैं, जितना कि ग्रेट ब्रिटेन, तो यह कोई निम्न भावना का संकेत नहीं है, बल्कि अपने आत्मसम्मान की पुष्टि करना है तथा अपनी संसद की सर्वशक्ति की भी पुष्टि करना है। अत: श्रीमान, मैं निवेदन करता हूं कि ब्रिटिश पार्लियामेंट के उल्लेख पर जो आपत्ति की गई है, उसमें बिल्कुल बल नहीं है। इन हालात में यह अनुच्छेद ब्रिटेन के प्रति दासत्व, गुलामी तथा भृत्यभाव की भावना के अधीन निर्माण किए जाने से कोसों दूर रहकर आत्म-पुष्टि की भावना से निर्मित किया गया है और इस भावना की पुष्टि के लिए बनाया गया है कि हमारा देश तथा हमारी संसद उतनी ही महान है, जितनी ग्रेट ब्रिटेन की संसद।दूसरी बात यह है कि विशेषाधिकारों की सूची बनाने के लिए उचित तंत्र की स्थापना करने में संसद के आगे कोई रुकावट नहीं है। इस अनुच्छेद में इस बात के लिए विस्तृत क्षेत्र हैं। अन्य बातों में संसद-सदस्यों के विशेषाधिकार और विमुक्तियां वही होंगी, जो संसद समय-समय पर विधि द्वारा परिभाषित करेगी और वे जब तक परिभाषित नहीं की जातीं, तब तक वे ही होंगी, जो इस संविधान के प्रारंभ पर यूनाइटेड किंगडम की संसद के हाउस ऑफ कॉमन्स के सदस्यों को प्राप्त हैं। अनुच्छेद में बस यही कहा गया है। यह आपके स्वविवेक में किसी रूप से रुकावट नहीं डालता है। आप विशेषाधिकारों को बढ़ा सकते हैं, उनको घटा सकते हैं तथा अन्य प्रकार के विशेषाधिकार रख सकते हैं। ग्रेट ब्रिटेन की संसद का उल्लेख किए बिना आप स्वयं अपने विशेषाधिकार तय कर सकते हैं। ...केवल अस्थायी रूप में हाउस ऑफ कॉमन्स के विशेषाधिकारों को इस सदन पर लागू किया गया है। मर्यादा के विरुद्ध होने से कोसों दूर रहकर इस अनुच्छेद में व्यवस्था की गई है...। अत: खंड (3) के शब्दों में कोई बात मर्यादा के विरुद्ध नहीं है। इस प्रथा का अनुसरण लाभदायक रूप में ऑस्ट्रेलिया, कनाडा तथा अन्य देशों में हुआ है और उससे अभिव्यक्ति की पूर्ण स्वतंत्रता तथा हरेक प्रकार से सदन को सर्वशक्ति प्राप्त हो गई है।

इस समय भला क्यों सीएए?

केंद्र सरकार ने नागरिकता संशोधन कानून यानी सीएए लागू करने के लिए चार साल से ज्यादा समय तक इंतजार किया। इसलिए यह तो नहीं कहा जा सकता है कि सत्तारूढ़ भाजपा को इसके असर का अंदाजा नहीं है। साढ़े चार साल के बाद अगर किसी कानून को अमल में लाया जा रहा है तो निश्चित रूप से उसके हर पहलू पर विचार किया गया होगा। सरकार के स्तर पर इसे लागू करने की प्रशासनिक व कानूनी चुनौतियों पर विचार किया गया होगा तो भाजपा के स्तर पर राजनीतिक चुनौतियों का आकलन किया गया होगा। जब तक भाजपा को इस पर अमल करने से फायदे की बजाय नुकसान ज्यादा दिखता रहा तब तक इसे रोका गया। अब इसे लागू किया जा रहा है तो इसका मतलब है कि भाजपा को नुकसान कम और फायदा ज्यादा दिख रहा है। यह भी कह सकते हैं कि इसे लागू करने के लिए हालात अभी अनुकूल दिख रहे हैं। लेकिन क्या अनुकूल हालात में लागू करने से इस कानून की चुनौतियां कम हो जाएंगी? चूंकि यह कानून लोकसभा चुनाव से ऐन पहले लागू हो रहा है इसलिए सबसे पहले इसके राजनीतिक पहलुओं पर ही विचार की जरुरत है। ध्यान रहे भाजपा की केंद्र सरकार ने दिसंबर 2019 में नागरिकता कानून में संशोधन किया था। अगर विशुद्ध राजनीतिक नजरिए से देखें तो इस पर अमल रोकने का कारण 2021 के मई में होने वाले विधानसभा चुनाव थे। मई 2021 में एक ही साथ असम और पश्चिम बंगाल दोनों के चुनाव होने वाले थे। अगर पश्चिम बंगाल का चुनाव अलग हो रहा होता तो सरकार इसे लागू कर सकती थी। लेकिन सरकार और भाजपा दोनों को अंदाजा था कि असम के चुनाव में इसका नुकसान हो सकता है। असम में इस कानून के खिलाफ ही लुरिनजोत गोगोई और अन्य लोगों ने मिल कर असम जातीय परिषद का गठन किया था और इसके खिलाफ आंदोलन शुरू किया था। अस्सी के दशक में हुए असम समझौते को लेकर बेहद संवेदनशील कई जातीय समूहों ने इसका विरोध किया।

क्या हमेशा के लिए बदल जाएंगे चुनाव

हरजिंदर

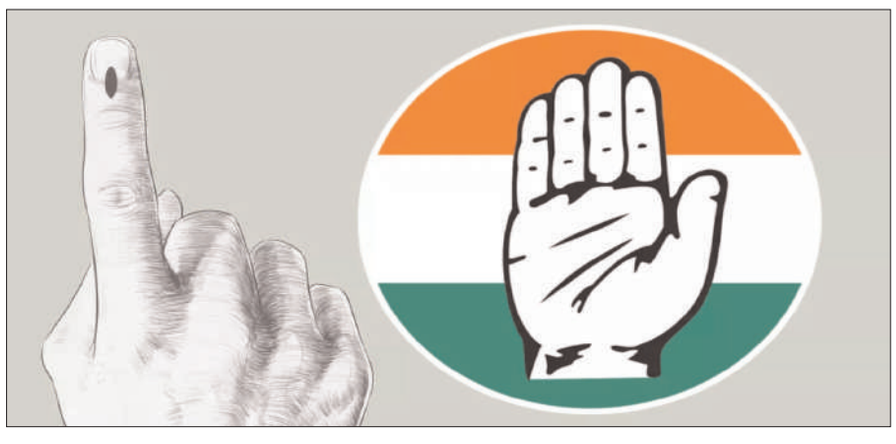

नवंबर महीने की शुरुआत में एक ई-मेल इनबॉक्स में आया। यह मेल एक वेबसाइट का था, जो एआई वॉयस जेनरेटर है, यानी कृत्रिम बुद्धि से तरह-तरह की आवाजें तैयार करने वाली वेबसाइट। इस मेल में दो लिंक थे- एक वेबसाइट का और दूसरे में नाम लिखा था प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का। जब इस दूसरे लिंक को क्लिक किया, तो वहां पंजाबी का एक गाना मिला- तू मेरी हीर लगदी...। 45 सेकंड के इस गाने की खासियत यह थी कि इसे प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की हूबहू आवाज में तैयार किया गया था। यह दरअसल एक नमूना था यह बताने के लिए कि वह वेबसाइट क्या कमाल कर सकती है? दूसरे लिंक को क्लिक करने पर जब हम वेबसाइट पर पहुंचे, तो वहां बताया गया कि आप 399 रुपये का सब्सक्रिप्शन लेकर किसी की आवाज में कुछ भी रिकॉर्ड कर सकते हैं। कोई भी बात किसी के मुंह से कहलवा सकते हैं। अगर आपको लगता है कि 399 रुपये का यह सब्सक्रिप्शन ज्यादा है, तो इंटरनेट पर यही काम कराने के मुफ्त विकल्प भी मौजूद हैं। अभी चंद रोज पहले जब पाकिस्तान के चुनाव में इमरान खान की पाकिस्तान तहरीक-ए-इंसाफ पार्टी सबसे बड़ा दल बनकर उभरी, तो पार्टी ने इमरान खान की आवाज में एक धन्यवाद संदेश जारी किया। इमरान खान जेल में बंद थे और वहां इस तरह की किसी रिकॉर्डिंग की सुविधा उनके पास नहीं थी। साफ है, वह कृत्रिम बुद्धिमत्ता, यानी एआई से तैयार आवाज थी, जो बिल्कुल उसी तरह की थी, जैसी इमरान खान की आवाज है। 2024 को चुनावों का साल कहा जा रहा है। इस साल दुनिया के कई बड़े और महत्वपूर्ण देशों में चुनाव होने हैं। पाकिस्तान का चुनाव इस साल का पहला महत्वपूर्ण चुनाव था और इस चुनाव में ही एआई ने दस्तक दे दी। ऐसा नहीं है कि एआई का इस्तेमाल इसके पहले के चुनावों में नहीं हुआ है। अगर हम भारत का ही उदाहरण लें, तो दिल्ली विधानसभा के पिछले चुनाव में इसका इस्तेमाल सीमित स्तर पर हुआ था। एमआईटी टेक्नोलॉजी रिव्यू की एक रिपोर्ट के अनुसार, भाजपा के तत्कालीन प्रदेश अध्यक्ष मनोज तिवारी की बीजेपी को वोट देने की अपील के कुछ वीडियो जारी हुए थे। जो मूल वीडियो रिकॉर्ड हुआ, उसमें तो वह हिंदी में दिल्ली के मतदाताओं से वोट देने की अपील करते हैं। एआई की एक वीडियो तकनीक डीपफेक से इसके कई संस्करण तैयार हुए, जिनमें किसी में वह हरियाणवी में वोट देने की अपील कर रहे हैं, तो किसी वीडियो में भोजपुरी में और किसी में पंजाबी में। ये वीडियो इतनी अच्छी तरह तैयार किए गए थे कि किसी में कोई लब-ओ-लहजा गलत नहीं लग रहा था। एआई का इस तरह का इस्तेमाल आपत्तिजनक नहीं है। समस्या वास्तव में इसके आपत्तिजनक इस्तेमाल को लेकर ही है, जिसके संकेत दिखने लग गए हैं। इसी साल के अंत में अमेरिका में भी राष्ट्रपति चुनाव हैं। पिछले दिनों वहां राष्ट्रपति जो बाइडन का एक वीडियो हर जगह दिखाई देने लगा, जिसमें वह कह रहे थे कि अगर डोनाल्ड ट्रंप चुनाव लड़ते हैं, तो लोगों को वोट ही नहीं डालने चाहिए। जाहिर है, यह फर्जी वीडियो था, जो डीपफेक से तैयार किया गया था। इस नए रुझान को लेकर पूरी दुनिया चिंतित है। खुद प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी डीपफेक को लेकर देश और अपनी पार्टी के लोगों को एक से अधिक बार आगाह कर चुके हैं। ऐसा नहीं है कि झूठ हमारी राजनीति में इससे पहले नहीं था। यह हमेशा से रहा है और सोशल मीडिया के आगमन के बाद पिछले एक दशक में फेक न्यूज के रूप में इसने बहुत उथल-पुथल मचाई है। इसने तनाव पैदा किए हैं, दंगे करवाए हैं और यह मॉब लिंचिंग का कारण भी बनी है। इसने अतीत की महान हस्तियों पर कीचड़ उछाला है, प्रतिष्ठित महिलाओं का चरित्र हनन किया है और तमाम तरह के झूठे इतिहास लोगों के दिमागों में ठूंस दिए हैं। फेक न्यूज के इन तौर-तरीकों ने हमारे चुनावों के नैरेटिव बदल डाले हैं। मगर एआई इससे कहीं आगे की चीज है। फेक न्यूज के झूठ की देर-सबेर कलई खुल ही जाती थी, लेकिन एआई के झूठ से पार पाना शायद इतना आसान नहीं होगा। एआई झूठ को तैयार करने, परोसने का काम इतनी कुशलता से कर सकती है कि किसी को भी इस पर संदेह न हो सके। एआई की कुशलता इतनी ज्यादा है कि वह एक ही झूठ अलग-अलग तरह के लोगों के सामने अलग-अलग तरीके से पेश कर सकती है। सोशल मीडिया के फेक न्यूज वाले जमाने में हमने देखा है कि किस तरह फोटोशॉप के जरिये तस्वीरों से छेड़छाड़ करके उनको मनमाफिक फसाने में बदला जाता है। हालांकि, फोटोशॉप से इसे अंजाम देने के लिए जो कौशल चाहिए, वह हर किसी के पास नहीं होता। एआई में ऐसे कौशल की जरूरत भी खत्म हो गई है। ऐसी बहुत सी वेबसाइट हैं, जहां आपको सिर्फ यह लिखना है कि आप तस्वीर में क्या चाहते हैं और कुछ ही सेकंडों में आपको तस्वीर तैयार मिल जाती है। एआई का चुनावी सिरदर्द सिर्फ सफेद झूठ तक सीमित नहीं है। पिछले कुछ चुनावों में हमने देखा है कि किस तरह से बिग डाटा का इस्तेमाल चुनावी रणनीति को तैयार करने और विरोधी को परास्त करने के लिए किया जाता रहा है। इसके आगे बिग डाटा से मतदाताओं की सोच बदलने की कोशिश भी की जाती रही है। एआई इन सारे कामों को ज्यादा कुशलता से अंजाम दे सकती है। साल 2023 में अमेरिकी सीनेट की एक सुनवाई के दौरान ओपेन एआई नाम की कंपनी के सीईओ सैम ऑल्टमैन ने क्लॉगर नामक एक मशीन की अवधारणा दी थी। ऑल्टमैन का कहना था कि चुनाव के दौरान यह सुपर एआई मशीन किसी के भी जीतने की संभावनाओं को अधिकतम कर सकती है। हमें पता नहीं कि ऐसी कोई मशीन है या नहीं? कोई इसका इस्तेमाल कर रहा है या नहीं?

संक्षिप्त समाचार

घटना लूट की हुई, मामला 420 का दर्ज हुआ

सागर (विश्व परिवार)। सागर जैन समाज के स्वर्गीय ऋषभ मड़ावरा की पत्नी श्रीमती कमला जैन के साथ 14 मार्च को सुबह मंदिर से घर जाते समय हुई लूट की घटना को कैंट पुलिस थाना ने धारा 420 में मामला दर्ज किया है मामला दर्ज करने में लगभग 10 घंटे लगाया इस बात को लेकर जैन पंचायत सभा सागर के द्वारा एसपी ऑफिस पहुंचकर एसपी के नाम एक ज्ञापन डीएसपी मयंक सिंह को दिया गया जिसमें मामले को लूट का मामला दर्ज करने की मांग की गई है। महेश बिलहरा मुकेश जैन ढाना के नेतृत्व में दिए गए ज्ञापन में मांग की गई की लगभग ?5 लाख रुपए के सोने के जेवर, चांदी के पूजा के बर्तन, एक मोबाइल सेट दो अज्ञात लोगों ने अप्सरा टॉकीज के सामने रेलवे स्टेशन रोड पर श्रीमती कमला से छीनकर भाग गए तत्काल पुलिस को सूचना दी गई लेकिन आरोपियों को पकड़ नहीं जा सका केंट थाने में मामला दर्ज करने के लिए फरियादी और उनके तीनों बेटे लग रहे लेकिन 10 घंटे बाद लूट के स्थान पर भादवि की धारा 420 के अंतर्गत मामला दर्ज किया गया है जो गलत है और घटना की तुरंत जांच करते हुए लूट का मामला दर्ज करने की मांग सभी उपस्थित लोगों ने की है और आरोपियों को पकड़ने की मांग की। डीएसपी मयंक सिंह ने कहा घटना की पूरी जानकारी एसपी साब को दी जाएगी ज्ञापन देने वालों में सुरेंद्र जैन माल्थोन, राजेश जैन, प्रदीप जैन पड़ा, दिनेश बिलहरा, ऋषभ जैन, ऋतुराज जैन, राहुल जैन, रीतेश जैन, राजकमल जैन आदि उपस्थित थे।

बहुचर्चित निर्देशक सूरजमल बड़जात्या ने सपत्नीक स्वस्तिधाम तीर्थ के दर्शन किए

स्वस्तिधाम के मुनिसुव्रतनाथ भगवान जैसी प्रतिमा एवं विशाल जैन मंदिर आज तक मैंने और मेरी पत्नी ने नहीं देखा : सूरजमल विनीता बड़जात्या

स्वस्ति धाम जहाजपुर (विश्व परिवार)। बहुचर्चित बॉलीवुड निर्माता निर्देशक श्रीमान सूरज बड़जात्या धर्मपत्नी श्रीमती विनीता बड़जात्या श्री 1008 मुनिसुव्रतनाथ दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र स्वस्तिधाम, जहाज़पुर दर्शन हेतु पधारे। यहां के दर्शन कर यह दोनों काफी अभिभूत हो गए और उन्होंने कहा कि ऐसी जिन प्रतिमा एवं ऐसा भव्य मंदिर मैने व मेरी धर्मपत्नी ने आज तक नहीं देखा। साथ ही उन्होंने कहा कि मैं यहां से अत्यंत सुखद अनुभव एवं अनुभूति यहां से लेकर जा रहा हूं। भगवान के दर्शन उपरांत उन्होंने क्षेत्र पर विराजित वात्सल्यमूर्ति छुल्लिका श्री 105 अर्हतमति माता जी से आशीर्वाद प्राप्त किया। क्षेत्र कमेटी की और सी ज्ञानेंद्र जैन, श्रीमान भानु जैन आदि ने न उनका भगवान श्री मुनिसुव्रतनाथ की तस्वीर भेंट कर एवं दुपट्टा पहनाकर स्वागत किया। **-अभिषेक जैन लुहाड़िया**

मुनि श्री संधानसागर जी महाराज ने कहा- दान लेने वाला एवं देने वाला कौन?

भामदेवी (विश्व परिवार)। संत शिरोमणी आचार्य श्री 108 विद्यासागर जी महाराज के परम प्रभावक शिष्य युवा तरुणाई के प्रखर वक्ता मुनि श्री 108 संधान सागर जी महाराज ने कहा कि आ आचार्यों ने बहुत स्पष्ट दान देने वाले एवं दान लेने वाले भी स्वष्ट व्याख्या की। समन्तभद्र आचार्य भगवन ने कहा नवधाभक्ति पूर्वक, स्वयं का द्रव्य, दाता जो सात गुण से युक्त हो, शुद्ध एवं पवित्र हो तथा पात्र भी सूना से रहित हो तभी दान की परम्परा अनुष्ण चल पायेगी। मुनिश्री जी ने कहा खण्डनी, पेषणी, चुल्ली, उदकुम्भ एवं प्रमार्जनी। आष ये पंच सूना श्रावण के पास से से गायब हो गये (संत कहते है इनके होने पर ही श्रावक-श्रावक कहलायेगा। इनके न होने परी साधु साधु कहला सकता है। आज विपरित देखने को मिल रहा है। मुनि श्री जी ने कहा ओखल मूसल का स्थान मिक्सी ने ले लिया, पेषणी का स्थान चक्की आ गयी। चूल्हा, गैस चूल्हा आ गया, उदकुम्भ के स्थान पर फ्रीष आ गया एवं बुहारी चली गयी, उसके स्थान पर वाइपर आ गया। मुनि की ने कहा आहार दान, रत्नत्रय का दान है। किस व्यक्ति से आहार नाहीं देना चाहिए यह सविस्तार पुज्य श्री ने सबके लिए बताया। मन वयन काय की शुद्धि होना बहुत जरूरी है। फास्ट-फूड का त्यागू होना चाहिए। लिपिस्टिक आदि हिंसक प्रसाधनों होना चाहिए। आहार का इस ष्टश्स्त्रद्ग जो बताया है उसे भी ध्यान रखना चाहिए।चटक मटक कपड़े कभी न पहनना। पुज्य ने बिगन से उतारने भूत को उतारने के लिए कहा कि। दूध शाकाहार था हैं और रहेगा।संत कहते है। 24 में से 23 तीर्थकर ने शुद्ध आहार का ही दान लिया।

-विद्यावाणी संकलन

उदयगिरि स्थित दयोदय गौ संवर्धन केन्द्र में 17 से 25 मार्च तक श्री 1008 सिद्धचक्र महामंडल विधान

आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज की समाधि पर नगर के जिनालयों में मंगल आरती एवं विनयांजली सभा

विदिशा (विश्व परिवार)। संत शिरोमणि आचार्य गुरूदेव विद्यासागरजी महाराज की समाधि के प्रसंग में दयोदय गौ संवर्धन केन्द्र उदयगिरि के1008 भगवान श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनालय में दस दिवसीय जिनेन्द्र देव की आराधना का शुभ संयोग विदिशा नगर बासिओं को प्राप्त होंने जा रहा है। दयोदय महासंघ के राष्ट्रीय प्रवक्ता अविनाश जैन ने बताया आचार्य गुरूदेव के मंगल आशीर्वाद से भगवान श्री शीतलनाथ स्वामी के गर्भ जन्म तप और ज्ञान कल्याणक भूमी पर 2014 में दयोदय गौ संवर्धन केन्द्र की स्थापना हुई थी।आचार्य श्री कहते थे कि दया धर्म का मूल है जंहा जीवों के प्रति दया होती है वंही पर करूणा पलती है, जिस 56 वीघा भूमी पर भगवान श्री शीतलप्रभु का समवसरण मंदिर वनना था वह भूमी आज दया और करूणा का केन्द्र बनी हुई है जिसमें एक हजार से अधिक पशुओं का संरक्षण किया जा रहा है। परिसर में स्थापित भगवान मुनिसुव्रतनाथ स्वामी का जिनालय है। संचालक आकाश जैन ने बताया क्षेत्र के विकास और अधिक पशुओं का संरक्षण हो उसके लिये जन सहयोग की आवश्यकता है इसी क्रम में स परिवार सभी पधारे उसी बात को ध्यान में रखते हुये बाल उद्यान को व्यवस्थित किया गया है जिसमें नवीन झूले लगाये गये है, एवं भविष्य में उद्यान को और सुंदर बनाए जाने का प्रावधान है।प्रकृति की इस अनुपम धरोहर को भगवान की भक्ती एवं जन जन में जीव दया की भावना हो इस हेतु पूज्य गुरूदेव की स्मृति को संजोते हुये दिनांक 16 मार्च शनिवार को श्री सिद्धचक्र महामंडल विधान का ध्वजारोहण प्रात:काल 9:30 बजे स्थानीय विधायक मुकेश टंडन के मुख्य आतिथ्य में किया जाऐगा एवं समस्त मांगलिक क्रिआऐं पंडित महेंद्र जैन के निर्देशन में होंगी 17 मार्च से 24 मार्च तक प्रात:7:15 से श्री सिद्धचक्र महामंडल विधान होगा एवं प्रतिदिन सांयकाल नगर के विभिन्न जिनालयों में प्रतिदिन सांयकाल 7:30 से मंगल आरती एवं विनयांजली सभा होगी सभी स धर्मी वंधुओं से दयोदय गौ संवर्धन केन्द्र उदयगिरि, दि. जैन शीतल विहार न्यास ट्रस्ट एवं श्री सकल दि. जैन समाज समिति निवेदन करती है कि दया करुणा और धर्म का एक साथ लाभ उठाऐं। **-अविनाश जैन**

सगुन को देखकर आप घोषणा कर सकते हैं कि आगे मंगल ही मंगल होगा : मुनिश्री सुधासागर जी महाराज

छतरपुर नगर में मुनि पुंगव की भव्य आगवानी

आप प्रयास करें तो कुछ समय छतरपुर वासियों को मिल सकता हैं : विजय धुर्रा

छतरपुर (विश्व परिवार)। आप मन्दिर गये मुझे प्रभु के दर्शन मिल जाए और प्रभु के दर्शन मिल गये वस सगुन हो गया श्री कृष्ण से अर्जुन युद्ध के मध्य में प्रश्न कर देते हैं कि इस युद्ध में जीतने की गारंटी क्या है तातश्री जैसे योद्धाओं से जीत पाऊंगा द्रोण चार्य कृपा चार्य से जीत पाऊंगा पूज्य गुरुदेव संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज इस प्रसंग को बहुत अच्छी तरह से समझते हैं जव आप इधर-उधर देखने लगते हैं जंगल में भटक जाओ तो अंदर की आवाज आने लगती है मधुसूदन कहते हैं अर्जुन इधर-उधर क्या देख रहे हैं। कभी मन में हतास हो जाये तो एक मोटी वेसन देता हूं इधर उधर देखने से तुम्हारे मन में रास्ता निकल आता है तुम्हारे लिए मालूम है कि यात्रा सफल नहीं होंगी थोड़ा नगर पालिका की सीमा के वाहर तक जा कर देखना आज जहां हम है वहां सर्वग नहीं है तो जरा निकालो बाहर और सगुन मिल जाए तो पंचर गाड़ी में बैठ जायें तो भी मंजिल पर पहुंच जाओगे उक्त आश्य केउद्गार मुनि पुंगव श्रीसुधासागरजी महाराज ने व्यक्त किए।

अंचल के भक्तों ने पलक पांवड़े बिछाकर की भक्ति : मध्यप्रदेश महासभा संयोजक विजय धुर्रा ने बताया कि कानपुर से विहार करते हुए निर्यापक श्रमण मुनि पुगंव श्रीसुधासागरजी महाराज एवं क्षुल्लक श्री गंभीर सागर जी महाराज ससंघ का आज छतरपुर जिला मुख्यालय पर भव्य प्रवेश हुआ जहां नगर वासियों ने मुनि संघ का पलक पांवड़े बिछाकर भव्य स्वागत किया मुनि संघ को भव्य शोभायात्रा के रूप में नगर में प्रवेश कराया जहां स्थान स्थान पर भक्तों ने गुरु देव की आरती उतारी पाद प्रक्षालन कर रंगोलियां सजा कर अपनी आत्मीयता के साथ अगवानी की इस दौरान पूरे अंचल से भक्तो का जमावड़ा छतरपुर की धरती पर रहा।

लो सगुन देता हूं कल भी तुम्हारा अच्छा होगा भविष्य भी अच्छा होगा : इस दौरान धर्म सभा को सम्बोधित करते हुए मुनि पुगंव श्री सुधासागरजी महाराज ने कहा कि न्यायालय में आपने देखा होगा कि जो मोनो लगा है उसकी आंख पर पट्टी लगी है न्यायालय अंधा है सारी दुनिया उस अंधे से न्याय चाह रही है जिसने आंख से देखा है उसका न्याय मान्य नहीं है अंधे का न्याय मान्य है उसका न्याय मान्य होता है सारी दुनिया उसके न्याय को मानतीं है उसके हाथ में जो तराजू है उसके दोनों पलड़े वरावर है ऐसे ही सगुन है जो तुम्हारे लिए न्याय मिलेगा सगुन अंधा लेकिन तुम्हारे लिए संकेत मिल जायेगा श्री कृष्ण ने अर्जुन से कह दिया कि अर्जुन तुम्हारी विजय होगी सामने से आ रहे दिगम्बर मुनि को देखकर घोषणा कर दी ये सगुन था जिसने विना सर्वग के भी संगुन को देखकर घोषणा कर देते हैं आपके नगर में दिगम्बर मुनि राज आये है मैं तुम्हारे लिए सगुन हूं मेरे पास अपना हाथ दिखाने मत आना मैं कुछ नहीं देखता लेकिन ऐसा सगुन देकर जा रहा हूं कि कल भी तुम्हारा अच्छा था भविष्य भी अच्छा होगा। **-विजय धुर्रा**

प्रेक्षकांनी क्षमा करावी का असरदार वाचन करते हुए महाराष्ट्र नाट्य मंडल के निर्देशक अनिल कालेले

रायपुर (विश्व परिवार)। महाराष्ट्र नाट्य मंडल ने गुरुवार की रात चौबे कॉलोनी स्थित महाराष्ट्र मंडल भवन में तीन नाटकों का वाचन किया। इससे पहले नाट्य मंडल के निर्देशक अनिल कालेले ने नाटकों के वाचन और उसके महत्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने बताया कि लगभग तीन- चार दशक पहले नाटकों का वाचन नाटकों के मंचन के समकक्ष मनोरंजन का सशक्त माध्यम था और आज भी यह प्रासंगिक है।

योगेश सोमण लिखित मराठी हास्य नाटक गप्पा (गप्पे मारना) का वाचन महाराष्ट्र नाट्य मंडल के सचिव प्रसन्न निमोणकर ने किया। दूसरा गंभीर मराठी अनाम नाटक विकास यशवंत जोगलेकर लिख रहे हैं। इसी का वाचन स्वयं जोगलेकर ने दिलीप लांबे और प्रिया बक्षी के साथ किया। डा. वसंत सबनीस लिखित मराठी हास्य नाटक प्रेक्षकांनी क्षमा करावी (दर्शकों क्षमा करें) का रोचक अंदाज में वाचन अनिल कालेले ने किया। उन्होंने तीनों मराठी नाटकों के वाचन के बाद दो हास्य नाटकों गप्पा और प्रेक्षकांनी क्षमा करावी के मंचन की तैयारी पर नाट्य मंडल के पदाधिकारियों से चर्चा भी की। इस मौके पर महाराष्ट्र नाट्य मंडल की अध्यक्ष अभया जोगलेकर, अपर्णा कालेले, दीपाली लांबे, चेतन दंडवते, श्यामसुंदर खंगन, परितोष डोनगांवकर, रविंद्र ठेंगड़ी, गौरी श्रीरसागर, नवीन देशमुख, पवन ओगले, अभिषेक बक्षी, रंजन मोडक, भागीरथ कालेले, वंदना काले, सौ. पिंपलापुरे सहित अनेक पदाधिकारी और आजीवन सभासद उपस्थित रहे। शुक्रवार से प्रतिदिन शाम 7:30 बजे दोनों नाटकों की महाराष्ट्र मंडल में तालीम शुरू करने का निर्णय लिया गया है।

छावनी चौक को गौ माता राष्ट्र माता चौक नाम से घोषित करने पर धर्मेंद्र यादव ने महापौर एवं समस्त पार्षद गणों का जताया आभार

भिलाई (विश्व परिवार)। गौ हत्या के विरोध में और गौमाता को राष्ट्रमाता का दर्जा दिलाने को लेकर परमाराध्य परमधर्माधीश उत्तराम्नाय ज्योतिषपीठाधीश्वर जगद्गुरु शंकराचार्य स्वामिश्री: अविमुक्तेश्वरानंद सरस्वती 1008 महाराज जी ने भिलाई से 10 मार्च को सुबह 10 बजकर 10 मिनट पर 10 मिनट के लिए संकेत स्वरूप धरना दिया था।

इस दौरान विधायक देवेंद्र यादव और महापौर नीरज पाल भी उपस्थित थे, 15 मार्च को निगम सभाकक्ष में आयोजित सामान्य सभा की बैठक में बहुमत के आधार पर छावनी चौक का नामकरण गौ माता राष्ट्र माता चौक के नाम से पारित किया गया जिससे आमजनों में हर्ष का माहौल है इसलिए आज वरिष्ठ कांग्रेसी धर्मेंद्र यादव ने महापौर और समस्त पार्षदगणो का आभार व्यक्त किया।।

गौ माता राष्ट्र माता चौक के सौंदरीकरण करने की मांग : चौक के नामकरण के पश्चात आज धर्मेंद्र यादव ने महापौर से मुलाकात कर गौ माता राष्ट्र माता चौक के सौंदर्य करण की मांग की।

समाज और मानवता के लाभ के लिए अपने ज्ञान का उपयोग करें : विश्वभूषण हरिचंदन

एमिटी विश्वविद्यालय के दूसरे दीक्षांत समारोह में शामिल हुए राज्यपाल, 22 मेधावी विद्यार्थियों को दिया गया स्वर्ण पदक

रायपुर (विश्व परिवार)। राज्यपाल श्री विश्वभूषण हरिचंदन आज एमिटी विश्वविद्यालय के दूसरे दीक्षांत समारोह में बतौर मुख्य अतिथि शामिल हुए। उन्होंने विद्यार्थियों से समाज व समग्र मानवता के लाभ के लिए अपने ज्ञान का पूर्ण उपयोग करने हेतु संकल्प लेने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि समाज के गरीब व वंचित लोगों के लिए विद्यार्थियो को काम करना है।

पं. दीनदयाल उपाध्याय ऑडिटोरियम में आयोजित दीक्षांत समारोह में राज्यपाल श्री हरिचंदन ने 22 मेधावी विद्यार्थियों को स्वर्ण पदक, 16 को रजत पदक और 5 को कांस्य पदक प्रदान किए। समारोह में वर्ष 2023 बैच के 681 विद्याार्थियों को स्नातक एवं स्नातकोत्तर की उपाधियां वितरित की गईं। विश्वविद्यालय द्वारा डीएआरई के सचिव और कृषि अनुसंधान एवं शिक्षा विभाग नई दिल्ली के महानिदेशक डॉ. हिमांशु पाठक को मानद डॉक्टरेट की उपाधि प्रदान की गई । कार्यक्रम की अध्यक्षता उप मुख्यमंत्री श्री अरूण साव ने की।

इस अवसर पर राज्यपाल ने कहा कि दीक्षांत समारोह का यह दिन विद्यार्थियों के जीवन का महत्वपूर्ण चरण है। सभी ने अपने विषयों में ज्ञान प्राप्त करने के लिए कड़ी मेहनत की है। उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि डिग्रियों से अधिक, जो ज्ञान और मूल्य यहां हासिल किया है वह पूरे जीवन में उनका मार्गदर्शन करेगा। राज्यपाल ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में भारत, दुनिया की सबसे तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्थाओं में से एक के रूप में उभरा है। आज दुनिया की नजरों में भारत के प्रति धारणा उल्लेखनीय रूप से बदल गई है, कई देशों के साथ आपसी सहयोग के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण सामने आया है। इस देश के युवा के रूप में हमारी अर्थव्यवस्था के विकास और राष्ट्र के समग्र विकास के अग्रदूत बनने जा रहे हैं। राज्यपाल ने कहा कि जीवन के हर विषय में मूल्य-आधारित शिक्षा, रचनात्मकता, नवाचार, अनुसंधान और विकास के माध्यम से ही हम समाज में सकारात्मक परिवर्तन ला सकते हैं और गरीबी, बीमारियों, बेरोजगारी, भूख और पर्यावरणीय चुनौतियों सहित कई समस्याओं का समाधान कर सकते हैं। यह गर्व विषय है कि पिछले कुछ वर्षों में भारत में उच्च शिक्षा संस्थानों ने दुनिया के सर्वश्रेष्ठ संस्थानों में जगह बनाने के लिए लगातार प्रयास किए। शैक्षणिक पाठ्यक्रम गतिशील होना चाहिए, यह दुनिया के सर्वश्रेष्ठ संस्थानों के बराबर होना चाहिए और उद्योग-केंद्रित और अनुसंधान उन्मुख होना चाहिए। सरकार ने वित्तपोषण और उद्यमिता तथा नौकरी सृजन को बढ़ावा देने के लिए 'स्टार्ट-अप इंडिया' अभियान शुरू किया है। राज्यपाल ने विद्यार्थियो से उद्यमी बनने का आग्रह किया।

उप मुख्यमंत्री श्री अरूण साव ने अपने संबोधन में विद्यार्थियो से आग्रह किया कि वे एक लक्ष्य निर्धारित कर उसे प्राप्त करने तक सीमित न रहे बल्कि अपने लिए खुला आसमान रखें और ऊंची उड़ान भरे । कड़ी मेहनत और लगन से अपने सपनों को पूरा करें।

समारोह को छत्तीसगढ़ निजी विश्वविद्यालय विनियामक आयोग के अध्यक्ष प्रो. कर्नल उमेश कुमार मिश्रा भी ने भी संबोधित किया। कुलाधिपति डॉ. डब्ल्यू सेल्वामूर्ति ने विश्वविद्यालय का प्रतिवेदन प्रस्तुत किया ।

इस अवसर पर विश्विद्यालय के संस्थापक अध्यक्ष डॉ. अशोक के चौहान, अध्यक्ष डॉ. असीम के चौहान, कुलपति डॉ. पियूष कांत पाण्डे, फैकल्टी मेंम्बर्स, डीन, प्राध्यापक, छात्र-छात्राएं एवं उनके परिजन भी उपस्थित थे।

विधायक भावना बोहरा ने ग्राम रणवीरपुर में महिला मल्टी यूटिलिटी सेंटर व पुलिस चौकी सहित करोड़ों के विभिन्न विकास कार्यों का लोकार्पण एवं भूमिपूजन किया

सतत विकास से ही समृद्ध पंडरिया का मिलकर करेंगे निर्माण, विधायक भावना बोहरा ने रणवीरपुर को दी करोड़ों के विकास कार्यों की सौगात

पंडरिया विधानसभा का हर नागरिक मेरा परिवार है, आपकी सेवा एवं सुविधा के लिए यह विकास कार्य समर्पित कर रहीं हूँ

रायपुर (विश्व परिवार)। अपने जनसेवा के कार्यों एवं हर व्यक्ति, वर्ग व समाज की सुविधा के लिए निस्वार्थ भाव से कार्य करने वाले पंडरिया विधायक भावना बोहरा ने आज ग्राम रणवीरपुर की जनता द्वारा बहुप्रतीक्षित मांगों एवं सुविधाओं के लिए विभिन्न कार्यों के लिए करोड़ों सौगात दी है। भावना बोहरा ने आज गाँव में विभिन्न विकास कार्यों का लोकार्पण और भूमिपूजन कर जनता की सेवा में समर्पित किया और कहा कि समृद्ध पंडरिया का हमने जो संकल्प देखा है वह ऐसे ही विकास कार्यों और आप सभी मेरे परिवारजनों के सहयोग व आशीर्वाद से पूरा करने में हम जरुर सफल होंगे।

इस दौरान भावना बोहरा ने ग्राम रणवीरपुर में सुरक्षा की दृष्टि से क्षेत्रवासियों की बहुप्रतीक्षित मांग नव निर्मित पुलिस चौकी का लोकार्पण किया इसके साथ ही अटल समरसता भवन, महिला मल्टी यूटीलिटी सेंटर, सिन्हा सामाजिक भवन एवं नवनिर्मित आदिवासी समाज के भवन का लोकार्पण कर ग्रामवासियों को बधाई दी। इसके अलावा गाँव में सुगम आवागमन के लिए विभिन्न सीसी रोड निर्माण कार्य का भूमिपूजन भी किया। इस अवसर पर भावना बोहरा ने कहा कि पंडरिया विधानसभा का हर नागरिक मेरे परिवार का सदस्य है। समाज सेविका से लेकर एक जनप्रतिनिधि के मेरे इस सफ़र में यहां की मिट्टी ने मुझे जो प्रोत्साहन और आप सभी मेरे परिवारजनों का जो अपार समर्थन, मार्गदर्शन, सहयोग व आशीर्वाद मुझे मिला है उसके लिए मैं हमेशा ऋणी रहूंगी। आज जो भी विकास कार्यों की हमने नींव रखी है वह जल्द ही पूरे होंगे और आने वाले समय में आप सभी की आकाँक्षाओं के अनुरूप हम मिलकर पूरे पंडरिया विधानसभा में विकास के नए आयाम स्थापित कर एक आदर्श विधानसभा की नींव रखेंगे।

भावना बोहरा ने बताया कि ग्राम रणवीरपुर में सुरक्षा की दृष्टि से पुलिस चौकी के आज नवीन भवन का लोकार्पण किया गया है, जिसकी मांगी विगत वर्षो से क्षेत्रवासी एवं पुलिस प्रशासन द्वारा की जा रही थी। आज इस नए पुलिस चौकी की स्थापना से क्षेत्र में सुरक्षा बढ़ेगी और अपराध में अंकुश भी लगेगा इसके साथ ही यहां पदस्थ पुलिस कर्मियों को भी बेहतर सुविधा मिलेगी। हर समाज की अपनी रीती-नीति रहती है और हमारा देश एक धर्म निरपेक्ष देश हैं जहाँ सभी समाज मिलकर रहते हैं। इसी उद्देश से गाँव में आज अटल समरसता भवन का भी लोकार्पण किया गया है जिससे सभी समाज के धार्मिक कार्य, वैवाहिक व सामाजिक कार्यक्रम के आयोजन हेतु क्षेत्रवासियों को सुविधा मिलेगी। ग्रामीण क्षेत्रों में कई महिलाएं ऐसी हैं जिनके अंदर हुनर व कौशल है जिससे वे स्वरोजगार की दिशा में आगे बढ़ सकती हैं, ऐसी ही महिलाओं के आर्थिक सशक्तिकरण, स्वावलंबन एवं स्वरोजगार के नए अवसर देने के लिए महिला मल्टी यूटिलिटी सेंटर का भी आज लोकार्पण किया गया है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि इस सेंटर में हमारे क्षेत्र की महिलाएं अपने कौशल एवं हुनर को बढ़ाने के साथ ही आत्मनिर्भरता की दिशा में भी अग्रसर होगी।

www.dainikvishwapariwar.com
vishwapariwarraipur@gmail.com

दैनिक
विश्व परिवार

बस्तर संभाग

रायपुर शनिवार 16 मार्च 2024

संक्षिप्त समाचार

करंट लगाकर हाथी की हत्या करने वाला युवक गिरफ्तार

बलरामपुर(विश्व परिवार)। जिले के वन परिक्षेत्र वाड्रफनगर के ग्राम मेंढ़ारी में एक हाथी की मौत के मामले में वन विभाग को बड़ी कामयाबी मिली है। 11 केव्ही करंट लगाकर हाथी की हत्या करने वाले एक आरोपी को वन अमला ने पकड़ा है। हत्या में संलिप्त अन्य आरोपी अभी भी फरार हैं, जिनकी पतासाजी की जा रही है। आरोपियों ने जंगली जानवरों के शिकार के उद्देश से विद्युत करेंट लगाया था। वाड्रफनगर क्षेत्र में लगभग 1 महीने से 34 हाथियों का दल विचरण कर रहे हैं। जिसमें से एक हाथी की 11 मार्च को करंट लगने से मौत हो गई थी। घटना की सूचना के बाद वन विभाग की टीम मौके पर पहुंची। वहीं अधिकारियों की मौजूदगी में डॉक्टरों की टीम से हाथी के शव का पोस्टमार्टम किया और वहीं पर दफना दिया। इस मामले में अपराध पंजीबद्ध कर विवेचना में लिया गया और पूछताछ के दौरान जो बात सामने आई उसमें कुछ आरोपी शामिल थे। उसमें से एक आरोपी जयसिंह उर्फ खिरू निवासी ग्राम मेंढ़ारी को गिरफ्तार कर न्यायिक डिमांड पर भेजा गया है।

बाइक सवार तीन युवक नहर में गिरे, तीनों की हुई मौत

धमतरी(विश्व परिवार)। जिले में बुधवार की रात सड़क हादसे में 3 युवकों की मौत हो गई। बताया जा रहा है कि तीनों बाइक सवार युवक पुल से टकरा गए और नहर में जा गिरे। हादसा सिहावा थाना क्षेत्र के सांकरा से भोथली मार्ग के पास हुआ है। बताया जा रहा है कि तीनों युवक पश्चिम बंगाल के निवासी हैं। परिजनों ने फोटो देखकर उनकी पहचान की है, लेकिन नामों की जानकारी अभी सामने नहीं आई है। परिजन आएंगे, तब पुलिस मामले की जांच आगे बढ़ाएगी। जानकारी के मुताबिक, ये युवक बिजली पोल फिटिंग का काम करते थे। भोथली गांव से राशन खरीदने के लिए तीनों युवक बाइक से सांकरा की तरफ जा रहे थे। इसी दौरान उनकी बाइक पुल से टकरा कर नहर में जा गिरी। इस हादसे में तीनों युवक की मौत हो गई।

बाड़ी में लगा रखा था गांजा का पौधा, आरोपी गिरफ्तार

धमतरी(विश्व परिवार)। अपने घर में गांजा पौधा लगाने वाले आरोपी को अर्जुनी पुलिस ने गिरफ्तार किया है। दरअसल पुलिस अधीक्षक महोदय द्वारा अवैध शराब,गांजा,अवैध कारोबारियों पर अभियान चलाकर कार्यवाही करने के सख्त निर्देश दिये है। इसी कड़ी में अर्जुनी थाना क्षेत्र में मुखबिर से सुचना मिली कि एक व्यक्ति द्वारा अपने घर में मादक पदार्थ गांजा का पेड़ लगाया गया है। जिस सूचना पर वरिष्ठ अधिकारी को सूचना देकर कार्यवाही के लिए टीम रवाना हुई। जिससे पता चला कि आरोपी अश्वनी कुमार साहू के द्वारा अपने घर के बाड़ी में अवैध मादक पदार्थ गांजा जैसा पौधा लगाया गया था। जिसे पुलिस ने नष्ट कर दिया है। आरोपी अश्वनी कुमार साहू का कृत्य अपराध धारा 20 (क) नारकोटिक्स एक्ट का पाये जाने से विधिवत गिरफ्तार कर न्यायिक रिमांड पर भेजा गया है।

आठ लाख का ईनामी नक्सली पकड़ाया

बीजापुर(विश्व परिवार)। छत्तीसगढ़ के बीजापुर जिले में सुरक्षाबलों को बड़ी कामयाबी मिली है। पुलिस 8 लाख का इनामी नक्सली कमांडर मद्देड दलम सुधाकर उर्फ उण्डम को गिरफ्तार किया है। यह नक्सली थाना तरलागुडा पर हमला करने के साथ-साथ हत्या, हत्या का प्रयास, लूट, अपहरण, आगजनी, बलवा जैसे कई घटनाओं मे शामिल था। मिली जानकारी के अनुसार, जिले में नक्सल विरोधी अभियान के तहत ष्ठक्रत्र और कोबरा 210 और थाना बासागुड़ा की संयुक्त टीम इलाके में गश्त के लिए निकली थी। तभी अचानक सर्चिंग पार्टी को यहां इसके होने की सूचना मिली। जिसके बाद घेराबंदी कर इसे गिरफ्तार कर लिया गया है। आरोपी के विरुद्ध कई थानों में 108 वारंट लंबित है और वह कई बड़ी वारदातों में भी शामिल रहा है।

चेक बुक कोषालय में 22 तक जमा करने के निर्देश

कांकेर(विश्व परिवार)। जिले के समस्त आहरण अधिकारियों को वित्तीय वर्ष 2023-24 के लिए जारी चेक बुक 22 मार्च को संध्या 05 बजे तक कोषालय में जमा करने कहा गया है। वरिष्ठ कोषालय अधिकारी ने बताया कि विभागों में ई-कुबेर के माध्यम से ऑनलाईन भुगतान की सुविधा प्रारम्भ हो चुकी है। 22 मार्च संध्या 05 बजे के पश्चात कार्य विभागों द्वारा इस वित्तीय वर्ष के ऑनलाईन भुगतान पर रोक लगाई गई है। वित्त विभाग से जारी निर्देशों के हवाले उन्होंने यह भी सुनिश्चित करने कहा है कि ऑनलाईन पेमेंट फाईल जनरेशन नहीं हो। अत्यावश्यक प्रकरण में वित्त विभाग की सहमति के पश्चात ऑनलाईन भुगतान किया जा सकेगा।

स्वतंत्र, निष्पक्ष चुनाव के लिए सभी अपने दायित्वों का करें निर्वहन : कलेक्टर

जैसे ही चुनाव की घोषणा होगी सभी दल सक्रिय हो जायेंगे।

कोंडागांव(विश्व परिवार)। कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी कुणाल दुदावत की उपस्थिति में आज सभा कक्ष में उड़नदस्ता, स्थैतिक निगरानी, वीडियो निगरानी और वीडियो अनुवीक्षण दलों के प्रशिक्षण का आयोजन किया गया। जिला कार्यालय के प्रथम तल स्थित सभाकक्ष में आयोजित प्रशिक्षण के दौरान कलेक्टर ने व्यय अनुवीक्षण दल के कार्यों के बारे में जानकारी देते हुए बताया निर्वाचन कार्य की दृष्टि से अभ्यर्थियों द्वारा किए जा रहे खर्च की जानकारी एवं चुनाव प्रक्रिया को स्वतंत्र, शांतिपूर्ण एवं निष्पक्ष कराए जाने के लिए आप लोगों की ड्यूटी लगाई गई है। उन्होंने बताया कि लोकसभा क्षेत्र जगदलपुर हेतु उड़नदस्ता दल (एफएसटी), स्थैतिक निगरानी दल (एसएसटी) का गठन किया गया है। जैसे ही चुनाव की घोषणा होगी सभी दल सक्रिय हो जायेंगे। सभी दलों को आदर्श आचार संहिता का पालन करते हुए सावधानी, सख्ती, सतर्कता और शालीनता से कार्य करने के निर्देश दिये गये। सभी चेक पोस्टों पर निष्पक्ष एवं पारदर्शिता के साथ कार्य करने के साथ ही अभ्यर्थियों के द्वारा किए जा रहे वैध एवं अवैध खर्चों की सघन जांच और निगरानी करेंगे। कलेक्टर ने जप्ती के दौरान जप्ती प्रक्रिया की पूर्ण वीडियोग्राफी करने के निर्देश दिये। उन्होंने लोकसभा क्षेत्र के संवेदनशीलता एरिया में विशेष निगरानी रखने के निर्देश दिये है। उन्होंने पूरी गंभीरता के साथ इस प्रशिक्षण का लाभ प्राप्त कर स्वतंत्र, निष्पक्ष और पारदर्शी निर्वाचन के उद्देश्य को पूर्ण करने के लिए पूरी सतर्कता और सजगता के साथ कार्य करने के निर्देश दिए। इस अवसर पर पुलिस अधीक्षक वाय अक्षय कुमार ने कहा कि पूरे जिले के साथ ही ओड़ीसा सीमा पर बहुत अधिक सजगता के साथ रहकर कार्य करें, जिससे हमारे क्षेत्र में स्वतंत्र, निष्पक्ष और पारदर्शी निर्वाचन हो सके। इस अवसर पर अपर कलेक्टर चित्रकांत चाली ठाकुर, उप जिला निर्वाचन अधिकारी अजय उरांव सहित उड़नदस्ता और स्थैतिक निगरानी, वीडियो निगरानी और वीडियो अनुवीक्षण दलों में नियुक्त अधिकारी उपस्थित थे।

लोगों को योजनाओं से लाभान्वित करने में गंभीरता पूर्वक एवं संवेदनशीलता के साथ काम करें - कलेक्टर

शासन की योजनाओं को जिले के अंतिम पात्र व्यक्ति तक पहुँचाएं - कलेक्टर

गरियाबंद(विश्व परिवार)। मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय ने मुख्यमंत्री निवास कार्यालय से वीडियो कांफ्रेंसिंग के जरिये गत दिवस कलेक्टर-एसपी कांफ्रेंस लेकर शासन की योजनाओं और कानून व्यवस्था को लेकर आवश्यक निर्देश दिए थे। इस संबंध में कलेक्टर श्री दीपक कुमार अग्रवाल ने अधिकारियों की बैठक लेकर कहा कि राज्य शासन और भारत सरकार की बहुत सारी योजनाएं जिले में संचालित है। सभी योजनाओं को जिले की अंतिम व्यक्ति तक पहुंचाने में कोताही न बरते। सभी अधिकारी कर्मचारी निर्धारित समय पर कार्यालय में उपस्थित हो। साथ ही शासकीय दायित्वों का निष्ठा पूर्वक निर्वहन की जाए। योजनाओं के क्रियान्वयन तथा लोगों को योजनाओं से लाभान्वित करने में गंभीरता पूर्वक एवं संवेदनशीलता के साथ काम करें। किसानों एवं आमजनों को अनावश्यक बार-बार कार्यालय का चक्कर न लगाना पड़े। इसके लिए समय सीमा में सभी कार्य पूर्ण करने की व्यवस्था सुनिश्चित करे। साथ ही अधीनस्थ कार्यालय में भी लोगों की समस्याओं का त्वरित समाधान हो ऐसी व्यवस्था सुचारू रूप से चले। आर आई, पटवारी की उपलब्धता कार्यालयों के साथ क्षेत्रों में भी हो जिससे लोगों के राजस्व संबंधी प्रकरणों के निराकरण जल्द हो सके। नामांकन, सीमांकन, बंटवारा आदि के लंबित प्रकरणों का भी तेजी से निराकरण किया जाए। जिससे लोगों को सहूलियत हो। उन्होंने कहा कि किसानों का कार्य समयावधि में पूरा हो यह सुनिश्चित किया जाए। राज्य शासन और भारत सरकार की बहुत सारी योजनाएं संचालित है। सभी योजनाओं को जिले के अंतिम पात्र व्यक्ति तक पहुँचाने की आवश्यकता है। इसमें किसी भी तरह की लापरवाही न हो। हम सब भी लोक सेवक हैं, हम सबका उद्देश्य जनसेवा है। हम सबको जनता की सेवा में तत्पर रहना होगा। जिले के सभी अधिकारी-कर्मचारी कार्यालय पर समय पर उपस्थित हो, यह सुनिश्चित करे। पूरी पारदर्शिता के साथ राज्य सरकार और भारत सरकार की योजना लोगों तक पहुँचे इस ओर अधिकारी ध्यान दे। उन्होंने कहा कि सभी गांव में पेयजल की समुचित आपूर्ति हो, इसके लिए जल जीवन मिशन के माध्यम से हर घर में नल के माध्यम से पानी पहुंचाना सुनिश्चित करें। उन्होंने कहा कि तेंदूपत्ता खरीदी का समय आ गया है, शासन द्वारा प्रति मानक बोरा 5500 की दर निर्धारित की गई है। यह ध्यान रखें कि तेंदूपत्ता संग्राहकों को समय पर पारिश्रमिक भुगतान तथा उनके उनके लिए चलाई जा रही योजनाओं का लाभ मिले। ग्रामीण क्षेत्रों में मनरेगा के कार्य ठीक से चलें और समय पर भुगतान हो। मजदूरी के लिए मजदूरों को भटकना न पड़े। जितने भी स्वीकृत कार्य है, समय पर कार्य प्रारंभ हो और पूरा हो यह भी सुनिश्चित की जाएं।

लोहे की प्लेट के साथ तीन नाबालिग सहित छह आरोपी पकड़े गए

कोरबा(विश्व परिवार)। सड़क निर्माण कार्य में लगी कंपनियों के डंप लोहे के प्लेट, राड़ व चेनल एंगल की अज्ञात नकाबपोश व्यक्तियों द्वारा चोरी किए जाने की शिकायत पुलिस को लगातार मिल रही थी। उरगा पुलिस मामला कायम कर विवेचना कर रही थी। पुलिस को 11 मार्च की रात 10-12 अज्ञात नकाबपोश व्यक्तियों द्वारा काम में लगे मजदूरों को नींद से उठाकर डरा धमकाकर एवं मारपीट कर छह लोहे का प्लेट कीमत 45000 रूपये को लूट कर पिकअप गाड़ी एवं स्कार्पियो गाड़ी में भरकर ले जाने की जानकारी मिली। मामले की शिकायत भूरे सिंह चैहान निवासी दीनदयायल कालोनी मंगला बिलासपुर की रिपोर्ट ने दर्ज कराई। पुलिस ने धारा 395 के तहत मामला कायम किया। विवेचना के दौरान पुलिस को मुखबिर से सूचना मिली, तब पुलिस ने मामले लिप्त तीन आरोपित हेमंत कुमार चैहान 21 वर्ष व धीरज कुमार चैहान 19 वर्ष दोनों निवासी भांठीकुड़ा हनुमान चैक थाना हरदीबजार, विनय बंजारे उर्फ छोटू उर्फ भूरन निवासी डिपरापारा वार्ड नंबर 30 मानिकपुर तथा तीन नाबालिग को पकड़ी। पूछताछ के दौरान आरोपितों ने बताया कि मुख्य आरोपित धनेश उर्फ सन्नाटा, इन्द्रपाल, सूरज साहू, हितेश सारथी, हेमंत वाद्यक एवं आयुष रात्रे द्वारा प्लान बनाकर घटना को अंजाम दिया गया है, जो अभी फरार है। पुलिस ने सभी आरोपितों का नाम जोड़ कर पतासाजी कर रही है।

लोकसभा चुनाव की तैयारियों के अंतर्गत गरियाबंद में सेक्टर अधिकारियों को दिया गया प्रशिक्षण

कलेक्टर ने मतदान केंद्रों में आवश्यक सुविधाओं की उपलब्धता और निर्वाचन के दायित्वों को गंभीरता से निर्वहन करने के दिए निर्देश

गरियाबंद(विश्व परिवार)। कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी श्री दीपक अग्रवाल की उपस्थिति में लोकसभा निर्वाचन 2024 की तैयारी के अंतर्गत गुरुवार को जिला पंचायत सभा कक्ष में सेक्टर अधिकारियों के प्रशिक्षण का आयोजन हुआ। कलेक्टर ने मतदान प्रक्रिया सुचारू रूप से सम्पन्न कराने सेक्टर अधिकारियों को सौंपे गए दायित्वों का गंभीरतापूर्वक निर्वहन करने के निर्देश दिए। उन्होंने सेक्टर अधिकारियों को मतदान केंद्रों और उनसे संबंधित रूट के अवलोकन के निर्देश दिए ताकि मतदान दल सुचारू ढंग से अपने केंद्रो तक सकुशल पहुंच सके। कलेक्टर श्री अग्रवाल ने कहा कि मतदान दलों को सुरक्षित रूप से मतदान केंद्रों तक पहुंचाने और वापस लाने की जवाबदारी सेक्टर अधिकारियों की होती है। इसके लिए मतदान दलों को सुगमता से मतदान केंद्रों तक पहुंचाने और मतदान के बाद वापस लाने मतदान केंद्रो का अलग-अलग रूट चार्ट बनाया गया है। कलेक्टर ने सेक्टर अधिकारियों को अपने प्रभार क्षेत्र में सतत भ्रमण हेतु निर्देशित किया। उन्होंने मतदाताओं की सुविधाओं और सुलभ तरीके से मतदान संपन्न कराने के लिए सभी जरूरी सुविधाएं सुनिश्चित करने के निर्देश अधिकारियों को दिए। इस दौरान उप जिला निर्वाचन अधिकारी श्री राकेश गोलछा और जिले के दोनों विधानसभा क्षेत्रों के सेक्टर अधिकारीगण मौजूद रहे।

कृषक उन्नति योजना से सशक्त होंगे किसान

धान की एकमुश्त अंतर राशि मिलने से किसानों में उत्साह का माहौल

गरियाबंद(विश्व परिवार)। कृषक उन्नति योजना के तहत जिले के 78 हजार 516 किसानों को 443 करोड़ 47 लाख 99 हजार रूपये का भुगतान डीबीटी के माध्यम से 12 मार्च को मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय के द्वारा किया गया। जैसे ही किसानों ने अंतर की राशि मिलने का अपने मोबाइल में संदेश देखा,वैसे ही किसान खुशी से झूम उठे।धान की अंतर राशि मिलने से किसानों के चेहरे में अलग ही खुशी देखने को मिला।गरियाबंद जिले के ग्राम कोसमी के किसान तीजऊ राम यादव ने जिला स्तरीय कार्यक्रम में छुरा पहुंचे हुए थे। उन्होंने उत्साहपूर्वक बताया कि धान की अंतर राशि मिलने से मेरी आर्थिक समस्याओं का हल हो जाएगा।शासन द्वारा एकमुश्त राशि देने से बहुत खुशी हो रही है। इसी तरह ग्राम कुरेकेरा के घसिया राम ध्रुव और ग्राम विजयपुर के राजेश सिन्हा ने बताया कि इस राशि का उपयोग अपने खेती-किसानी कार्य को आगे बढ़ाने में करुंगा।ग्राम विजयपुर के चिंता राम सिन्हा ने बताया कि पहले किश्त में राशि मिलती थी अब एकमुश्त राशि मिलने से किसानी कार्य में आसानी से कर पाऊँगा।ग्राम मालगांव के किसान फारूख चौधरी ने उत्साहपूर्वक बताया कि इस राशि का उपयोग अपने बच्चों को अच्छी शिक्षा दिलाने में उपयोग होगा। साथ ही खेती-किसानी में लगने वाले पैसे के लिए अब चिंता दूर हुई है। मालगांव के विजय टाक ने बताया कि शासन की इस योजना से किसान को नई ऊर्जा मिलेगी तथा किसान अब ज्यादा सशक्त होंगे। कृषक उन्नति योजना से पूरे ज़िले के किसानों में उत्साह का माहौल है। किसानों ने धान की अंतर राशि मिलने से छत्तीसगढ़ शासन के प्रति आभार व्यक्त किया। उल्लेखनीय है कि किसानों के उन्नति और खुशहाली के लिए मुख्यमंत्री विष्णु देव साय ने प्रदेश में कृषक उन्नति योजना का शुभारंभ किया।मोदी की गारंटी को पूरा करने प्रतिबद्ध विष्णु सरकार ने धान किसानों को अंतर राशि जारी की। किसानों ने इस खरीफ वर्ष में कृषि से बेहतर आय अर्जित की है।विष्णु के सुशासन में प्रदेश के किसान खुशहाल और समृद्ध बन रहे हैं।

महिलाओं के मोबाइल में आया खुशियों का नोटिफिकेशन

घर की छोटी छोटी जरूरतें होंगी पूरी

नारायणपुर(विश्व परिवार)। शासन की महत्वाकांक्षी महतारी वंदन योजना से अब महिलाओं का आत्मनिर्भर और स्वावलंबन बनने का सपना साकार होगा। घर के महत्वपूर्ण निर्णयों में महिलाओं की भूमिका बढ़ेगी। घर की छोटी-छोटी जरुरतें पूरी होंगी। महिलाएं इस योजना के तहत प्राप्त राशि का कई कार्यों में उपयोग कर सकेंगी। किसी का सपना अपने बच्चों को अच्छे स्कूल में पढ़ाने का है, तो किसी का व्यवसाय प्रारंभ कर आत्मनिर्भर बनने का। इस योजना से महिलाओं के सपनों को अब नई पंख लगेंगे। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 10 मार्च को बटन दबाकर योजना के तहत प्रथम किश्त की राशि पात्र विवाहित महिलाओं के खाते में अंतरित की। मुख्यमंत्री विष्णु देव साय ने महिलाओं को बधाई देते हुए कहा कि प्रधानमंत्री मोदी की एक-एक गारंटी को पूरा करने राज्य सरकार प्रतिबद्ध है। महिलाओं को सशक्त और आत्मनिर्भर बनाने के लिए हर संभव प्रयास किया जा रहा है। महतारी वंदन योजना के तहत पहली किश्त की राशि पाकर जिले की महिलाएं काफी उत्साहित नजर आई। जिले के ग्राम छोटेडोंगर की सरोज कश्यप, ग्राम तेलसी की रोशनी साहू, कनेरा की हलालखोरीन सहित हजारों महिलाओं के खाते में राशि का अंतरण हो चुका है, जिससे महिलाओं में खुशी की लहर छाई है। सरोज ने कहा कि वह राशि का उपयोग घर खर्च तथा बच्चों के पढ़ाई लिखाई में उपयोग करेंगी और कोहकामेटा की सुशीला नुरेटी ने बताया कि वह अपने गांव के बाजार में सब्जी भाजी बेचने का व्यवसाय स्थापित कर आय में वृद्धि करेगी। ओरछा की लक्ष्मी कोर्राम ने बताया कि वह ओरछा बाजार में नाश्ता होटल खोलकर आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ करने में उपयोग करेगी। महिलाओं के महिला सशक्तिकरण की ओर कदम बढ़ाते हुए योजना बनाने के लिए देश के यशश्वी प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और प्रदेश के मुख्यमंत्री विष्णु देव साय का धन्यवाद देते हुए आभार व्यक्त किया। ज्ञात हो कि महतारी वंदन योजना के तहत् पात्र विवाहित महिलाओं को प्रतिमाह एक हजार के हिसाब से साल में कुल 12 हजार रुपए महिलाओं को प्रदान की जाएगी। योजना के तहत् 10 मार्च को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा पहली किस्त के रूप में जिले की 27 हजार से अधिक महिलाओं के खाते में 02 करोड़ 78 लाख रुपए की राशि अंतरित की गई।

तीन दिवसीय योगाभ्यास प्रशिक्षण शिविर का हुआ समापन

सूरजपुर(विश्व परिवार)। तीन दिवसीय योगाभ्यास प्रशिक्षण शिविर कार्यक्रम का शुभारंभ मुख्य अतिथि महिला बाल विकास एवं समाज कल्याण विभाग मंत्री श्रीमती लक्ष्मी राजवाडे, प्रेमनगर विधायक श्री भूलन सिंह मरावी एवं छत्तीसगढ़ योग आयोग रायपुर के द्वारा जिला सूरजपुर के मंगल भवन सूरजपुर एवं शिव मंदिर प्रांगण, नगर पंचायत भटगांव में किया गया था। बाईक रैली के साथ रोड शो, गायत्री परिवार द्वारा महायज्ञ एवं मंत्री के द्वारा योग किट का वितरण कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया। 03 दिवसीय योगाभ्यास प्रशिक्षण शिविर मंगल भवन सूरजपुर एवं शिव मंदिर प्रांगण भटगांव में कार्यक्रम का समापन किया गया। कार्यक्रम के समापन में गायत्री परिवार के श्री विमल रजक एवं अन्य जनप्रतिनिधि उपस्थित रहें। कार्यक्रम का आयोजन श्री गौरव कुमार देवांगन छत्तीसगढ़ योग आयोग रायपुर एवं योग आयोग प्रबंधक श्री रविकान्त कुम्भकार के समन्वय से किया गया।

www.dainikvishwapariwar.com
vishwapariwarraipur@gmail.com

दैनिक
विश्व परिवार

खेल-व्यापार

रायपुर शनिवार 16 मार्च 2024

व्यापार समाचार

फोनपे के इंडस ऐपस्टोर को मिली शानदार शुरुआत

नईदिल्ली(एजेंसी)। गूगल और भारतीय ऐप डेवलपरों के बीच खींचतान में इंडस ऐपस्टोर को फायदा होता दिख रहा है। गूगल प्ले स्टोर और ऐपल के ऐप स्टोर की प्रतिस्पर्धी बनने के इरादे से फोनपे के इंडस ऐपस्टोर ने अपनी शुरुआत के पहले दो सप्ताह के भीतर उपयोगकर्ताओं की खासी दिलचस्पी देखी है। कंपनी ने कहा कि पिछले महीने 2,00,000 ऐप के साथ शुरुआत करने के बाद से इंडस को दो सप्ताह के भीतर 5,00,000 से ज्यादा बार डाउनलोड किया जा चुका है और जल्द ही 10 लाख उपयोगकर्ताओं का स्तर हासिल करने वाला है। कंपनी के एक वरिष्ठ अधिकारी ने भी कहा कि साल के अंत तक यह ऐपस्टोर 25 करोड़ से 30 करोड़ स्मार्टफोन में होगा। इंडस ऐपस्टोर के मुख्य उत्पाद अधिकारी और सह-संस्थापक आकाश डोंगरे ने बताया कि बड़ी संख्या में ऐप और गेम डेवलपर ऐप स्टोर पर अपनी एप्लिकेशन सूचीबद्ध कराने लगे हैं। पिछले कुछ सप्ताह के दौरान हजारों डेवलपरों ने अपनी एप्लिकेशन सूचीबद्ध की हैं। पिछले महीने फोनपे ने भारत के लिए अधिक प्रतिस्पर्धी और स्थानीय मोबाइल ऐप स्टोर वाली अर्थव्यवस्था बनाने के लिए खास तौर पर भारतीय बाजार के लिए इंडस की शुरुआत करने का ऐलान किया था। इंडस पर उपयोगकर्ताओं और ऐप की सूचीबद्धता में यह इजाफा भारतीय डेवलपरों और प्रौद्योगिकी क्षेत्र की दिग्गज गूगल के बीच उसकी बिलिंग नीति को लेकर चल रहे विवाद के बीच हुआ है। 1 मार्च को गूगल ने ऐलान किया था कि उसने अपने यूजर चॉइस बिलिंग (यूसीबी) सिस्टम का कथित रूप से अनुपालन न करने पर अपने प्ले स्टोर से 10 डेवलपरों की ऐप हटा दी हैं।

भारत के सबसे बड़े और सबसे भरोसेमंद ओटीसी एंटेसिड ब्रांड ENO ने भारत में ENO च्यूई बाइट्स का लॉन्च किया, जो अपनी तरह का पहला स्वादिष्ट चबाने वाला एंटेसिड है

नईदिल्ली (एजेंसी)। हेलीऑन (तत्कालीन ग्लैक्सोस्मिथ क्लाइन कंज्यूमर हेल्थ केयर) के अग्रणी डाइजेस्टिव ब्रांड, ENO ने अपनी तरह का पहला चबाने वाला एंटेसिड, 'ENO च्यूई बाइट्स' पेश किया है, जो दो स्वादिष्ट फ़्लेवर, टैंगी लेमन और ज़ेस्टी ऑरेंज में उपलब्ध है। ENO पाँच दशक से ज्यादा समय से लाखों लोगों का एक भरोसेमंद साथी है, जो एसिडिटी से तुरंत राहत देता है। नए ENOच्यूई बाइट्स ग्राहकों की मुख्य ज़रूरत को पूरा करते हैं, और सुविधा एवं आसानी से उपलब्ध हैं। अब चाहे एयरपोर्ट हो, स्टेशन हो, रेस्टोरेंट हो या मॉल, किसी भी जगह एसिडिटी महसूस होने पर बस ये नए स्वादिष्ट चबाने वाले बाइट्स चबाएं और ENO के भरोसे के साथ तेज़ी से एसिडिटी दूर भगाएं। ENO च्यूई बाइट्स प्राकृतिक तत्वों से बने हैं। इनमें 1000 मिलीग्राम खटिका चूर्ण की शक्ति है, जो 1 मिनट के अंदर एसिडिटी से राहत देती है। ENO च्यूई बाइट्स पेट के लिए हल्के हैं, और इनका सेवन वयस्क एवं 12 साल से बड़े बच्चे कर सकते हैं। यह तीन आकार के पैक - सिंगल पिलो पाउच, 10 बाइट्स के पैक और 30 बाइट्स के पैक में उपलब्ध है। ENOच्यूई बाइट्स के बारे में जानकारी बढ़ाने और इसके प्रचार के लिए टीवी, प्रिंट और सोशल मीडिया सहित सभी मुख्य चैनलों एवं प्रकाशनों में इसका प्रसार किया जाएगा। इसके टीवी विज्ञापन में एक पिता-पुत्र दिखाए गए हैं, जो दोस्त के जन्मदिन की पार्टी में स्वादिष्ट भोजन का आनंद ले रहे हैं, घर से बाहर खाने का यह एक आम उदाहरण है, लेकिन तभी एसिडिटी के कारण उनकी खुशी अचानक ख़त्म होने लगती है, तभी ENO च्यूई बाइट्स उन्हें एसिडिटी से राहत देते हैं, ताकि उनकी खुशी में कोई रुकावट ना आए। ENO च्यूई बाइट्स हर वक़्त और हर जगह एसिडिटी से आपकी रक्षा करते हैं। इस टीवीसी का विचार ओगिल्वी एंड माथर, भारत का है, और इसे बनाया यूबिक फिल्म्स के डायरेक्टर, सुरजो देब ने है।

ऑनर प्रोटेक्ट प्लान के साथ ऑनर एक्स9बी पर 90 प्रतिशत तक एश्योर्ड बायबैक पाएं

नईदिल्ली (एजेंसी)। ऑनर ने नए लॉन्च किए गए ऑनर एक्स9बी के साथ ऑनर प्रोटेक्ट प्लान शुरू किया है, जो ऑनसाईटगो द्वारा पॉवर्ड है। यह नया प्लान ग्राहकों को ज्यादा भरोसा और मन का सुकून प्रदान करेगा। 2,999 रुपये का यह प्लान ऑनर एक्स9बी के साथ निशुल्क दिया जा रहा है और इसका उद्देश्य ब्रांड में ग्राहकों का दीर्घकालिक विश्वास स्थापित करना है। इससे अपने उत्पादों की विश्वसनीयता बढ़ाने की कंपनी की प्रतिबद्धता प्रदर्शित होती है। इस प्लान के अंतर्गत स्मार्टफोन खरीदने के छ: महीने के अंदर स्क्रीन क्षतिग्रस्त होने पर उसे एक बार निशुल्क रिप्लेस किया जाएगा। इस स्थिति में ग्राहकों से क्लेम प्रोसेसिंग के लिए 749 रुपये का मामूली शुल्क लिया जाएगा। इसके अलावा, यदि ग्राहकों को एक्स9बी खरीदने के बाद यह स्मार्टफोन पसंद नहीं आता है, तो ब्रांड इनवॉईस वैल्यू (जीएसटी को छोड़कर) के 90 प्रतिशत तक का 30-डे एश्योर्ड बाय बैक विकल्प प्रदान कर रहा है। हालाँकि वापस ली जाने वाली डिवाईस की गुणवत्ता सुनिश्चित करने के लिए विशेष कटौतियाँ या एक्सक्लुज़न लागू हो सकते हैं। क्षतिग्रस्त या टूटी बॉडी या स्क्रीन वाले फोन वापस स्वीकार नहीं किए जाएंगे। फोन वापस लिए जाने पर लागू अतिरिक्त कटौतियों में ओरिज़नल एक्सेसरीज़ न होने पर 1500 रुपये की कटौती, बड़े स्क्रैच या डेंट के लिए 20 प्रतिशत, छोटे स्क्रैच या डेंट के लिए 15 प्रतिशत, और ओरिज़नल बॉक्स न होने पर 1000 रुपये की कटौती शामिल है। इस विस्तृत पैकेज के साथ कंपनी 6 महीने का एक्सटेंडेड वॉरंटी कवर और ब्रांड के अधिकृत सर्विस सेंटर से रिपेयर के लिए 18 महीने तक की डोरस्टेप पिकअप एवं डिलीवरी की सुविधा भी दे रहा है, ताकि रिपेयर में ओरिज़नल पार्ट्स के उपयोग की गारंटी मिल सके। इसके साथ ग्राहकों को जीरो डेप्रिसिएशन प्रोग्राम और जीरो एक्सेस प्लान का लाभ भी ले सकते हैं, जो उन्हें पूरी सुरक्षा प्रदान करता है, और वो बिना किसी डेप्रिसिएशन के कवरेज पा सकते हैं, तथा फोन के क्षतिग्रस्त होने के बाद भी उन्हें कोई अतिरिक्त शुल्क नहीं देना पड़ेगा।

विरोधी चाहते हैं कि स्मिथ बतौर ओपनर खेलें : टिम पेन

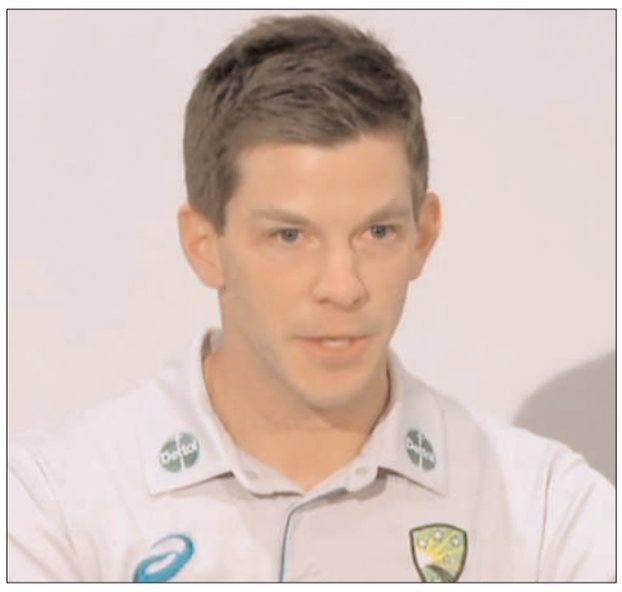

नई दिल्ली(एजेंसी)। डेविड वॉर्नर के टेस्ट क्रिकेट से संन्यास लेने के बाद ऑस्ट्रेलियाई टीम अपनी बैटिंग लाइनअप को नया आकार देने में जुट गई है। इस बीच स्टीव स्मिथ को लेकर पूर्व ऑस्ट्रेलियाई कप्तान टीम पेन ने चौंकाने वाला बयान दिया है। टिम पेन ने स्टीव स्मिथ के सलामी बल्लेबाज के रूप में उनके सफल होने की क्षमता पर भरोसा जताया है। वॉर्नर के टेस्ट क्रिकेट से संन्यास लेने के बाद ऑस्ट्रेलियाई टीम ने स्टीव स्मिथ को बतौर ओपनिंग बल्लेबाज खिलाने का फैसला किया था। हालांकि, ऑस्ट्रेलिया के न्यूजीलैंड दौरे के दौरान स्मिथ के प्रदर्शन ने सलामी बल्लेबाज के रूप में उनकी काबिलियत पर सवाल उठाए। पेन ने चिंताओं को स्वीकार करते हुए कहा कि विरोधी टीमें स्मिथ के पारी की शुरुआत में उनकी कमजोरियों का फायदा उठाने के अवसर के रूप में देख सकती हैं। न्यूजीलैंड में स्मिथ के संघर्षों पर बात करते हुए, जहां वह 12.75 की औसत से केवल 51 रन बना सके, पेन ने स्मिथ को नई भूमिका में अपनी लय खोजने के महत्व पर जोर दिया। टिम पेन ने कहा, मैं ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ टेस्ट मैच खेल रहा होता तो मैं चाहूंगा कि स्टीव स्मिथ ओपनिंग बल्लेबाजी करें। इससे मेरे बेस्ट गेंदबाजों को उन्हें आउट करने का पूरा मौका मिलेगा, वह भी नई गेंद के साथ। साल 2019 की एशेज सीरीज में जब मैं उनके साथ इंग्लैंड के दौरे पर था, उस समय वह नंबर 4 की पोजीशन में खेले थे और स्मिथ को खेलते देख ऐसा लगा था कि कोई भी उनको आउट नहीं कर पाएगा। मैं उन्हें बतौर ओपनर सफल होते देखना चाहता हूं और मुझे लगता है कि वह ऐसा करने में भी कामयाब होंगे, लेकिन एक विरोधी टीम के खिलाड़ी के तौर पर मैं चाहूंगा कि वह शीर्ष क्रम पर बल्लेबाजी पर उतरें ताकि उनको जल्दी आउट करने का मौका मिल सके। भारत के खिलाफ ऑस्ट्रेलिया की आगामी टेस्ट श्रृंखला को देखते हुए, पेन ने बल्लेबाजी क्रम में बदलाव के सुझावों को खारिज कर दिया। उन्होंने शीर्ष पर स्मिथ की पुष्टि करते हुए कहा कि स्मिथ ने अपनी काबिलियत और क्षमता के दम पर किसी भी क्रम में बल्लेबाजी करने का अधिकार अर्जित कर लिया है। ऑस्ट्रेलिया का अगला मुकाबला नवंबर में बॉर्डर-गावस्कर ट्रॉफी में भारत से होगा।

विदेशी कोष की ताजा निकासी के कारण शेयर बाजार में शुरुआती कारोबार में गिरावट

मुंबई(एजेंसी)। विदेशी कोष की भारी निकासी और वैश्विक बाजारों से मिले-जुले रुझानों के बीच इक्विटी बेंचमार्क सूचकांकों ने अपने पिछले दिन की मंदी को जारी रखा और बृहस्पतिवार को शुरुआती कारोबार में गिरावट आई. बीएसई का 30 शेयरों वाला सेंसेक्स शुरुआती कारोबार में 264.7 अंक टूटकर 72,497.19 अंक पर आ गया. नेशनल स्टॉक एक्सचेंज का निफ्टी 80.2 अंक गिरकर 21,917.50 अंक पर कारोबार कर रहा था. सेंसेक्स की कंपनियों में बजाज फाइनेंस, टाटा स्टील, जेएसडब्ल्यू स्टील, टाटा कंसल्टेंसी सर्विसेज, बजाज फिनसर्व, टेक महिंद्रा, टाइटन और एचडीएफसी बैंक घाटे में रहने वाली प्रमुख कंपनियां थीं. महिंद्रा एंड महिंद्रा, रिलायंस इंडस्ट्रीज, लार्सन एंड टुब्रो और नेस्ले के शेयर लाभ में थे. शेयर बाजार के आंकड़ों के मुताबिक, विदेशी संस्थागत निवेशकों (एफआईआई) ने बुधवार को 4,595.06 करोड़ रुपये के शेयर बेचे. एशियाई बाजारों में शियोल, शंघाई मुनाफे में तो टोक्यो और हांगकांग घाटे में कारोबार कर रहे थे. अमेरिकी बाजार बुधवार को मिले-जुले रुख के साथ बंद हुए थे. बुधवार को बीएसई बेंचमार्क सूचकांक 906.07 अंक गिरकर 72,761.89 पर बंद हुआ. निफ्टी 338 अंक गिरकर 21,997.70 पर आ गया था. वैश्विक तेल मानक ब्रेंट क्रूड 0.20 प्रतिशत बढ़कर 84.20 अमेरिकी डॉलर प्रति बैरल के भाव पर था.

फुटबॉलर क्विंसी प्रॉम्स दुबई में गिरफ्तार

हेग(एजेंसी)। ड्रग्स की तस्करी और अपने चचेरे भाई पर चाकू से हमला करने के दोषी डच फुटबॉलर क्विंसी प्रॉम्स को डच अधिकारियों के अनुरोध पर दुबई में गिरफ्तार कर लिया गया है। बुधवार को एक प्रेस विज्ञप्ति में दुबई के सरकारी वकील ने इसकी जानकारी दी। बयान के अनुसार, गिरफ्तारी यूएई और नीदरलैंड के अधिकारियों के बीच ज्वाइंट ऑपरेशन की मदद से हुई। यह गिरफ्तारी नीदरलैंड द्वारा जारी रेड कॉर्नर नोटिस के आधार पर की गई। रिपोर्ट के अनुसार, नीदरलैंड अब दुबई पुलिस से क्विंसी प्रॉम्स को उन्हें सौंपने का अनुरोध करेगा। रेड नोटिस दुनिया भर में कानून प्रवर्तन से प्रत्यर्पण, आत्मसमर्पण या इसी तरह की कानूनी कार्रवाई के लिए लंबित किसी व्यक्ति का पता लगाने और उसे अस्थायी रूप से गिरफ्तार करने के लिए जारी किया जाता है। यह अनुरोध करने वाले देश में न्यायिक अधिकारियों द्वारा जारी गिरफ्तारी वारंट या अदालती आदेश पर आधारित है। किसी व्यक्ति को गिरफ्तार करना है या नहीं, यह तय करने में सदस्य देश अपने स्वयं के कानून लागू करते हैं। पिछले महीने एम्स्टर्डम की अदालत ने कोकीन की एक बड़ी खेप की तस्करी में शामिल होने के लिए प्रॉम्स को उसकी अनुपस्थिति में छह साल जेल की सजा सुनाई थी। हालांकि, डच सरकारी वकील ने नौ साल की सज़ा की मांग की थी। वहीं पिछले साल एक फैमिली पार्टी में अपने चचेरे भाई को चाकू मारने के आरोप में भी प्रॉम्स को 1.5 साल की जेल हुई थी। 32 वर्षीय प्रॉम्स, जिन्होंने डच राष्ट्रीय टीम के लिए 50 मैच खेले, फरवरी 2021 में अजाक्स से स्पार्टक मॉस्को चले गए और मॉस्को के निवासी के रूप में वह अब तक डच पुलिस की पकड़ से दूर रहे। हालांकि, अपने रूसी क्लब के साथ यूएई में एक प्रशिक्षण शिविर के दौरान उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया। रिपोर्ट में यह भी बताया गया है कि फिलहाल जांच चल रही है और ज्यादा जानकादी नहीं दी जा सकती।

नेशनल स्टॉक एक्सचेंज (एनएसई) एनएसई-एसएसई पर पहले 5 सूचीबद्ध संगठनों का किया स्वागत

नईदिल्ली (एजेंसी)। नेशनल स्टॉक एक्सचेंज (एनएसई) के सोशल स्टॉक एक्सचेंज (एसएसई) ने एनएसई-सोशल स्टॉक एक्सचेंज (एसएसई) प्लेटफॉर्म पर स्वामी विवेकानंद यूथ मूवमेंट (एसवीवाईएम), ट्रांसफॉर्म रूरल इंडिया, मुक्ति, एकलव्य फाउंडेशन और एसजीबीएस उन्नति फाउंडेशन की सूचीबद्धता के साथ पहली पांच लिस्टिंग की उपलब्धि का स्वागत किया। । सामाजिक असर से प्रेरित वित्त की दिशा में इस महत्वपूर्ण पहल की शुरुआत के स्वागत में नेशनल स्टॉक एक्सचेंज (एनएसई) मुख्यालय के मुंबई स्थित बांद्रा कुर्ला कॉम्प्लेक्स (बीकेसी) में एक कार्यक्रम का आयोजन हुआ। इन सूचीबद्धता के ज़रिये लगभग 8 करोड़ रुपये का फंड जुटाया गया, जिसका उपयोग शिक्षा, कौशल विकास, कृषि, आजीविका, महिला सशक्तिकरण आदि क्षेत्रों में कई विकास परियोजनाओं के लिए किया जाएगा। बेहद उत्साह के साथ आयोजित इस कार्यक्रम में सेबी की माननीय अध्यक्ष, श्रीमती माधवी पुरी बुच, सेबी की सोशल स्टॉक एक्सचेंज सलाहकार समिति के अध्यक्ष डॉ. आर बालासुब्रमण्यम; श्री अश्वनी भाटिया, पूर्णकालिक सदस्य (डब्ल्यूटीएम), सेबी; और आदित्य बिड़ला सनलाइफ एएमसी के प्रबंध निदेशक और मुख्य कार्यकारी, श्री ए बालासुब्रमण्यम के साथ कई प्रतिष्ठित गणमान्य व्यक्ति, अधिकारी और गैर-लाभकारी संगठनों (एनपीओ) और अन्य हितधारकों के प्रतिनिधि मौजूद रहे।

दंगल टीवी के दंगल फैमिली अवार्ड 2024 में परिवार, रिश्तों और प्यार का उत्सव

मुंबई (एजेंसी)। भारत का नंबर वन टीवी चैनल दंगल टीवी लाया है दंगल फैमिली अवार्ड 2024। इस चमचमाती शाम में चैनल की उपलब्धियां, शानदार कंटेंट के प्रति चैनल की प्रतिबद्धता, एकता और चैनल के सहयोगकर्ताओं का धन्यवाद देने के लिए एक उत्सव मनाया जाएगा, जिसकी बदौलत ही आज दंगल टीवी देशभर में परिवारों की पहली पसंद बना है। दंगल फैमिली अवार्ड 2024 की शाम अविस्मरणीय अनुभवों और मनोरंजन से भरपूर होगी। इस कार्यक्रम में ना सिर्फ दंगल टीवी के सफ्लता का जश्न मनाया जाएगा बल्कि, इस चैनल से जुड़े सभी लोगों के परिश्रम को भी पहचान और प्रशंसा मिलेगी जिसमें शामिल है इसके दर्शक, प्रतिभावान एक्टर, लेखक और इससे जुड़े सभी प्रोडक्शन हाउस। शाश्वत सुंदरी हिना खान और एक दिलकश व्यक्तित्व के स्वामी वरुण शर्मा दंगल फैमिली अवार्ड 2024 की मेजबानी करेंगे। इस कार्यक्रम में फिल्म इंडस्ट्री से जुड़े कुछ बड़े नाम जैसे की जैकलीन फर्नांडीज, मीका सिंह, रश्मि देसाई, अपनी शानदार और आकर्षक प्रस्तुतियां देंगे और साथ ही मेंटालिस्ट सुहानी शाह अपनी मन पढ़ने की अपनी कला का खूबसूरत प्रदर्शन भी करेंगे। इसके अलावा जो अन्य महत्वपूर्ण लोग दंगल फैमिली अवार्ड 2024 का हिस्सा बनने जा रहे हैं उसमें शामिल है कुछ लोकप्रिय चेहरे जैसे कि सुभाष घई, रवि किशन, मनोज तिवारी, राकेश चौरसिया, रितु शिवपुरी, अनीता हसनंदानी रेड्डी, उर्वशी ढोलकिया, शमा सिकंदर, रवि दुबे, रोहित वर्मा, स्नेहा वाघ, रिधिमा पंडित, दीपशिखा नागपाल, अयूब खान, पारुल चौहान, अपार मेहता, मानव गोयल, मौली गांगुली, तरुण खन्ना, इंद्र कृष्णन, नीलू बाघेला आदि।

ट्रांसरेल लाइटिंग लिमिटेड ने सेबी के पास फाइल किया ड्राफ्ट रेड हेरिंग प्रॉस्पेक्टस (डीआरएचपी)

नईदिल्ली (एजेंसी)। ट्रांसरेल लाइटिंग लिमिटेड (कंपनीया टीएलएल) ने बाजार नियामक भारतीय प्रतिभूति और विनिमय बोर्ड (सेबी) और बीएसई लिमिटेड व नेशनल स्टॉक एक्सचेंज ऑफइंडिया लिमिटेड के पास अपना ड्राफ्ट रेड हेरिंग प्रॉस्पेक्टस (डीआरएचपी) फाइल किया है। कंपनी अग्रणी भारतीय इंजीनियरिंग, खरीद और निर्माण (ईपीसी) कंपनियों में से एक है, जिसके पास लेटिस से संबन्धित संरचनाओं, कंडक्टरों और मोनोपोल के लिए एकीकृत विनिर्माण सुविधाएं हैं। विश्व स्तर पर टर्नकी बेस पर व्यापक समाधान प्रदान करने में टीएलएल का चार दशकों का ट्रैक रिकॉर्ड है और यह बिजली पारेषण और वितरण क्षेत्र में एक विश्वसनीय और दीर्घकालिक भागीदार रहा है। कंपनी आरंभिक सार्वजनिक पेशकश के माध्यम से प्रत्येक 2 रुपए अंकित मूल्य के इक्विटी शेयर (इक्विटी शेयर) की पेशकश करके धन जुटाने की योजना बना रही है। कुल ऑफर साइज में 4,500 मिलियन (450 करोड़ रुपए) रुपए तक जुटाने के लिए इक्विटी शेयरों का फ्रेश इश्यू और अजंमा होल्डिंग्स प्राइवेट लिमिटेड द्वारा 10,160,000 इक्विटी शेयरों (ऑफर फॉर सेल) तक की ऑफर फॉर सेल शामिल है।

कार्यालय अधीक्षण अभियंता,
लोक निर्माण विभाग, रायपुर मण्डल क्रमांक 2 (छत्तीसगढ़)
ई-प्रोक्युरमेंट निविदा सूचना

दिनांक 14.03.2024

निम्नांकित कार्यों हेतु ऑनलाईन निविदा "डी" श्रेणी एवं अधिक श्रेणी के ठेकेदारों हेतु निविदा आमंत्रित की जाती है।

एन.आई.टी क्र/ निविदा क्रं.	कार्य का नाम	कार्य की अनुमानित लागत (लाख में)	ऑनलाईन निविदा डाउनलोड करने की अंतिम तिथि
1	2	3	4
NIT NO. 250 Tender No. 154179	जिला गरियाबंद के विकासखंड देवभोग अंतर्गत देवभोग में कन्या हायर सेकेण्ड्री स्कूल भवन का निर्माण कार्य, जल प्रदाय, सेनेटरी फिटिंग एवं विद्युतीकरण सहित कार्य।	रू. 119.79 लाख	26.03.2024 (तृतीय आमंत्रण)
NIT NO. 251 Tender No. 154180	जिला महासमुन्द (सारंगढ़-बिलाईगढ़) के खाटू श्याम मंदिर अर्जुण्दा मार्ग लं. 0.55 किमी. का निर्माण कार्य।	रू. 199.87 लाख	03.04.2024 (प्रथम आमंत्रण)
NIT NO. 252 Tender No. 154203	जिला बलौदाबाजार उपसंभाग कसडोल अंतर्गत स्थित ग्राम टुण्ड्रा में शासकीय हायर सेकेण्ड्री स्कूल भवन का निर्माण कार्य जलप्रदाय, सेनेटरी फिटिंग एवं विद्युतीकरण सहित कार्य।	रू. 115.43 लाख	03.04.2024 (प्रथम आमंत्रण)

उपरोक्त निर्माण कार्यो की निविदा की सामान्य शर्तें, धरोहर राशि, विस्तृत निविदा विज्ञप्ति, निविदा दस्तावेज व अन्य जानकारी ई-प्रोक्योरमेंट बेब पोर्टल **https://eproc.cgstate.gov.in** अथवा विभागीय वेबसाइट https://eproc.cgstate.gov.in से डाउनलोड की जा सकती है। (राशि रू. 100.00 के नान ज्यूडिशियल स्टाम्प पर निर्धारित प्रपत्र में शपथ-पत्र एवं न्यूनतम राशि रू. 10.00 के नान ज्यूडिशियल स्टाम पर एनेक्जर-3 का शपथ पत्र ,बिडकेपेसीटी उपलब्धता बाबत् जानकारी एवं अन्य जानकारी एनआईटी के 2.10 में संलग्न संशोधित प्रपत्रानुसार प्रस्तुत करें।)

निविदा में होने वाले समस्त संशोधन का प्रकाशन केवल उपरोक्त वेबसाइट पर किया जावेगा, पृथक से समाचार पत्रों में प्रकाशन नहीं किया जावेगा।

अधीक्षण अभियंता,
लो.नि.वि.,रायपुर मण्डल क्र. 2 (छ.ग.)

G- 08583/2

Credible Chhattisgarh विश्वसनीय छत्तीसगढ़

आपकी थी चाह, हमने बनाई राह

दैनिक
विश्व परिवार
महानगर

www.dvpnews.in
vishwapariwarraipur@gmail.com

रायपुर, शनिवार 16 मार्च 2024

अधोसंरचना विकास और मूलभूत कार्यों के लिए 8.54 करोड़ रुपए स्वीकृत

रायपुर (विश्व परिवार)। राज्य शासन के नगरीय प्रशासन एवं विकास विभाग द्वारा राजनांदगांव नगर निगम में अधोसंरचना विकास के विभिन्न कार्यों और अत्यावश्यक मूलभूत कार्यों के सुचारू संचालन के लिए कुल आठ करोड़ 54 लाख 19 हजार रुपए स्वीकृत किए गए हैं। विभाग द्वारा राजनांदगांव नगर निगम के विभिन्न वार्डों में अधोसंरचना विकास के 42 कार्यों के लिए सात करोड़ 54 लाख 19 हजार रुपए मंजूर किए गए हैं। शहर में अत्यावश्यक मूलभूत कार्यों के सुचारू संचालन के लिए चुंगी क्षतिपूर्ति मद के अंतर्गत अनटाइड फंड के रुप में विभाग द्वारा एक करोड़ रुपए की भी स्वीकृति दी गई है।

संक्षिप्त समाचार

भारतीय डाक विभाग रायपुर संभाग की टीम द्वारा दो दिवसीय डाक जीवन बीमा जागरूकता शिविर सम्पन्न

रायपुर (विश्व परिवार)। भारतीय डाक विभाग रायपुर संभाग की टीम के द्वारा प्रवर अधीक्षक डाकघर रायपुर के मार्गदर्शन में स्वास्थ्य संचालनालय परिसर नया रायपुर में दो दिवसीय डाक जीवन बीमा जागरूकता शिविर दिनांक 13 एवम् 14 मार्च को आयोजित किया गया। इस शिविर के माध्यम से स्वास्थ्य विभाग के कर्मचारियों को डाक जीवन बीमा सहित डाकघर की अल्प बचत योजनाओं की जानकारी उपलब्ध कराई गई। इन दो दिनों में लगभग 150 से भी ज्यादा अधिकारी और कर्मचारी शिविर स्थल पंहुचकर डाक विभाग की विभिन्न योजनाओं से सम्बन्धित पूछताछ कर जानकारी लिए। इस दौरान 50 लाख बीमा राशि की डाक जीवन बीमा और एम आई एस, सीनियर सिटीजन अकांउट सहित बचत खाते खोलने हेतु फॉर्म उपलब्ध कराई गई थी। इस शिविर के आयोजन हेतु संचालक स्वास्थ्य सेवाएं और उपसंचालक डा महेंद्र सिंह का विशेष सहयोग मिला। इस शिविर में डाक विभाग की ओर से के के शर्मा विकास अधिकारी रायपुर संभाग, क्षेत्रीय अधिकारी एस एन प्रधान एवम् डाक जीवन बीमा अभिकर्ता शैलेष कुमार जी उपस्थित रहे। इस शिविर के माध्यम से भविष्य में डाक विभाग को अच्छे पीएलआई व्यवसाय की संभावनाएं हैं।

बैंक ऑफ बड़ौदा, रायपुर क्षेत्र द्वारा डॉ. भीमराव स्मृति चिकित्सालय रायपुर में सीएसआर गतिविधियों का आयोजन

रायपुर (विश्व परिवार)। बैंक ऑफ बड़ौदा ने समाज के प्रति उत्तरदायित्व को निभाते हुए सीएसआर गतिविधियों का आयोजन करता रहता है। दिनांक 15.03.2024 को इसी क्रम पर श्री भरतकुमार चावड़ा, नेटवर्क उप महाप्रबंधक, छत्तीसगढ़, भोपाल अंचल एवं श्री अमित बैनर्जी, क्षेत्रीय प्रमुख रायपुर क्षेत्र ने कारपोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व के अंतर्गत डॉ भीमराव स्मृति चिकित्सालय रायपुर (छ.ग.) में में व्हील चेयर एवं वाटरकूलर दान किए . इस अवसर में विशेष रूप से श्रीमती शीतल वर्मा श्रीमती शीतल शाश्वत वर्मा, डी आई एफ, छतीसगढ़ शासन, डॉ तृप्ति नागरिकिया, डीन, पंडित जवाहर लाल नेहरू मेमोरियल मेडिकल कॉलेज डॉ एस बी एस नेताम, सयुक्त निदेशक एवं अधीक्षक एवं अन्य स्टाफगण उपस्थित थे. क्षेत्र की शाखाओं में भी वृहद स्तर पर विभिन्न सीएसआर गतिविधियों का आयोजन किया गया. इस कार्यक्रम में रायपुर क्षेत्र के विभिन्न शाखाओं के स्टाफ सदस्य, क्षेत्रीय कार्यालय रायपुर से आरबीडीएम श्री बलजीत सिंग और नेटवर्क उप महाप्रबंधक, छत्तीसगढ़ की टीम द्वारा योगदान दिया।

युवा को सशक्त करने के लिए 1000 गांवों में चलाया जा रहा युवा गोठ कार्यक्रम

रायपुर (विश्व परिवार)। नेहरू युवा केंद्र संगठन, युवा कार्यक्रम एवं खेल मंत्रालय, भारत सरकार व यूनिसेफ़ छत्तीसगढ़ द्वारा ग्रामीण युवाओ को सशक्त करने के लिए छग के 33 जिलों के 1000 गांवों मे युवा गोठ कार्यक्रम चलाया जा रहा है। युवा गोठ के अंतर्गत नेहरू युवा केंद्र के स्वयंसेवक, युवा मण्डल व सदस्यों द्वारा 10 सूत्रीय सामुदायिक विकास कार्यक्रम चलाया जा रहा है। श्रीकांत पाण्डेय, राज्य निदेशक, नेहरू युवा केंद्र संगठन छग ने बताया की युवा गोठ कार्यक्रम एक अनूठी पहल है। यह देश भर मे एक मात्र ऐसा कार्यक्रम है जो युवाओ के लिए है और युवाओ के द्वारा चलाया जा रहा है। अर्पित तिवारी, ज़िला युवा अधिकारी, नेहरू युवा केंद्र, रायपुर, छग ने बताया की यह 10 सूत्र/ थीम है ङ्क वृक्षारोपण व पर्यावरण, फिट इंडिया, लॉंगिक असमानता, बालिका शिक्षा, स्वच्छता अभियान, छत्तीसगढ़ी संस्कृति एवं परंपरा, नशा मुक्त गाँव, पोषण युक्त युवा, स्वस्थ गाँव ङ्क स्वस्थ युवा, रक्त दान - महा दान। उन्होंने यह भी बताया की यह कार्यक्रम मिशन लाइफ के अंतर्गत चलाया जा रहा है। आगे जानकारी देते हुए यह कहा की युवा गोठ कार्यक्रम के अंतर्गत युवाओ के लिए युवा मंडलों के माध्यम से युवा कोना ङ्क सेफ स्पेस का निर्माण किया जा रहा है जिसका उद्देश्य ग्रामीण युवाओ को ऐसा मंच प्रदान करना है जहां वह अपनी समस्याओं को, व्यक्तित्व विकास को, व सामुदायिक विकास पर चर्चा कर सकें। इसके साथ ही 10 सूत्र व थीम पर अलग अलग गतिविधि भी युवा मंडलों द्वारा चलाई जा रही है।

नगरीय प्रशासन एवं विकास विभाग ने रायपुर नगरीय क्षेत्र के लिए जारी की 973.84 लाख रुपए की राशि

रायपुर (विश्व परिवार)। मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय के मार्गदर्शन में नगरीय प्रशासन एवं विकास विभाग द्वारा बी.एस.यू.पी. कॉलोनियों के जीर्णोद्धार हेतु बड़ी राशि जारी की गई है। उपमुख्यमंत्री एवं नगरीय प्रशासन विकास विभाग मंत्री श्री अरुण साव ने नगर पालिक निगम अंतर्गत निर्मित बी.एस.यू.पी. कॉलोनियों के जीर्णोद्धार हेतु 973.84 लाख रुपए की राशि जारी की है। इस राशि से निर्धन परिवारों को आवास सुविधा सुलभ कराने हेतु नगर निगम द्वारा निर्मित विभिन्न कॉलोनियों में उपलब्ध मूलभूत सुविधाओं की समीक्षा कर आवश्यकता अनुरूप इन कॉलोनियों का जीर्णोद्धार किया जाएगा। मूलभूत सुविधाओं की आस में कई वर्षों से परेशान निर्धन आय वर्ग के सैकड़ों परिवार इस निर्णय से लाभान्वित होंगे।

शांतिपूर्ण निर्वाचन के लिए पुलिस की भूमिका अहम : नीलेश क्षीरसागर

निर्वाचन व्यय पर निगरानी रखने 19 एजेंसियों के साथ समन्वय करेगा पुलिस बल

पुलिस अधीक्षक, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक तथा उप पुलिस अधीक्षकों का एक दिवसीय प्रशिक्षण सम्पन्न

रायपुर (विश्व परिवार)। अतिरिक्त मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी श्री नीलेशकुमार महादेव क्षीरसागर ने कहा है कि राज्य की सुरक्षा एजेंसियों की भूमिका सुरक्षा व्यवस्था बनाए रखने की है, साथ ही आदर्श आचार संहिता का पालन कराने में भी उनकी महत्वपूर्ण भूमिका होती है। उन्होंने कहा निष्पक्ष एवं शांतिपूर्ण निर्वाचन संपन्न कराने के लिए विभिन्न निगरानी दलों के साथ भी पुलिस बल का समन्वय जरूरी है। उन्होंने विधान सभा निर्वाचन 2023 के शांतिपूर्ण संपन्न होने पर पुलिस बल की भूमिका की सराहना की। उन्होंने कहा कि निर्वाचन व्यय पर निगरानी रखने के लिए पुलिस का राष्ट्रीय एवं राज्य स्तर की विभिन्न एजेंसियों के साथ समन्वय करना आवश्यक है। श्री क्षीरसागर ने कहा कि संवेदनशील मतदान केन्द्रों में शांतिपूर्ण मतदान के लिए पुलिस बल अन्य एजेंसियों की मदद से विशेष योजना तैयार कर कार्य करें। श्री क्षीरसागर न्यू सर्किट हाउस सभागार में लोकसभा निर्वाचन पूर्व पुलिस अधिकारियों के एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम के उद्घाटन सत्र को संबोधित कर रहे थे।

मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी श्रीमती रीना बाबासाहेब कंगाले के निर्देशानुसार आयोजित एक दिवसीय प्रशिक्षण में प्रदेश के 22 जिलों के पुलिस अधीक्षक, 11 अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक एवं 65 उप पुलिस अधीक्षक शामिल हुए। इस अवसर पर संयुक्त मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी श्री पी एस ध्रुव सहित मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी कार्यालय के वरिष्ठ अधिकारी भी उपस्थित थे।

प्रशिक्षण के दौरान लोकसभा निर्वाचन के लिए राज्य पुलिस नोडल अधिकारी श्री ओ पी पाल ने कहा है कि प्रदेश में शांतिपूर्ण निर्वाचन के लिए पुलिस तथा अर्धसैनिक बलों की भूमिका अहम है। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि आगामी लोकसभा निर्वाचन के दौरान राज्य पुलिस तथा जिला प्रशासन इस बात का ध्यान रखे कि बाहर से आने वाले अर्ध सैनिक बलों की टुकड़ियों को आवश्यक जरूरतों के लिए कोई असुविधा ना हो।

एक दिवसीय प्रशिक्षण के दौरान राष्ट्र स्तरीय मास्टर ट्रेनर श्री यू एस अग्रवाल ने आदर्श आचरण संहिता, मीडिया मॉनिटरिंग एवं कंट्रोल सेंटर एवं शिकायत सेल के संबंध में जानकारी दी। वहीं मास्टर ट्रेनर श्री अपूर्व प्रियेश टोप्पो ने निर्वाचन व्यय निगरानी, श्री विनय अग्रवाल ने पोस्टल बैलेट, इलेक्ट्रानिकली ट्रांसमिटेड पोस्टल बैलेट सिस्टम (ईटीपीबीएस) और इलेक्शन ड्यूटी सर्टिफिकेट (ईडीसी) पर प्रकाश डाला। प्रशिक्षण के दौरान सुरक्षा एवं कानून व्यवस्था एवं निर्वाचन संबंधी विभिन्न विषयों पर भी विशेषज्ञों ने जानकारियाँ साझा की।

शिक्षा मंत्री बृजमोहन अग्रवाल को मिले प्राइमरी स्कूल की बालिकाओं के मासूमियत से भरे पत्र

रायपुर (विश्व परिवार)। प्रदेश भर के प्राइमरी स्कूल की छोटी-छोटी बालिकाओं के लिखे पत्र आज स्कूल शिक्षा मंत्री श्री बृजमोहन अग्रवाल के पास पहुंचे। बेटी पढ़ाओ, बेटी बचाओ अभियान के अंतर्गत इन सुंदर पत्रों को आज शिक्षा मंत्री ने देखा। हर पत्र अपने में मासूमियम से भरा बेटियों की अथाह प्रतिभा की दास्तां कह रहा था। इन पत्रों में छोटे बच्चों ने अपनी तुतलाहट भरी भाषा में चित्रों के माध्यम से एक बालिका भ्रुण की दास्तां कही। एक बच्ची ने एक चित्र बनाया, इसमें एक बीज है जिसके भीतर भ्रुण है जिसकी हत्या की जा रही है। यह नहीं होता तो वो वृक्ष की असीम संभावना को छूता, उसी तरह बालिका भी अपने सुनहरे भविष्य का निर्माण करती।

मंत्री श्री अग्रवाल इन पत्रों को पढ़कर और इनके मार्मिक चित्रों को देखकर भावुक हुए। उन्होंने कहा कि जिन बच्चों ने मुझे पत्र के माध्यम से सुंदर संदेश भेजे हैं उन्हें मेरी ओर से धन्यवाद प्रेषित करना है। मंत्री श्री अग्रवाल ने कहा कि इन छोटी बालिकाओं के शब्दों का संसार सीमित है लेकिन इनकी संवेदना का संसार बहुत विस्तृत है। जिस तरह से इन्होंने एक बालिका भ्रुण की हत्या की भयावह दास्तां अपने चित्रों से व्यक्त की है वो इनकी गहरी भावनाओं को बताता है। इन प्रतिभाशाली बालिकाओं से छत्तीसगढ़ का भविष्य उज्ज्वल लगता है। शिक्षा मंत्री श्री अग्रवाल ने कहा कि लड़कियों के जीवन में शिक्षा का महत्वपूर्ण योगदान होता है। शिक्षा से लड़कियां आत्मनिर्भर बनकर समाज में अपना योगदान देती हैं। शिक्षा लड़कियों को सशक्त बनाती है और उन्हें अपने सपनों को पूरा करने में मदद करती है। लड़कियों की शिक्षा समाज के विकास के लिए बहुत महत्वपूर्ण है।

अर्थव्यवस्था के विकास के साथ पर्यावरण संरक्षण का रखना होगा ध्यान : ओ.पी. चौधरी

'छत्तीसगढ़ - विजन 2047' में 25 वर्षों के रोडमेप पर चर्चा

रायपुर (विश्व परिवार)। अर्थव्यवस्था के विकास के साथ ही हमारी सबसे महत्वपूर्ण जिम्मेदारी यह भी है कि हम पर्यावरण के संरक्षण में स्वयं रूचि लेकर योगदान दें। हमारी पुरानी संस्कृति पर्यावरण संरक्षण की रही है। हम पेड़ पौधों, गाय, तालाबों की पूजा करते हैं। हमारा पूरा पारिस्थितिकी तंत्र पर्यावरण संरक्षण की दृष्टि से बेहद महत्वपूर्ण है। हमें छोटे-छोटे लाभ को छोड कर सभी के स्वास्थ्य का ध्यान रखते हुए औद्योगिक विकास करना है, और यह हमारी अर्थव्यवस्था को मजबूत करने के लिये बेहद आवश्यक है।'' उक्त विचार व्यक्त कर रहे थे श्री ओ.पी. चौधरी, मंत्री, आवास एवं पर्यावरण विभाग। अवसर था छत्तीसगढ़ पर्यावरण संरक्षण मंडल द्वारा आयोजित ''छत्तीसगढ़ - विजन 2047'' पर कॉन्फ्रेंस के उद्घाटन का।

श्री चौधरी ने कहा कि प्रदूषण के लिये केवल औद्योगिक गतिविधियों को दोषी नहीं ठहराया जा सकता बल्कि वाहनों से निकलने वाला धूआँ भी इसके लिये जिम्मेदार है। सिवेज वाटर भी हमारी प्राकृतिक जल स्त्रोतों को बूरी तरह प्रदूषित कर रहा है। हमें योजनाबद्ध तरीके से इस प्रकार के प्रदूषण पर रोक लगाने की आवश्यकता है, जिससे कि हम विकसित भारत विकसित छत्तीसगढ़ की परिकल्पना को साकार कर सकें। कार्यक्रम में श्री राहूल भगत, सचिव मान. मुख्यमंत्री एवं सुशासन व अभिशरण विभाग ने कहा कि हमें आने वाली पीढ़ियों का ध्यान रखना है, और यह प्रयास करना है कि हमारे बच्चें स्वस्थ रहें और मुस्कुराते रहें। श्रीमती आर. शंगीता, सचिव, आवास एवं पर्यावरण विभाग एवं अध्यक्ष, छत्तीसगढ़ पर्यावरण विभाग ने ''छत्तीसगढ़ - विजन 2047'' पर प्रस्तुतीकरण दिया। अपने प्रस्तुतीकरण में श्रीमती शंगीता ने छत्तीसगढ़ में स्थापित विभिन्न प्रकार के उद्योगों की संख्या व उत्पादन की जानकारी दी। उन्होंने भारत के संविधान का उल्लेख करते हुए कहा कि इसमें यह बताया गया है कि पर्यावरण संरक्षण प्रत्येक नागरिक का दायित्व है, उन्होंने भविष्य की कार्य योजनाओं पर प्रकाश डालते हुए कहा कि हमें पहले 01 वर्ष फिर 05 वर्ष एवं 25 वर्ष के लिये कार्ययोजना तैयार कर कार्य करना होगा। श्रीमती शंगीता ने 25 वर्षों के रोडमेप पर चर्चा करते हुए कहा कि पर्यावरण संरक्षण मण्डल आपका सहयोग करने के लिये तैयार है लेकिन पर्यावरण संरक्षण के लिये आपको भी पहल करनी होगी।

मण्डल के सदस्य सचिव, पी. अरूण प्रसाद ने उद्घाटन भाषण देते हुए विषय की महत्ता पर प्रकाश डाला और कहा कि हम सभी को पर्यावरण संरक्षण के लिये आगे आना होगा और मिलकर 'छत्तीसगढ़-विजन 2047' में अपनी भागीदारी देनी होगी। कार्यक्रम में श्री तंबोली अय्याज फकीरभाई, आयुक्त, छ.ग. गृह निर्माण मण्डल भी उपस्थित थे। इस कॉन्फ्रेंस में प्रदेश के इंटीग्रेटेड स्टील एवं स्पंज आयरन प्लांट, कोल वॉशरी, ताप विद्युत संयंत्र, कोल माईंस, आयरन ओर माईंस, बड़े हॉस्पिटल, स्पंज आयरन एसोसिएशन, रोलिंग मिल एसो., मिनी स्टील प्लांट एसोसिएशन, माईनर मिनरल एसोसिएशन, संयुक्त अपशिष्ट अपवहन सुविधा के राज्य प्रमुख शामिल हुए।कार्यक्रम में माननीय मंत्री जी द्वारा मिशन लाईफ़ के अंतर्गत लाइफ प्लेज भी दिलाई गई।

यशोदा अस्पताल, हैदराबाद में रोबोटिक तकनीक से कैंसर का सफल ईलाज

रायपुर (विश्व परिवार)। यशोदा अस्पताल, हैदराबाद- स्वास्थ्य सेवाओं में नए मानक स्थापित करते हुए तीन दशकों से, यशोदा अस्पताल के समृद्ध चिकित्सा आवश्यकताओं में लोगों को गुणवत्ता वाली स्वास्थ्य सेवा प्रदान की गई है। लोग हमें उन व्यक्तिगत संबंधों के कारण विश्वसनीय मानते हैं जो हमने इन सालों में उनके साथ बनाए हैं। यशोदा अस्पताल अपने कुशल प्रशासन और प्रबंधन से समाज के सभी वर्गों को गुणवत्तायुक्त मेडिकल उपचार प्रदान करता है। नवीनतम तकनीक और अच्छे चिकित्सा विशेषज्ञों के माध्यम से हमनें विभिन्न प्रकार के रोगियों को स्वास्थ्य लाभ प्रदान किया है।

4 अलग-अलग अस्पताल, 4 हृदय संस्थान, 4 कैंसर संस्थान, 4000 बेड, 62 चिकित्सा विशेषज्ञताएँ, 1600 विशेषज्ञ डॉक्टर्स के साथ हम बेहतर चिकित्सा सेवा, सहानुभूति और व्यक्ति के प्रति सम्मान के लिए प्रतिबद्ध हैं। हमारी चिकित्सा टीम में कुशल चिकित्सक होते हैं जो विश्वस्तरीय चिकित्सा सर्विस प्रदान करते हैं जिससे रोगियों को जल्द स्वास्थ्य लाभ पहुंचाकर नियमित जीवन में वापसी करवाते हैं।

यशोदा अस्पताल के कैंसर रोग सर्जन डॉ. सचिन मर्दा नें अनेक कैंसर पीडित मरीजों को रोबेटिक सर्जरी के माध्यम से उन्हें एक नया जीवन दे रहे हैं। डॉ. मर्दा से कैंसर के ईलाज के लिए दुरस्थ क्षेत्रों के मरीज आते हैं और स्वस्थ्य होकर घर वापस लौटते हैं। डॉ. सचिन मर्दा एक वरिष्ठ कंसल्टेंट ऑन्कोलॉजिस्ट एवं रोबोटिक सर्जन हैं जिन्होंने 16 वर्ष से अनुभव हासिल किया है। इन्हें रोबोटिक सर्जरी में अनेंक उपाधी प्राप्त है जैसे 1. एम.सीएच.सर्जरी ऑन्कोलॉजिस्ट में दो गोल्ड मेडल (गुजरात यूनिर्वसीटी) 2. एम.एस. जनरल सर्जरी में 3 गोल्ड मेडल (मुंबई यूनिर्वसीटी) एवं अनेक उपाधी जो रोबोटिक सर्जरी एवं लेप्रोस्कोपीक सर्जरी में विशेषज्ञ हैं। विश्व महिला दिवस के उपलक्ष्य में आज आमंत्रित कैंसर पीड़िता महिलाओं नें अपनी कैंसर से लड़ाई के सफर में बतलाया अतएव कैंसर असाध्य रोग नहीं है सही जानकारी व समय पर ईलाज से कैंसर पे जीत हासिल की जा सकती है।

यशोदा हॉस्पिटल नें रायपुर छत्तीसगढ़ में 100 से ज्यादा डॉक्टर्स के साथ एक सीएमई वर्कशॉप किया है जिसमें विशेषतौर से कैंसर के ईलाज में आई नवीनतम तकनीक की जानकारी सभी डॉक्टरों के साथ साझा की गई है डॉ मर्दा के अत्यंत अनुभव से उन्होंने कैंसर पीडित लोगों को कुशल जीवन प्रदान करनें की जिम्मेदारी लेकर एक उज्जवल पहल की है।

रायपुर स्मार्ट सिटी लिमिटेड, नगर निगम रायपुर और यातायात पुलिस की पहल

रायपुर में शुरू हुई एम्बुलेंस-ग्रीन कॉरिडोर सेवा, 108-एम्बुलेंस के पहुंचते ही सिग्नल होंगे ग्रीन

कम समय में मरीजों को पहुंचाया जाएगा अस्पताल

रायपुर (विश्व परिवार)। कलेक्टर डॉ. गौरव कुमार सिंह के मार्गदर्शन में रायपुर स्मार्ट सिटी लिमिटेड, नगर निगम रायपुर और यातायात पुलिस ने मिलकर एक ऐसे एम्बुलेंस-ग्रीन कॉरिडोर की योजना तैयार की है, जिसके माध्यम से मरीजों को अस्पताल शिफ्ट करने के दौरान एम्बुलेंस को निर्बाध रास्ता प्राप्त होगा। जी.पी.एस. इनेबल्ड एम्बुलेंस से संदेश प्राप्त होते ही रायपुर स्मार्ट सिटी लिमिटेड द्वारा स्थापित कमांड और कंट्रोल सेंटर से जुड़े सभी सिग्नल जंक्शन पर पहुंचते ही सिग्नल ऑटोमेटिक ग्रीन होकर एम्बुलेंस को मार्ग देंगे।

रायपुर स्मार्ट सिटी लिमिटेड के प्रबंध संचालक श्री अबिनाश मिश्रा के अनुसार मरीजों को अस्पताल तक पहुंचाने त्वरित सेवा प्रदान करने एक ऐसी स्वचलित प्रणाली तैयार की गई है, जिसमें जी.पी.एस. इनेबल्ड 108-एम्बुलेंस से संदेश प्राप्त होते ही कंट्रोल एंड कमांड सेंटर के सिग्नल ग्रीन हो जाएंगे। इससे एम्बुलेंस न्यूनतम समय में गंतव्य अस्पताल तक पहुंच पाएंगे। उन्होंने बताया की पायलट प्रोजेक्ट के तहत शहर में सेवा दे रहे 108 से जुड़े एम्बुलेंस को इससे जोड़ा गया है और आगे चलकर दूसरे जिलों व निजी व शासकीय अस्पतालों से संबद्ध एम्बुलेंस को भी इससे जोड़ा जाएगा। आवागमन व सिग्नल रेड होने के कारण एम्बुलेंस को विलंब न हो, इसलिए यह व्यवस्था की गई है। दूसरे एम्बुलेंस भी इस सेवा की आपातकालीन जरूरत होने पर अपने जीपीएस ऑन कर उस पर लगे बटन से ग्रीन कॉरिडोर का अनुरोध भेज सकेंगे।

एम.डी. श्री मिश्रा ने इस पूरी प्रक्रिया के बारे में बताया कि जीपीएस इनेबल्ड एम्बुलेंस की लाइव लोकेशन और ऑन-ऑफ ड्यूटी स्थिति संबंधी डाटा एपीआई के माध्यम से आईटीएमएस के सेंट्रल कमांड सेंटर तक पहुंचेगी। इससे जुड़े ए.टी.एस. सिस्टम रियल टाईम की जानकारी कमांड सेंटर तक जैसे ही देंगे। एम्बुलेंस के सिग्नल जंक्शन के 250 फीट की सीमा पर पहुंचते ही सिग्नल ग्रीन हो जाएगा। एम्बुलेंस-ग्रीन कॉरिडोर की सुविधा से एम्बुलेंस की यात्रा का समय कम होगा और आपातकालीन परिस्थितियों में मरीजों के गंतव्य तक त्वरित गति से पहुंचाने में सुविधा होगी। अंगदान संबंधी स्थितियों में भी ग्रीन कॉरिडोर की भूमिका अहम होगी और स्वचलित व्यवस्था होने से कम पुलिस कार्य बल की जरूरत होगी। उन्होंने बताया कि विलंब से मिलने वाली चिकित्सा सहायता के कारण होने वाले मौतें भी इस सेवा के शुरू होने से कम करने में मदद मिलेगी।

मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय की विशेष पहल पर छत्तीसगढ़ में विमान सुविधाओं के विस्तार को बड़ी सफलता

विमानन कंपनी अलायंस एयर एवं राज्य शासन के मध्य अनुबंध हस्ताक्षरित

बिलासपुर एयरपोर्ट से दिल्ली एवं कोलकाता, तथा जगदलपुर एयरपोर्ट से जबलपुर (दिल्ली की कनेक्टिविटी के लिये) के नियमित कमर्शियल विमान सेवा मार्च माह के अंतिम सप्ताह से होगी शुरू

रायपुर (विश्व परिवार)। मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय की विशेष पहल पर छत्तीसगढ़ राज्य में विमान सुविधाओं के विकास व विस्तार की प्रक्रिया में बिलासपुर एयरपोर्ट से दिल्ली एवं कोलकाता तथा जगदलपुर-जबलपुर-दिल्ली सेक्टर में 70 सीटर विमान द्वारा नियमित कमर्शियल विमान सेवा संचालन हेतु राज्य शासन व विमान सेवा प्रदाता अलायंस एयर कम्पनी के मध्य एमओयू हस्ताक्षरित किया गया। एम.ओ.यू. के अनुसार यह तीनों फ्लाईट मार्च माह के अंतिम सप्ताह से नियमित रूप से शुरू होंगी।

एमओयू में विमान सेवा के उड़ानों में यात्रियों की अनुपलब्धता होने पर कॉस्ट रेवेन्यू मॉडल के आधार पर उड़ान लागत के घाटे की भरपाई हेतु राज्य शासन द्वारा विमान कंपनी को वित्तीय सहायता उपलब्ध कराये जाने का प्रावधान शामिल किया गया है।

गौरतलब है कि मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय ने 12 मार्च 2024 को अलायंस एयर कम्पनी की दिल्ली-बिलासपुर-दिल्ली, कोलकाता-बिलासपुर- कोलकाता हवाई सेवा का शुभारंभ किया था। 12 मार्च को ही अलायंस एयर कम्पनी द्वारा दिल्ली- जबलपुर-जगदलपुर- जबलपुर- दिल्ली विमान सेवा की उड़ान का उद्घाटन किया गया था। अलायंस एयर कंपनी के समर शेड्यूल के अनुसार ये तीनों विमान सेवाएं मार्च के अंतिम सप्ताह से नियमित हो जायेंगी।

उद्योग मंत्री लखनलाल देवांगन सीएसआईडीसी के अध्यक्ष नियुक्त

रायपुर (विसं)। प्रदेश के वाणिज्य एवं उद्योग मंत्री श्री लखनलाल देवांगन को आगामी आदेश पर्यन्त छत्तीसगढ़ स्टेट इण्ड्रस्ट्रीयल डेव्हलपमेंट कार्पोरेशन लिमिटेड का अध्यक्ष नियुक्त किया गया है। इस आशय का आदेश प्रदेश के वाणिज्य एवं उद्योग विभाग मंत्रालय महानदी भवन नवा रायपुर आज जारी कर दिया गया है।

प्रकाशक, मुद्रक, स्वामी प्रियेश कुमार जैन द्वारा मे. विश्व परिवार इंडस्ट्रीज, प्लॉट नं.-421 सेक्टर-सी, सड़क नं.-7 उरला इंडस्ट्रीयल एरिया उरला, रायपुर (छ.ग.) से मुद्रित एवं ओलंपस जिम के पीछे, सेक्टर-1, शंकर नगर रायपुर (छ.ग.) से प्रकाशित। संपादक : प्रदीप कुमार जैन, फोन नं. : 0771- 4017966, मो.- 9981924252 RNI.NO.CHHHIN/2013/50354